सृजन

जनवरी – दिसंबर 2017

सत्यमेव जयते

श्री राजेन्द्र
लेखा सदस्य एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादकीय

सृजन का यह अंक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए प्रसन्नता का अनुभव इसलिए हो रहा है कि इसने संपादन मंडल को नयी रचनाओं और नये विचारों के साथ साथ नये लेखकों, कवियों और निबंधकारों को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया है। हो सकता है कि कुछ रचनाएँ आपको उतनी स्तरीय न लगें जितनी शेष हैं पर आप यह न भूलें कि रचनाकार पेशेवर साहित्यकार नहीं हैं और उन्होंने अपनी भावनाओं को विविध विधाओं में पेश किया है. उनके शब्दों या शैली पर ध्यान न देकर भावों को महसूस करें।

इस वर्ष जो कविताएं प्रकाशित की जा रही हैं उनमें गजब की विविधता है। अधिकरण परिवार के सदस्यों की इन रचनाओं में व्यंग्य की फुहार से लेकर मन मस्तिष्क को झकझोरने वाले विचार तक हैं। इनमें से कुछ गुदगुदाती हैं तो कुछ सोचने को मजूबर करती हैं। 'वह कौन थी', 'बुढापे का इश्क' और 'दर्श' हास्य का पुट ली हुई कविताएँ हैं तो 'मेरी सोच को आजाद रहने दो' में कवि ने बहुत सारगर्भित संदेश दिया है कि मत चलाओ अपनी सोच के मुताबिक मुझे। 'मेरे देश की धरती','विदाई','सबूत' और 'बर्फ के फूल' जैसी रचनाएँ देशभक्ति की भावनाओं को उजागर करती हैं और शहीदों को श्रद्धांजलि देती हैं। अधिकरण का सीधा संबंध करों से है, इसलिए कर-संबंधी रचना 'जीएसटी' को इस अंक में प्रकाशित करने में संपादन मंडल को काफी खुशी हो रही है।

अधिकरण-परिवार देश की विभिन्न समस्याओं से अवगत है और इस विषय में गंभीरतापूर्वक सोचता भी है। 'दहेज प्रथा', 'पारिवारिक-संवाद-शून्यता', 'धर्म बनाम प्रजातंत्र', 'भूमंडलीय उष्मीकरण', 'रक्तदान-जीवनदान' और 'महिला सशक्तीकरण' जैसी रचनाएं इसका प्रमाण हैं। 'हिदी भाषा का महत्व' और 'राष्ट्रभाषा की समस्या' में रचनाकारों ने राजभाषा के विषय में बहुत ही तार्किक रूप से अपने विचार पेश किए हैं। 'सफलता' में बहुत ही अच्छा संदेश दिया गया है कि बिना परिश्रम के कुछ भी हासिल नहीं होता और न ही ऐसा करने की कोशिश करनी चाहिए। 'सच्ची दोस्ती' में मित्रता को दुनिया सबसे अनमोल रतन मानने के कारण बताए गए हैं। 'मुंबई में स्वागत' इस महानगर की जमीनी हकीकतों की कहानी है जिससे हम एक जुडाव महसूस करते हैं। 'सीपी' तथा 'पापा याद आते हैं......'रचनाएं दिल के कोमल भावों को छेडती हैं। शेष सभी रचनाएँ भी स्तरीय हैं। जैसे जैसे आप पढेंगें आपको एहसास होगा कि इस पृष्ठ में स्वादिष्ट भोजन की केवल बानगी ही परोसी गई है। संपादन मंडल सभी रचनाकारों का आभारी है जिन्होनें सृजन रूपी इन्द्रधनुष में अलग अलग रंग भरकर इसे बहुत सुंदर बनाया है।

धन्यवाद

राजेन्द्र

संरक्षक

श्री जी.डी. अग्रवाल
माननीय अध्यक्ष
आयकर अपीलीय अधिकरण

मुख्य संपादक

श्री राजेन्द्र
लेखा सदस्य एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई

उप संपादक

श्री बिजु पी.के.,
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, मुंबई

श्रीमती आशा पाल,
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, मुंबई

डिज़ाइन & टंकण

श्री तरुण कुमार, उ.श्रे.लि., मुंबई

प्रकाशन एवं मुद्रण
आयकर अपीलीय अधिकरण,
तीसरा एवं चौथा तल, प्रतिष्ठा भवन,
101, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई - 400020
वेबसाईट: http://itat.nic.in

Please send your feedback to:
hindi.ho@itat.nic.in

विवरणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	संपादकीय	1
2.	अध्यक्ष का पृष्ठ	5
3.	वह कौन थी- श्री प्रवीण के. बंसल, उपाध्यक्ष, मुंबई	7
4.	दे दो मोला जिजमान बटान का थारे में म्हारो हाथ- श्री प्रवीण के. बंसल,उपाध्यक्ष, मुंबई	7
5.	मेरी सोच को आजाद रहने दो- श्री एच.एस. सिद्धु, न्यायिक सदस्य, दिल्ली	8
6.	बुढ़ापे का ईश्क- सुश्री उल्का परब, कार्यालय अधीक्षक, मुंबई पीठ	9
7.	विदाई(शहीदों को समर्पित)- सुश्री उल्का परब, कार्यालय अधीक्षक, मुंबई पीठ	9
8.	यादें- श्री समीर दुबे, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा पीठ	9
9.	गजल- श्री अशोक सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक, जबलपुर पीठ	10
10.	मेरे देश की धरती- श्रीमती शीतल अरोड़ा, अवर श्रेणी लिपिक, दिल्ली पीठ	10
11.	जी.एस.टी.- श्रीमती पूर्वता पारकर, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	10
12.	जीवन- श्रीमती. सोनाली मोरे, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	11
13.	पापा याद बहुत आते हो कुछ ऐसा भी मुझे कहो- श्रीमती शारदा लोढ़े, एम.टी.एस., मुंबई पीठ	11
14.	सफलता- श्री सी.एल. सिंह, वरिष्ठ निजी सचिव, लखनऊ पीठ	12
15.	सीपी- श्रीमती आशा पाल, वरि. हिंदी अनुवादक, मुंबई पीठ	13
16.	सबूत- श्री अशोक सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक, जबलपुर पीठ	15
17.	बर्फ के फूल- श्री जयशंकर कुमार सिंह, अवर श्रेणी लिपिक, कोलकाता पीठ	16
18.	लेख- सामाजिक व्याधि- दहेज प्रथा-श्री वसीम अहमद, माननीय लेखा सदस्य, कोलकाता पीठ	20
19.	युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों के पतन का कारण- पारिवारिक संवाद शून्यता – श्री मनोज कश्यप, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, जयपुर	21
20.	मुंबई में स्वागत- श्री बिजु पी.के., वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, मुंबई पीठ	22
21.	नया साल 2018 का संकल्प- श्री आर.आर. वानखेड़े, अधीक्षक, मुंबई पीठ	23
22.	धर्म बनाम प्रजातंत्र- श्री शशि कुमार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, हैदराबाद पीठ	25

23.	रक्तदान-जीवनदान- सुश्री उल्का परब, कार्यालय अधीक्षक, मुंबई पीठ	25
24.	सच्ची दोस्ती- श्रीमती स्वाति दाते, पुस्तकालयाध्यक्ष, मुंबई पीठ	26
25.	महिला सशक्तिकरण- श्री संजीव कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	27
26.	राष्ट्रभाषा की समस्या- श्रीमती जान्हवी गाडे, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	28
27.	हिंदी भाषा का महत्व- श्रीमती ईशा कामटेकर,अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	30
28.	ग्लोबल वार्मिंग (भूमंडलीय उष्मीकरण)- श्रीमती मिलन पाटिल, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	31
29.	श्री पलाश पोद्दार, कार्यालय अधीक्षक, कोलकाता पीठ द्वारा बांग्ला भाषा में लिखी पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय	32
30.	इंतजार का फल मीठा होत है- श्री अशोक सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक, जबलपुर पीठ	33
31.	न्यायिक आदेश	34
32.	न्यायिक आदेश	37
33.	नियुक्तियां	39
34.	सेवानिवृत्तियां	40
35.	सृजन-अप्रैल 2016- दिसंबर 2016 के लिए पुरस्कृत विजेताओं की सूची	40
36.	माननीय सदस्यों के लिए 2017 में आयोजित सात दिवसीय आवासीय रिफ्रेशर कोर्स के छायाचित्र	41
37.	प्रशस्ति पत्र	42
38.	मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा-2017 के छायाचित्र	43

सत्यमेव जयते

श्री जी. डी. अग्रवाल
अध्यक्ष
आयकर अपीलीय अधिकरण

अध्यक्ष का पृष्ठ

प्रिय भाईयों एवं बहनों,

आयकर अपीलीय अधिकरण की विभागीय राजभाषा पत्रिका "सृजन" अधिकरण की एक मात्र पत्रिका है जो अधिकरण के भिन्न-भिन्न पीठों के कर्मचारी / अधिकारी / सदस्यों द्वारा राजभाषा हिंदी में लिखी गई रचनाओं से संकलित है। यह पत्रिका आपकी आत्माभिव्यक्ति तथा रचनात्मकता के लिए ऐसा मंच है जिसके द्वारा आप अपनी सोच, अपने अनुभव तथा विचार आयकर अपीलीय अधिकरण परिवार से बांट सकते हैं। इस पत्रिका की रचनाएं स्तरीय एवं सराहनीय हैं तथा आयकर अपीलीय अधिकरण में हिंदी को ज्योतिर्मय करने में इस पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक अर्ध न्यायिक संस्थान होने के बाबजूद भी आयकर अपीलीय अधिकरण में बड़े पैमाने पर हिंदी में कार्य संपादित किया जा रहा है।

आयकर अपीलीय अधिकरण के सदस्यों के लिए सात दिवसीय आवासीय रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन महाराष्ट्र ज्यूडीशिअल अकादमी, मुंबई में दिनांक 16.07.2017 से 22.07.2017 तक किया गया था। इस कार्यक्रम का उदघाटन श्री रविशंकर प्रसाद, माननीय विधि एवं न्याय मंत्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय श्री जस्टिस नरेश हरिशचंद्र पाटिल, मुंबई उच्च न्यायालय के माननीय न्यायधीश, श्री सुरेश चंद्र, सचिव, विधि एवं न्याय मंत्रालय, श्री सुशील चंद्र, अध्यक्ष, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड भी उपस्थित थे। सात दिवसीय कार्यक्रम में कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने उपस्थित होकर मार्गदर्शन दिया। समापन सम्मेलन दिनांक 22.07.2017 को माननीय श्री जस्टिस एस. मुरलीधर, न्यायधीश, दिल्ली उच्च न्यायालय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

श्री रविशंकर प्रसाद, माननीय मंत्री, विधि एवं न्याय मंत्रालय ने दिनांक 01.09.2017 को आयकर अपीलीय अधिकरण, सूरत पीठ का उदघाटन किया। श्री पी.पी. चौधरी, माननीय राज्य मंत्री, विधि एवं न्याय तथा इलेक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। साथ में माननीय संसद सदस्यगण, श्री सी.आर. पाल, श्रीमती दर्शना जरदोश, डॉ के.सी. पटेल, श्री मनसुख भाई डी. वासवा तथा श्री नाथु भाई जी. पटेल भी उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त इस कार्यक्रम में श्री प्रमोद कुमार, वरिष्ठ सदस्य, अहमदाबाद, श्री सी.एम. गर्ग एवं श्री ओ.पी. मीना, सूरत पीठ में नियुक्त सदस्यगण, श्री राजीव नाबर, प्रधान मुख्य आयुक्त, श्री पी.एम. शाह, अध्यक्ष, दक्षिणी गुजरात व्यापार एवं उद्योग संघ, श्री आर.एन. व्यापारी, अध्यक्ष, आयटीएटी बार एसोसियेसन, अहमदाबाद पीठ के सदस्यगण, सूरत के अनेक वरिष्ठ चार्टर्ड एकाउंटेंटस तथा वरिष्ठ अधिकारी गण उपस्थित थे। सूरत देश का 28वां शहर है जहां आयकर अपीलीय अधिकरण की पीठ स्थापित की गई है। सूरत पीठ के उदघाटन के समय वहां 3000 से भी अधिक अपीलें लंबित थी जिनके शीघ्र निपटारे की आशा है। सूरत पीठ के अधिकार क्षेत्र में सूरत, भरूच, डांग, नर्मदा, नवसारी, तापी और वलसाड जिले तथा दीव, दमन तथा दादरा-नागर हवेली का केन्द्रशासित प्रदेश शामिल होंगे।

आयकर अपीलीय अधिकरण की विभिन्न पीठें, विशेषकर अकार्यरत पीठों (non functioning bench) को ई-कोर्ट से जोड़ने का काम पिछले काफी समय से चल रहा है ताकि वहां के लंबित मामले की सुनवाई शीघ्र हो सके। इसी क्रम में पिछले वर्ष आयकर अपीलीय अधिकरण, जबलपुर एवं गुवाहाटी पीठ में ई-कोर्ट बनाया गया। गुवाहाटी पीठ के ई-कोर्ट का उदघाटन दिनांक 27.02.2017 को श्री सुरेश चंद्रा, माननीय सचिव, विधि एवं न्याय मंत्रालय द्वारा किया गया। आयकर अपीलीय अधिकरण, रांची पीठ में भी ई-कोर्ट बनाने की प्रक्रिया जारी है।

हमारा यह प्रयास है कि आयकर अपीलीय अधिकरण की सभी पीठों को अपना सरकारी भवन उपलब्ध कराया जा सके। ओडिसा सरकार ने आयकर अपीलीय अधिकरण, कटक पीठ का कार्यालय भवन एवं स्टाफ निवास बनाने हेतु निशुल्क 1.601 एकड़ की भूमि सेक्टर-1, सीडीए, कटक में आवंटित की है। भारत के माननीय मुख्य न्यायधीश, श्री दीपक मिश्रा द्वारा कटक पीठ के भवन निर्माण हेतु दिनांक 19.11.2017 को भूमि पूजन कार्यक्रम का उदघाटन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन ओडिसा ज्यूडीशियअल अकादमी, कटक के ऑडिटोरियम हाल में किया गया था। भूमि पूजन कार्यक्रम में श्री रविशंकर प्रसाद, माननीय मंत्री, विधि एवं न्याय तथा इलोक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौधोगिकी मंत्रालय, श्री धर्मेन्द्र प्रधान, माननीय मंत्री, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस तथा कौशल विकास मंत्रालय, श्री जस्टिस विनीत सरण, माननीय मुख्य न्यायधीश, ओडिसा उच्च न्यायालय, श्री सुरेश चंद्रा, माननीय विधि सचिव, श्री आर.एस. स्याल, उपाध्यक्ष, कोलकाता क्षेत्र उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में माननीय उड़ीसा उच्च न्यायालय के सभी कार्यरत माननीय न्यायधीश, उच्चतम न्यायालय एवं उड़ीसा उच्च न्यायालय के कुछ सेवानिवृत्त माननीय न्यायधीश तथा अन्य महत्वपूर्ण एवं गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

आयकर अपीलीय अधिकरण के उन्नति और विकास के लिए निरंतर प्रयास जारी है और मुझे विश्वास है कि आयकर अपीलीय अधिकरण परिवार के सभी अधिकारी / कर्माचारी संगठित होकर इस संस्थान के हित के लिए परिश्रम और निष्ठापूर्वक कार्य करते रहेंगे। अंत में, मैं आयकर अपीलीय अधिकरण के सभी अधिकारी / कर्मचारियों के मंगलमय भविष्य की कामना करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान करें।

जी.डी. अग्रवाल

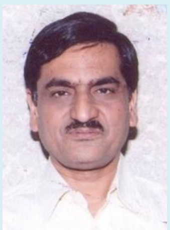

वह कौन थी

श्री प्रवीण के. बंसल,
उपाध्यक्ष, मुंबई

अक्समात देख किसी को जाते पति के बेडरूम से बाथरूम की
ओर
पत्नी ने पूछा पति से “वह कौन थी?”
उत्तर न मिलने पर पुकारा, स्वर कर कुछ ऊंचा
सुन रहे हो ना- बताओ,“वह कौन थी“
यही तो मैं भी जानना चाहता हूं, थी कौन वह
गुलाबी सी साड़ी जिसने रखी थी डाल
कितनी बार कहा जनाब को चस्मा लगा के रखो
साड़ी गुलाबी नही, रंग था उसका लाल-
बाल कटी सी वह लड़की, गोरे-गोरे से थे जिसके गाल
लगता है किसी भोली भाली लड़की पर डाला है तुमने जाल
छीः छीः छीः लगा रही हो मुझपे लाछन बिना हुए कोई बात
बिना सोचे समझे, बिना किये मामले की तहकीकात
साड़ी पहने गुजर जाने वाली, होगी शायद अपनी नौकरानी
आई होगी डाल नई साड़ी, जा रही होगी बाथरूम भरने पानी
हमारी नौकरानी- वह ठहरी बर्ध अवस्थक, और यह लड़की
‘एक दुम युवा’
प्रत्यक्ष को प्रमाण की नहीं आवश्यकता, झोकना चाहते हो
मेरी आंखों में धुवां
बेडरूम से निकल क्यों गई बाथरूम में,
दाल में जरूर कुछ है काला
मुंह छुपाने के लायक भी हम न रहेंगे, गर सचमुच हो गया
कोई घुटाला
तुम्हारा मुंह छुपाने के लिए मैडम, तुम्हारे पास है
काफी बड़ा पल्लू
नंगा तो मैं ही रह जाऊंगा जब तुम उतर आगोगी
बनाने पर उल्लू
क्यों कर रही हो फिजूल में कलैश
बना रही हो बात का बतंगर
क्यों ना चले बाथरूम की ओर
आखिर देखें कौन है इसके अंदर
बाथरूम है अंदर से बंद
खोलना पड़ेगा खिड़की को
तुम ही करोगी यह काम, वरणा कहोगी झांकता हूं
लड़की को
को चढ़ जाओ मेरी चढ़ी, देखो रोशनदान में मुंह डाल
कौन है यह सुंदर सी युवती, कटे हुए हैं जिसके बाल
ओह तु मेरा अपना प्यारा सा बेटा बेंजिन
जल्दी बता कहां छुपाई है तुने वह वेलन्टाईन
लगता है तु चला है कटवाने को हमारी नाक और
करने को अपना मुंह काला
उलटे सुलटे करके काम बाप के खानदान का करायेगा
बौमबाला
अरे मम्मी! यहां लड़की वड़की कोई नही, गलत नहीं है
मेरी कोई यारी
खुद पहन तुम्हारी लाल साड़ी, कर रहा कॉलिज में
होने वाली ड्रामे की तैयारी
लो जी, मैं ना कहती थी, मेरा बेटा कभी कोई उल्टा
नहीं कर सकता
उलटा पुलटा कोई कार्य इस घर में गर हुआ
जिम्मेदार तेरा पापा ही केवल हो सकता।

दे दो मोला जिजमान बटान का थारे में
म्हारो हाथ

श्री प्रवीण के. बंसल,
उपाध्यक्ष, मुंबई

था किसी शहर में विशाल सा एक मंदिर
तीन देवताओं की थी बनी भव्य प्रतिमायें वहां
बीच में बजरंग बली, बायें ओर कृष्ण कन्हैया
दायें ओर वृजमान थे रघुवर राम यहां
तीनों मूर्तियों की पूजा के लिए
अलग-अलग यहां तीन पुजारी
भक्त दर्शकों द्वारा चढ़ती थी जो भेंटे
थी वही पुजारियों की दिन भर की रोजगारी-
दर्शक कर सकें देवताओं की अधिक से अधिक सेवा
हर पुजारी की बस रहती थी कोशिश यही जारी-
पड़ोसी प्रतिमा पर देख चढ़ते अधिक चढ़ावा
होती थी अवश्य ईर्ष्या, परंतु देवगण नही होने देते थे
मारामारी

दर्श-1

एक दिन देख खड़े बीच में विराट रुपी हनुमान को
नत मस्तक हो शुरू किया एक युवक दर्शक ने ऐसे विलाप
जो चाहे चाहो चढ़ा दूं जो इच्छा मेरी गर पूर्ण कर दें आप-
करवा दो शादी कॉलिज वाली कामिनी से, जीवन भर करूंगा
आपका जाप
सुन नवयुवक का ऐसा संकल्प, बायें बैठे कृष्ण पुजारी ने कहा
नादान बालक, गलत स्थान पर हो तु खड़े वहां
तुम्हें नही पता, तुम्हारे संकट मोचक वहां नहीं, न ही हैं यहां
सारी उम्र रहा जो स्वंय कुंवारा, क्या करवा सकेगा वह
तुम्हारा विवाह
पूजा करो मेरे छलिया कन्हैया की, गर तुम बैठ कर यहां
जिस भी कामिनी से चाहो, काम देगा वह तुम्हारा बनवा

दर्श-2

इतने में आ पहुंचे एक और हनुमान दास
आंसु भर आंखों में, कहने लगे जा महाबली के पास
प्रभु हूं कितना पुराना मैं तुम्हारा भक्त
फिर भी अभी तक हूं निर्धन का निर्धन
क्यों नही कटवा देते, इस सेवक के गरीबी के बंधन
करो कृपा, अब दिलवा दो मुझे भी थोड़ा सा धन
वचन देता आपको, कि दिलवाओ तुम जितनी संपति
थारो खातिर बनवाने को मंदिर, रख छोडूगा आधी सपत्ति
उठ बोले राम के पुजारी, थे जो दायें बाजू बृजमान
मेरे अच्छे जिजमान, सुनो मेरी बात लगाकर कान
इतिहास गवाह है तुम्हारे बजरंगवली, थे स्वयं मेरे राम जी के दास
सिवाय एक लंगोट के, तुम्हे देने के लिए क्या बचा है इनके पास-
देखो मेरे प्रभु के आभूषण और वस्त्र, आखिर को ठहरे राजा राम
पूजा करो गर पुरषोत्तम की, दे मुझे एडवांस दक्षिणा, चौथाई संपत्ति का हो जाएगा काम।

दर्श-3

अंत में आये अब भगवान राम के भी एक दास
दुखित हो बोले जा नजदीक उनकी प्रतिमा के पास
हे कृपा निधान, पत्नी गई है मेरी भाग
बस बचा लो मुझे होने से बर्बाद-
कहता हूं चढ़ाऊंगा सोने का छत्र
पत्नी मेरी लौटवा दो, वापस बसवा दो मेरा घर-
कान लगाये सुन जो रहे थे पड़ोसी हनुमान के पुजारी
खुश हुए सोचकर, आई है अब अपने कमाने की बारी-
ओ मेरे भोले भक्त, क्या नही जानते, कि तुम कर रहे हो जिस राम की पूजा
खो गई थी उस बेचारे की अपनी पत्नी
मेरे भक्त हनुमान ने ही था उसको खोजा-
बोले हुए छत्र की, नगद दो गर रकम, स्वामी को समझा दूंगा तुम्हारी बात
वास्ते खोजने के तुम्हारी पत्नी को, एक कर दूंगा दिन और रात
मैं बन बजरंग सैनिक, तुम्हारे रकीब रावण को कर दूंगा मात
ढूंढ निकाल तुम्हारी प्रियतमा को उठा के लाउंगा अपने साथ
मान जाओ बात मेरी, हे मेरे जिजमान, मेरे भोले नाथ
बस दे दो मौका मुझे तुम्हारे काम में बटाने को अपना हाथ।

मेरी सोच को आजाद रहने दो

श्री एच.एस. सिद्धु
न्यायिक सदस्य, दिल्ली

मेरे दिल को धड़कने दो पहरा न लगाओ,
मेरी सोच को आजाद रहने दो।
मेरे हर कदम को यूं ही रहने दो,
मेरे खाने-पीने को जैसे मैं चाहूं, बदलने दो।।
मुझे मजबूर न करो, जो चाहूं करने दो,
मत चलाओ अपनी सोच के मुताबिक।
वक्त को कोई रोक भी नहीं सकता,
सूरज की किरणों को ना रोको ....।।

हवा का रूख मोड़ने की नाकामयाब कोशिश मत करो,
सूरज, चांद, सितारे सब सत्य हैं, चमकते रहेंगे।
कई मुखो वाला दीपक जलता रहेगा, बिन तेल बिन बाती,
आसमान से बादल गरजते रहेंगे, कोई रोक नहीं सकता।।

संगीत के सुर न कम होंगे,
न होंगे ज्यादा,
पूर्णमासी का चांद तो चढ़ेगा ही।
मानसरोवर को कोई बदल नहीं सकता,
बासुंरी की सुरीली धुन कभी फीकी नहीं पड़ेगी।।
दुख से गुजर कर सुख मिलेगा, संगीत तो सुरीला ही रहेगा,
किसी भी वक्त गुनगुनाऊंगा ....।।

शक्ति सब में है देखने की,
जरूरत है सिर्फ इसमें लीन हो जाने की,
सूरज के हर किरण को देखने की।।
चंद्रमा को गीत सुनाने की,
और उससे सुनने की,
सब शक्तियों को पास बुलाने की।
और अपनी मर्जी के मुताबिक चलाने की।।
आखिर सागर में मिल जाने की,
और सागर बन जाने की।।

बुढ़ापे का ईश्क

सुश्री उल्का परब
कार्यालय अधीक्षक, मुंबई

इक फस्ट-क्लसा की बुढिया नजरो में समाई है
गजलें सुना-सना कर फंदे में फंसाई है।
मुंह पोपला है प्यारा, इक आंख भी है तिरछी
वल्लाह गजब की बरछी, अल्लाह ने बनाई है।
मुंह फाड़कर जमहाई लेती है तो लगता है ऐसा
शिमला या मसूरी की खंदक है कि खाई है।
गालों पर झुर्रियां है, मखमल पर जैसे चुनर
बुढ़ी ने बुढ़े दिल की बिल्डिंग ही बनाई है।
जुल्फे है उसकी व्हाइट, नाइट में मारे लाइट
आंगन में अंधेरा है, कमरे में जुन्हाई है।
झझकोर मेरा कंधा, बोला यू एक बंदा
इस उम्र में मियां क्यूं यह रिक्स उठाई है।
हमने कहा कि बेटे तुझको नही तजुर्बा
निष्काम प्रेम करने की अब उम्र आई है।
कई दिनों बाद 'चाचा' से ईश्क करके
कोई और फिक्स करके वह भाग गई घर से
वाह क्या प्रीत निभाई है।
छोड़े है तिरछे तेवर, सब ले गई है जेवर
चोरी की रपट हमने थाने में लिखाई है।
सीआयडी ने पूछा यह ईश्क चला कब से
हमने कहा कि जबसे शनि की दशा आई है।
बोले पुलिस के आका, बोतल मंगाओ चाचा
लाए कहां से साहब, यह एरिया ड्राई है।
तो फिर तुम्हारी मर्जी, हम फाड़ देंगे अर्जी
लिख देंगे तुमने झुठी अफवाह उठाई है।
बेचारे चाचा बोले..........
गम दे गई वो बेगम, आंसू बहा रहे हम
समझे जिसे मलाई, वो निकली चंबल की लुगाई।

विदाई (शहीदों को समर्पित)

सुश्री उल्का परब
कार्यालय अधीक्षक, मुंबई

हम हिंद के सिपाही निकले शहीद होने
यह देश है हमारा
यह देश प्रेमिओं का
कुरबानी देने वाले
दिलदार शहीदों का
आज यहां कभी वहां............हममे न कोई जाने
कंधो पे है हमारे
विश्वास ही तुम्हारा
वचन लहु भरा लो
न होगा कभी अधूरा
आज यहां कभी वहां............हममे न कोई जाने।
हमें न स्वार्थ कोई
सुरक्षीता तुम्हारी
विश्वास को न तोड़ो
लगता हमें जीव्हारी
आज यहां कभी वहां............हममे न कोई जाने
जब जब कभी उठेगी
संगीन दुश्मनों की
विश्वास से लड़ेगी
से सिकंदरों की
आज यहां कभी वहां............हममे न कोई जाने
हम शांति के पुजारी
टकरा करो ना हमसे
जब तक हमें है धोका
लड़ना हमें है उनसे
आज यहां कभी वहां............हममे न कोई जाने
दिल के हजार टुकड़े
रखकर पीछे हमारे
हम संगरी चले हैं
विश्वास पे तुम्हारे
आज यहां कभी वहां .... हममे न कोई जाने
विश्वास पर तुम्हारे
हम हैं खड़े सिपाही
भारत के लोगो
दे दो हमें विदाई
निकले शहीद होने
हम हिंद के सिपाही
आज यहां कभी वहां............हममे न कोई जाने

यादें

श्री समीर दुबे
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा

यादों के धुंधले दर्पण में,
बीते हर पल की छाया है।
हर मोड़ पर मैंने जीवन के,
कुछ खोया है कुछ पाया है।
इस अंतरमन की पीड़ाएं,
अपने ही लोग न समझे है।
क्यों मन कहने को अपना है,
जब दर्द इसमें पराया है।
जितने सुलझाये प्रश्न यहां
सब रेशम जैसे उलझे हैं।

गजल

श्री अशोक सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक, जबलपुर

दुनिया में अजीब से, रिवाज हो गए
पीली जो शराब तो, खराब हो गए
महफिलों में छलके जाम, तो एतराज नही
मेरे हाथ में देखा तो, नाराज हो गए।
दो तरह की मिलती है दुनिया में शराब
गरीब पिए तो खराब, अमीर पिए तो नवाब हो गए
पीने वालों की अर्थी में, नही जाते हैं लोग
जमाने वाले भी हमसे, दरकिनार हो गए
गम में पी, खुशी में पी, पी छुपकर हमने
पर कब और कैसे, हम बेनकाब हो गए
पूछा जो किसी ने, क्यों पीते हो इतना
दिया वो जबाब कि, लाजबाब हो गए।

मेरे देश की धरती

श्रीमती शीतल अरोड़ा
अवर श्रेणी लिपिक, दिल्ली

देश की मिट्टी से मत खेलो देश का दुश्मन बना नवाब।
धरती मां की इज्जत कर लो करो न इसको लहु लुहान।।

1. खून का कतरा कतरा तरसा पाने को आजादी,
शांति का तुम पाठ पढ़ाओ, करो न यूं बरबादी।
सब है पहरेदार देश के, रक्षा करो आजादी की,
मान करो व इज्जत कर लो, गांधी जी की लाठी की।।
रक्षा करो इस देश की अपना दे करके बलिदान,
रक्षा करो इस देश की अपना दे करके बलिदान,
देश की मिट्टी से मत खेलो देश का दुश्मन बना नवाब।
धरती मां की इज्जत कर लो करो न इसको लहु लुहान।।

2. हिंद वतन है, हिंद हम हैं, यही हमारी शान है,
भ्रष्टाचार, दहेज-प्रथा को जड़ से मिटाना, यही हमारा लक्ष्य है।
मातृभूमि को करे नमन, हम इसकी संतान हैं,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई भारत मां की जान है।
आओ सब मिलकर भारत-भारती का गुनगान करें,
यही हमारी आन, बान और शान है।
देश की मिट्टी से मत खेलो देश का दुश्मन बना नवाब।
धरती मां की इज्जत कर लो करो न इसको लहु लुहान।।

।।जय हिन्द जय भारत।।

जी.एस.टी.

श्रीमती पूर्वता पारकर
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

जीएसटी से घबराओ मत, यह टैक्स देगा राहत।
नही लगेगा अब एक्स्ट्रा वेट, पूरे देश में अब एक ही रेट।
जीएसटी आया-जीएसटी आया, पूरे देश में एक परिवर्तन लाया।।
जीएसटी से बदलेगा देश, यही है जीएसटी का संदेश।।
जीएसटी से न घबराओ, अब इतना मत शोर मचाओ।।
वस्तुएं होने लगेगी सस्ती, तभी आएगी जनता को मस्ती।।
जीएसटी का उठाए लाभ, आप भी रहोगे खुश साहब।
मनमाना टैक्स अब होगा बंद, टैक्स चोरियां हुई पाबंद।
अतिरिक्त टैक्स से छुटकारा मिलेगा,
सस्ता होगा सामान जनता को लाभ मिलेगा।।
जीएसटी का पूरा नाम गुड्स एंड सर्विस टैक्स।
जीएसटी से बढ़ेगी जीडीपी, देश बढ़ेगा बढ़ेगी पीढ़ी।।
सरकार का है वादा, जीएसटी है बेहतर सौदा।।
जीएसटी बिल अब चल पड़ेगा, अतिरिक्त टैक्स न देना पड़ेगा।।
पूरे देश में एक ही टैक्स,नाम जीएसटी देश बनेगा बेस्ट।
जीएसटी बिल का करो स्वागत, इससे मिलेगी अर्थव्यवस्था को ताकत।

जीवन

श्रीमती. सोनाली मोरे
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

दो दिन की है जिंदगी
हर किसी को नहीं मिलती,
जब होते हैं पाप पुण्य सम
तब होता है मानव जन्म।

इस जीवन में खुशियाँ बाँटों
दूसरों के दुख भी झेलो,
मदद का अपना हाथ बढाओ
सूनी राह पर फूल खिलाओ।

मां-बाप के कष्ट को समझो
उनके प्रति कर्तव्य निभाओ,
समाज का भी ऋण है अपना
गुरु का भी है आदर करना।

फिर चारों ओर से मिलेगी खुशी
न होगी कोई कठिनाई,
अपने जीवन को सार्थक करो
संसार में अच्छा नाम कमाओ।

फिर आयेगा एक दिन न्योता
सब कुछ इधर रख कर है जाना,
ईश्वर का अंत में नाम ले लो
इस जीवन का सार्थक करो।

पापा याद बहुत आते हो कुछ ऐसा भी मुझे कहो

श्रीमती शारदा लोढ़े
एम.टी.एस., मुंबई

माँ को गले लगाते हो, कुछ पल मेरे भी पास रहो !
'पापा याद बहुत आते हो' कुछ ऐसा भी मुझे कहो !
मैंने भी मन मे जज़्बातो के तूफान समेटे हैं,
ज़ाहिर नही किया, न सोचो पापा के दिल मैं प्यार न हो!

थी मेरी ये ज़िम्मेदारी घर मे कोई मायूस न हो,
मैं सारी तकलीफें झेलूं और तुम सब महफ़ूज़ रहो,
सारी खुशियाँ तुम्हें दे सकूं, इस कोशिश मे लगा रहा,
मेरे बचपन मैं थी जो कमियाँ, वो तुमको महसूस न हो!

हैं समाज का नियम भी ऐसा पिता सदा गम्भीर रहे,
मन मे भाव छुपे हो लाखों, आँखो से न नीर बहे!
करे बात भी रुखी-सूखी, बोले बस बोल हिदायत के,
दिल मे प्यार है माँ जैसा ही, किंतु अलग तस्वीर रहे!

भूली नही मुझे हैं अब तक, तुतलाती मीठी बोली,
पल-पल बढते हर पल मे, जो यादों की मिश्री घोली,
कन्धों पे वो बैठ के जलता रावण देख के खुश होना,
होली और दीवाली पर तुम बच्चों की अल्हड टोली!

माँ से हाथ-खर्च मांगना, मुझको देख सहम जाना,
और जो डांटू ज़रा कभी, तो भाव नयन मे थम जाना,
बढते कदम लडकपन को कुछ मेरे मन की आशंका,
पर विश्वास तुम्हारा देख मन का दूर वहम जाना!

कॉलेज के अंतिम उत्सव मैं मेरा शामिल न हो पाना,
ट्रेन हुई आँखो से ओझल, पर हाथ देर तक फहराना,
दूर गये तुम अब, तो इन यादों से दिल बहलाता हूँ,
तारीखें ही देखता हूँ बस, कब होगा अब घर आना!

अब के जब तुम घर आओगे, प्यार मेरा दिखलाऊंगा,
माँ की तरह ही ममतामयी हूँ, तुमको ये बतलाऊंगा,
आकर फिर तुम चले गये, बस बात वही दो-चार हुई,
पिता का पद कुछ ऐसा ही हैं फिर खुद को समझाऊंगा!

सफलता

श्री सी.एल. सिंह,
वरिष्ठ निजी सचिव, लखनऊ

इस दुनिया में जो भी आया है वह सफल होना चाहता है, चोटी पर पहुंचना चाहता है तथा खुश रहना चाहता है। विद्यार्थी परीक्षा में सफल होना चाहता है, खिलाड़ी खेल में, संगीतकार संगीत में, किसान खेत में, व्यापारी व्यापार में, नेता राजनीति में तथा अन्य सभी जिस भी व्यवसाय में लगे हैं सभी सफल होना चाहते हैं। मैं भी सफल होना चाहता हूं लेकिन भारत सरकार का कर्मचारी होने के कारण मेरी अपनी सीमाएं हैं जिसमें मैं बंधा हुआ हूं या यूं कहिए कि मैं सफल नही हो पा रहा हूं तो बहाना बना रहा हूं कि मेरी अपनी सीमाएं हैं। मेरे सफल होने का मतलब यह कतई नही है कि मैं अपनी सरकारी सेवा ठीक ढंग से पूरी कर लूं तो मैं सफल हो गया। मैं तो चाहता हूं कि दुनिया में मेरा भी नाम हो, दुनिया के लोग मुझे जानें। अगर मैं मशहूर हो गया तो पैसा तो अपने आप आएगा जैसा सभी मशहूर लोगों के साथ होता है।

एक दिन मैं टेलिविजन देख रहा था जिसमें एक कार्यक्रम आ रहा था जिसका शीर्षक था 'Indian idol'. यह एक संगीत का कार्यक्रम था। बहुत से बड़े बच्चों में से दस बच्चों को आगे की प्रतिस्पर्धा के लिए चुना गया था तथा कार्यक्रम संचालक बोल रहा था कि बच्चो आपने देखा कि अभी कुछ दिन पहले तक आपको कोई नही जानता था लेकिन आज आपको बहुत से लोग जानते हैं, और हां अगर आप अंतिम मुकाबला जीत जाते हैं तो आप को कई देशों के लोग जानेंगे और आप के पास बहुत पैसा होगा। मेरे मन में तुरंत यह बात आई कि कम समय में भी ख्याति प्राप्त की जा सकती है अर्थात मशहूर होने के लिए शार्टकट रास्ते भी हैं। मैंने टेलिविजन का चैनल बदल दिया। जिस चैनल पर किया उस पर आईपीएल का क्रिकेट मैच आ रहा था जिसमें घोषणा करने वाला बता रहा था कि कौन खिलाड़ी कितने में बिका तथा किस देश का रहने वाला है। मेरा सिर चकराया और मैंने सोचा कि मेरा तो जीना ही व्यर्थ हो गया, ना तो मुझे दुनिया जानती है न ही मेरे पास बहुत सारा पैसा है। टेलिविजन बंद करके सोने की कोशिश करने लगा लेकिन नींद नहीं आ रही थी। मन में सिर्फ एक बात बार-बार घूम रही थी कि मैं कौन सा तरीका अपनाऊंगा कि मुझे भी दुनिया जानने लगे तथा हर कोई मेरी तारीफ करे, लेकिन कोई तरीका नही सूझ रहा था।

मैं बता दूं कि मैं एक आस्तिक आदमी हूं तथा ईश्वर में मेरा पूरा भरोसा है। रोज मंदिर जाता हूं, फूल-माला चढ़ाता हूं, पूजा करता हूं, भजन करता हूं, चढ़ावा चढ़ाता हूं, यथोचित दान दक्षिणा भी करता हूं, गरीबों की मदद करता हूं तथा बहुत ही सात्विक जीवन जीता हूं। मन में आया कि जब मैं ईश्वर के इतने नजदीक हूं तो क्यू न उन्हीं से मदद मांगी जाए। मन में विचार आया कि ईश्वर को साक्षात तो देखा नहीं तो उनसे मदद कैसे मांगे। इसी उधेड़बुन में दो दिन बीत गए। रात में जब सोया तो ईश्वर ने मुझे दर्शन दिये। मैं बड़ा खुश हुआ और नतमस्तक होकर उनसे बोला कि हे परमपिता आप तो जानते हैं कि मैं आपका कितना बड़ा भक्त हूं। प्रभु बोले, पुत्र मुझे सब पता है, क्या चाहते हो? मैंने प्रार्थना किया कि हे परमपिता मेरा तो दुनिया में आना ही व्यर्थ हो गया क्योंकि न तो मेरे पास बहुत सारा पैसा है और न ही दुनिया मुझे जानती है। आप तो सर्वशक्तिमान हैं। आप कुछ ऐसा करें कि मैं दुनिया में मशहूर हो जाऊं तथा हर कोई मुझे जानने लगे और लक्ष्मी की कृपा हो जाए। प्रभु मुस्कराए और बोले, पुत्र जो मांगना है मांग लो, पूरा होगा। मैं बहुत खुश हुआ लेकिन मैं खुद भ्रमित हो गया कि मैं प्रभु से क्या मांगू। मैंने निवेदन किया कि मुझे सोचने के लिए एक दिन का वक्त दिया जाए। प्रभु बोले, पुत्र जैसी तुम्हारी इच्छा। पूरे दिन मेरे मन में बड़ी उलझन बनी रही तथा मैं निश्चित नही कर पा रहा था कि प्रभु से क्या मांगू। मन ने कई क्षेत्रों का चुनाव किया जैसे- राजनीति में हाथ आजमाऊं, बाबा/मठाधीश बन जाऊं, उद्योगा लगाऊं, खिलाड़ी बन जाऊं या संगीतकार बन जाऊं। मेरी आत्मा ने कहा कि आजकल राजनीति बहुत गंदी गई है और ज्यादातर राजनीतिज्ञों का चरित्र अच्छा नहीं है, इसलिए इस क्षेत्र को त्याग दिया। बाबाओं और मठाधीश की हालत किसी से छिपी नहीं। कुछ बाबाओं और मठाधीशों ने लोगो की आस्था के साथ ऐसा खिलवाड़ किया है तथा इस क्षेत्र की ऐसी दुर्गति की है कि शायद ही कोई अच्छा व्यक्ति इस क्षेत्र में जाना पंसद करेगा। व्यवसाय अपन बूते की बात नहीं लग रही थी। अब बचे दो क्षेत्र- खेल और संगीत। खेल में भी सौ प्रतिशत सूचिता नहीं है क्योंकि अक्सर सुनने में आता है कि फला मैच फिक्स था। फिर भी विचार आया कि खेल और संगीत में से किसी एक क्षेत्र को चुना जा सकता है। अगली रात जब प्रभु प्रकट हुए तो मैंने बड़ी विनम्रता पूर्वक प्रार्थना किया कि प्रभु मुझे क्रिकेट के खेल में चोटी पर पहुंचा दें। प्रभु ने कुछ सीमाओं के साथ क्रिकेट की बारह गेंदे दी और बोले कि पुत्र हर गेंद को जब तुम खेलोगे तो छः रन मिलेगा और फिर प्रभु अतर्ध्यान हो गए। मैं बड़ा खुश हुआ और सोचा कि आज तक लगातार बारह गेंदों पर बारह छक्के किसी ने नही लगाए। अगर मैं ऐसा कर लेता हूं तो दुनिया में नंबर एक पर विराजमान हो जाऊंगा जिससे नाम होगा और पैसों की बरसात होगी। अब मेरे सामने समस्या ये थी कि मैं किस टीम के साथ खेलूं। मैंने कई टीम प्रमुखों से बात की और प्रभु द्वारा दिये गए बारह चमत्कारी गेंदों का जिक्र किया लेकिन कोई भी मानने को तैयार नही हुआ। मेरे बहुत प्रार्थना करने पर एक टीम के प्रमुख ने अपने एक तेज गेंदबाज को एक गेंद देते हुए बोला कि इस गेंद को खेल कर दिखाओ। सब ने मेरा मजाक भी बनाया लेकिन प्रभु के वरदान के अनुसार मैं उत्साह से भरा था। मैंने उस गेंद को बाउंड्री लाइन के बाहर छः रन के लिए पार करा दिया। उन्होने दूसरी गेंद फिकवाया जिस पर भी मैंने छक्का लगा दिया। उन्होने गेंदबाज को बदल दिया तथा बोले अब खेलकर दिखाओ। इस तरह उन्होने मेरी पूरी बारह गेंदे प्रैक्टिस में ही समाप्त कर दी। मैं निराश होकर घर वापस आ गया। रात में जब सोया तो प्रभु प्रकट हुए और मेरा हाल-चाल पूछा। मैंने सारा वृतांत प्रभु के सामने खोलकर रख दिया। प्रभु फिर मुस्कराए और बोले कि पुत्र किसी और क्षेत्र में हाथ आजमाओ। मैंने कहा- हे परमपिता, अगर आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो ऐसा कोई उपाय बताइये जिससे मैं संगीत के क्षेत्र में पूरी दुनिया में तहलका मचा दूं। प्रभु ने कहा- पुत्र मैं तुम्हे वरदान देता हूं कि तुम दस गाने जो भी गाओगे वो दुनिया

में आज तक गाये गए गानों में सर्वोत्तम होंगे। ऐसा कहकर प्रभु अंतर्ध्यान हो गए। मेरे सामने पहले वाली समस्या फिर आकर खड़ी हो गई कि मैं ये गाने किस संगीतकार को गाकर सुनाऊं। किसी तरह खोज करने पर एक प्रसिद्ध संगीतकार मिले। मेरी प्रार्थना सुनने पर वह एक गाना सुनने को राजी हो गए। मैंने पहला गाना सुनाया। गाना सुनकर वो संगीतकार मंत्रमुग्ध हो गए तथा दूसरे गाने की फरमाइश की। मैंने दूसरा गाना भी सुनाया जो उनको बहुत अच्छा लगा। मेरी गायिकी से प्रभावित होकर उन्होने कुछ अन्य मशहूर संगीतकारों को गाना सुनने के लिए बुला लिया जिसमें दुनिया के कई मशहूर संगीतकार थे। मेरे गाने की तारीफ होती रही और मैं गाता चला गया। मैं यह भूल ही गया कि मेरे पास सिर्फ दस गानों का वरदान है। दस गाने पूरे होने के बाद जब उन्होने आगे और गाने को कहा- तो अगले गाने में न लय थी, न ताल था, औन न ही कानों को अच्छी लगने वाली कोई बात थी। सभी संगीतकार बहुत नाराज हुए लेकिन मुझे एक मौका और दिया पर सब बेकार गया। वहां से मुझे धक्के मारकर निकाल दिया गया। मैं मायूस होकर वहां से घर आ गया। रात में प्रभु से फिर मुलाकात हुई और मैंने सारा दुखड़ा उनके सामने रख दिया। मैंने प्रार्थना की कि हे परमपिता आप के वरदान के बाबजूद मैं जहां का तहां हूं। प्रभु मुस्कराए और बोले, मेरे प्यारे बच्चे, मैं जानता हूं कि तुम मेरे अच्छे भक्त हो। रोज मंदिर जाते हो, फूल-माला चढ़ाते हो, पूजा करते हो, भजन करते हो, चढ़ावा चढ़ाते हो, यथोचित दान दक्षिणा भी करते हो, गरीबों की मदद करते हो और बहुत ही नेक पाक जिंदगी जीते हो लेकिन मेरे प्रिय पुत्र तुम खुद बताओ कि जो तुम चाह रहे हो क्या वह उचित है। एक सफल खिलाड़ी या संगीतकार बनने की जो इच्छा तुमने मेरे सामने प्रकट की थी, उस क्षेत्र में तुमने कोई मेहनत नहीं की है और अचानक सफलता के उच्चतम पायदान पर पहुंचना चाहते हो। अगर मैं ऐसा होने देता तो क्या उन लोगों के साथ अन्याय नहीं होता जो इस क्षेत्र में दिन-रात मेहनत करते हैं। मैं किसी के साथ अन्याय नहीं कर सकता। मैं तो किसी भी व्यक्ति के द्वारा किए गए कर्म की मात्रा और कर्म के दोष गुण के आधार पर ही सफलता या असफलता का निर्धारण करता हूं। जैसे तुम मेरे पुत्र हो वैसे ही दुनिया के अन्य सभी लोग भी मेरे प्रिय पुत्र और प्रिय पुत्रियां हैं और मुझे सभी बराबर प्यार करते हैं। मैं सफलता या असफलता का निर्धारण अपनी सेवा देखकर नही बल्कि मनुष्य द्वारा किए गए कर्म की मात्रा एवं कर्म के गुण दोष के आधार पर ही निर्धारित करता हूं। मैंने बड़ी विनम्रतापूर्वक प्रभु से शिकायत भरे लहजे में पूछा कि हे परमपिता अगर आप पहले ही ये सब बता देते तो मुझे इतना परेशान न होना पड़ता। प्रभु फिर मुस्कराए और बोले कि हे प्रिय पुत्र मैं तुम्हें व्यक्तिगत रुप से इस बात का अनुभव कराना चाहता था कि किसी भी क्षेत्र में बुलंदी तक पहुंचने के लिए चाही गई सफलता के अनुपात में कर्म करने पर ही वह मंजिल मिल सकती है। इतना कहकर प्रभु अतर्ध्यान हो गए। सुबह के चार बज रहे थे और मेरी नींद खुल गयी।

सीपी

श्रीमती आशा पाल,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, मुंबई

फोन की घंटी बजी तो सीपी ने चाय पीनी छोड़ दी। रिसीवर उठाया हैलो कहा-उधर से आवाज आई- क्या मैं मिस सीपी सोलंकी से बात कर सकता हूँ?
'आप कौन?' सीपी ने पूछा
जवाब मिला - मैं अनुरुप पंडित?
सीपी हड़बड़ा गई. वैसे पचास की उम्र में हड़बड़ाने जैसी कोई बात नहीं होती. उसने दो मिनट का पॉज दिया. उधर से भी कोई आवाज नहीं आई. उसने पूरी ताकत से खुद को सहेजकर कहा- 'आप?'
हां मैं! पूछोगी नहीं पूरे पच्चीस बरस बाद कैसे फोन किया? बस कहीं से नंबर मिल गया तो सोचा, पूछ लूं कैसी हो! किसी ने बताया कि तुम्हारी मां नहीं रहीं. सुनकर दुःख हुआ. तुम बेहद अकेलापन अनुभव कर रहीं होंगी ! मां बेसक बीमार थीं पर बड़ा सहारा था उनका ! है ना !'
'नहीं!'
'तो फिर ! बीस साल में एक पीढ़ी बदल जाती है. आपने पच्चीस साल लगा दिए एक फोन करने में?'
'क्या करें हालात ही ऐसे थे.'
सीपी इतना कुछ कह गई क्योंकि फोन पर चेहरा जो दिखाई नहीं देता. अनुरुप सामने होता तो आधे शब्द हलक में अटक कर रह जाते! सवालों का कहीं अंत नहीं होगा ये सोचकर उसने बात बदल दी.'आपकी आवाज.....' इसके आगे वह कुछ कहती इससे पहले ही वह बोल पड़ा- 'उम्र के साथ बदलेगी ही.' हकीकत में सीपी कहना चाहती थी कि 'पैंसठ की उम्र में पैंतीस जैसी लगती है', पर वह चुप रह गई.
सचमुच, आवाज की भी एक उम्र होती है. पर कुछ लोगों पर यह लागू नहीं होता. उनकी आवाज कभी वयस्क नहीं होती. सदा जवान बनी रहती है .
'आप तो रिटायर्ड हो गए होंगे?' सीपी ने जिसका जवाब उसके पास था वही सवाल कर डाला! कभी-कभी स्थितियां ऐसी हो जाती हैं कि कौन सी बात की जाए कुछ सूझता ही नहीं.
'सारे दायित्वों से मुक्त हूं. पाठ्य पुस्तकों की गाइड लिखने का काम कर रहा हूँ. सृजन-साधना और अर्थ(पैसा) दोनों उद्देश्य पूरे हो जाते हैं. तुम भी ऐसा ही कुछ करना चाहो तो मैं प्रकाशकों से बात कर सकता हूँ.'
सीपी ने फिर सवाल किया- 'आपकी श्रीमतीजी कैसी हैं?'
'वो नहीं रहीं'- संक्षिप्त सा उत्तर दिया अनुरुप ने.
सीपी की आंखों के सामने से घूम गई- वह बेहद सांवली, पांचवी पास कर्कश महिला जो अनुरुप की बीवी थी.मां-बाप ने खूब दहेज लेकर बांध दी थी अनुरुप के गले में . कभी-कभी इन्सान सरहद पर लड़ने का साहस जुटा लेता है पर मां-बाप के सामने जुबां खोलने का नहीं.

सीपी ने महसूस किया कि अब सवालों की माला खत्म कर देनी चाहिए. बेशक अनुरुप को अपनी बीवी नापसंद थी पर दिल के किसी कोने में जुड़ाव तो होगा. साथ रहते-रहते दीवारों तक से प्यार हो जाता है.

अनुरुप तो जैसे सब कुछ कह देना चाहता था. क्यों उसे एम.जी. कॉलेज के प्रिंसिपल से लेकर मैनेजमेंट के लोगों तक ने खूब परेशान किया. वैसे भी ईमानदार लोग सभी भ्रष्ट लोगों के आंखों की किरकिरी बने रहते हैं! वह अपनी लिखी हुई कुछ किताबें सीपी को भेंट करना चहता था पर सीपी ने बात को तरजीह न दी.

नमस्कार कहते हुए उसने फोन रख दिया. चाय ठंडी हो चुकी थी, पुनः गर्म की. सीपी को फुलटाइम नौकरानी रखना पसंद नहीं! ज्यादा आराम तलबी अच्छी नहीं. सौ बीमारियां घेर लेती हैं.

लोग कहते- आगे-पीछे कोई नहीं फिर भी मिस सोलंकी बेहद कंजूस हैं. कसम है जो खाने में एक रोटी बच जाए. बाई से गिनकर रोटियां बनवाती हैं. समय की पाबंद इतनी कि अपने पीरियड में न पांच मिनट पहले आएंगी न दस मिनट बाद जाएंगी.

लोगों का क्या है, वे तो बाहरी घटनाओं, बर्ताव या चीजों का जोड़-घटाना करते रहते हैं. किसी इंसान के मन की भीतरी तहों में कितने अंतर्द्वन्द्व, संघर्ष और उलझनें पलती हैं, ये वो क्या जानें. सीपी को लगने लगा है घर का सन्नाटा तोड़ने के लिए एक इंसान की उष्मा नाकाफी है. खालीपन को भरने के लिए उसका अस्तित्व असहाय नजर आ रहा है.

कभी-कभी लेटे-लेटे वह अचानक डर जाती है. उसे लगता है दो अनजाने हाथ उसकी ओर बढ़े चले आ रहे हैं, जो उसका गला घोंट देंगे. चीख हलक में दबी रह जाती है और वो पसीने से नहा जाती है. आजकल अक्सर ऐसा होता है. वह स्लीपिंग पिल्स लिए बिना सो नहीं पाती. उसे लगता वह स्वयं को जितना बहादुर समझती है उतनी है नहीं.

मां सीरियस थी तो भाई 'पुरु' को बुला भेजा. उसका फोन आया- दीदी मुझे छुट्टी मिलना मुश्किल है! आप मैनेज कर लो ना. वैसे भी आपको पढ़ाने के अलावा काम ही क्या है. पड़ोस के 'राधे' से कह देना. कुछ रुपये रख देना हथेली पर दौड़-धूप कर देगा.' मां के मरने पर आया था टसुए बहाने. एक ही मां के बच्चों में कितना फर्क होता है. कितना हृदयहीन तर्क दे डाला था उसने अरे भई! उम्र हो गई तो जाना ही था. यहां कौन अमरपट्टा बांधकर आया है.'

मरने के पंद्रह दिन पहले की बात है. मां बोली थीं.-'पुरु'! बीच-बीच में आ जाया कर बेटा. दीदी अकेली है. उसे अच्छा लगेगा. उसने तुझे पढ़ाया-लिखाया. बी.ई करवाया. शीदी भी करवा दी क्या हीं किया उसने? तपाक से जवाब दिया था पुरु ने 'अम्मा' आप हर बार मुझे अपराधी घोषित करने पे तुली रहती हो. कठघरे में खड़ा कर देती हो. दीदी ने कोई एहसान नहीं किया. हमने तो नहीं कहा था अकेले रहने को. बसा लेतीं अपना घर. हम कुछ भी करते, भीख मांगते या नदी में डूब मरते'.

'देख पुरु!' वक्त निकल जाने पर सभी के पंख उग आते हैं. आसमान मिल गया तो जमीन को नहीं भूलना चाहिए. तेरे पिता के गुजर जाने के बाद सीपी ने ही पूरा घर संभाला. नहीं तो पता नहीं क्या होता!'

सीपी को पुरु के शब्द याद आते हैं तो वह रोती नहीं. वह अगतिक अनुभव करती है. दोष देती है भगवान को. मनुष्य को दुर्बुद्धि भी तो वही देता है.

अनुरुप भी तो एक बदतर जिंदगी जी रहा था. एक हद के बाद नकाब उतारकर फेंकना ही पड़ता है. आखिर दो चेहरे लेकर कब तक जिया जा सकता है. उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि साहस न था पर हां तंग आकर एक महीने के लिए घर से गायब हो गया. प्रोफेसर्स कालोनी में हंगामा मच गया था. 'अनुरुप पंडित लापता है.' हर जुबां पर एक ही चर्चा थी. पर एक माह के अज्ञातवास के बाद लौटकर अनुरुप ने सारी चर्चाओं को विराम दे दिया. शादी के दस साल बाद भी बच्चे न हुए तो गांव से भाई का बेटा ले आया था 'पिंटू!' अब जाकर उसे थोड़ी राहत मिली! उसकी पत्नी के खाली दिमाग को काम मिल गया.

सीपी, पच्चीस साल पहले अनुरुप की छात्रा थी. असीम ऊर्जा से भरी हुई, टेबिल टिनिस खेलना और नाटकों में भी अभिनय करना उसकी व्यस्तताएं थीं.

क्लास में अनुरुप जब ब्लैक बोर्ड पर लिखता तो लड़कियां उसकी हथेली देखती रहतीं- 'सर आपकी हथेलियां देवताओं जैसी हैं.' वह मुस्करा कर रह जाता. अनुरुप को 'बिहारी' पढ़ाने में भारी असुविधा होती. पढ़ाते-पढ़ाते जब 'ए ग्रेड' दोहों की व्याख्या करने की बारी आती तो वह छात्रों से कहता-'देखिए!' इस दोहे में समझाने जैसा कुछ नहीं है.' लड़के एक-दूसरे की तरफ देखकर मंद-मंद मुस्कराते.

छात्रों से उसका रिश्ता दोस्ती का था. उस समय संगीतिका और शिरीष के रोमांस के खूब चर्चे थे कॉलेज में. वह प्रसंगवश छात्रों को बताने लगा-'हमारे गुरु कहते थे- लड़कियों से दूर रहो. वे अध्ययन में बाधा पैदा करती हैं. इस वास्ते हम एक नुस्खा बता रहे हैं- अपने पास कंकाल की तस्वीर रखो. सोचो कि सुंदर लड़की भी अंततः कंकाल में बदलने वाली है.'- और लड़के पूछते- 'सर! हम क्या करें?'

वह कहता-'देखो भई, हमने अपनी बता दी, आगे आपकी मर्जी.' कभी-कभी वह अपने घर से भाग जाने की कहानी भी बताता कि कैसे वह दो कपड़े और एक दरी लेकर उज्जैन चला आया था. पहचान के प्रोफेसर शिवमंगल पुराणिक के घर. जिनकी चरण सेवा करके ही वह इस पद तक पहुंचा! गुरुआनी के लिए खाना बनाना, गुरु के हर आदेश का पालन करना. बहुत कुछ किया था उसने. वह 'मालपुए' बढ़िया बनाता था.

कॉरीडोर में एक बार सीपी की आंखें टकरा गई थीं उससे. सीपी ने महसूस किया कि उसे कुछ हो गया है! वह असहज हो गई. घर आकर उसने आईने से पूछा था-'मुझे क्या हुआ है?' आईने ने दो टूक जवाब दिया था- 'प्यार'.

'रोज डे' पर उसने पीला और सफेद गुलाब दिया!

सीपी को चिढ़ छूटी- दिया भी तो क्या! शांति का झंडा, और दोस्ती का रुमाल! बाद में पता चला कि उसे ये तक पता न था कि लाल गुलाब किसे और क्यों दिया जाता है.

एक दिन प्राचीन काव्य पढ़ाते समय उसने बताया कि शास्त्रों में अनुकरण को, सृजन की पहली सीढ़ी कहा गया है. रुपरेखा बनाकर उसने एक मंजी हुई कविता सुनाई थी ये कहकर कि प्रस्तुत कविता उसकी खुद की लिखी है.

सीपी हैरान- अनुरुप रातोंरात सिद्धहस्त कवि कैसे बन गया! एक हफ्ते बाद शलभ बोला था 'सीपी'-उस दिन जो कविता अनुरुप सर ने सुनाई वह प्रसिद्ध कवि 'मयंक' की है.'

अनुरुप था बहुत सीधा. कुछ दिन बाद खुद ही कह गया कि वह कविता चोरी की थी.

समय ने करवट ली. घरेलू कारणों से अनुरुप को जमी- जमाई नौकरी छोड़कर बिलासपुर जाना पड़ा. तब तक आंखों –आंखों में एक रिश्ता जवान हो चुका था. सीपी उसे चाहने लगी थी. अनुरुप शादीशुदा था और सीपी को पी.जी. करने के बाद नौकरी ढूंढनी थी. धीरे-धीरे वह अपने मन को समझाने में कामयाब हो गई कि ग्रह-नक्षत्र अपने पक्ष में ना हों तो क्या किया जा सकता है. प्रेम-वेम सब फुर्सत की बातें हैं. जो चांदी का चम्मच मुंह में लेकर पैदा होते हैं, उन्हें ही रोमांस का अघोषित अधिकार मिलता है. बाकी तो रोमांस की चर्चा करते हैं, उसी जीते नहीं.

पर रोमांस तो कहने-सुनने से परे की चीज है. बारिश में धूप निकल आए और जमीन की सतह सूख भी जाए तो क्या होता है, भीतर तो नमी बरकरार रहती है! सीपी की भीगी धड़कने ऐसी ही थीं.

मां घुटनों के दर्द से निष्क्रिय हो गई. अनुरुप ने कभी घर का रुख न किया. पहले एकाध खत डाल देता था. जैसे किसी पियक्कड़ को एक के सौ-सौ दिखते हैं सीपी को वैसे ही हर कहीं अनुरुप नजर आता. अम्मा ने बुआ से कहकर दो-तीन जगह बात चलाई पर सीपी हर पुरुष में अनुरुप को ढूंढती रही. उसकी उदासीनता बनी रही. मां प्रकट में कुछ न कहतीं पर भीतर ही भीतर घुलती रहीं. उनसे सीपी की छटपटाहट छिपी न थी. अनुरुप एक ऐसा इंद्रधनुष था जो उसके विचारों के आसमान में सदैव खिंचा रहता. साल पर साल बीतते रहे. वह एकाकीपन से उकता चुकी थी. एक पल ख्याल आता खुद को खत्म कर दिया जाए. दूसरे पल लगता- क्यों खत्म किया जाए इतना सुंदर मनुष्य जीवन-कितनी मुश्किल से मिलता है. शास्त्रों की मानें तो चौरासी लाख योनियों को पार करने के बाद .... तब तो बेहद मूल्यवान हुआ. पर वह लोगों के सवालों के जवाब देते-देते थक चुकी थी.

उसे लगता- बार-बार शादी का प्रश्न पूछने वाले ये लोग कहां थे जब उसके पिता को कैंसर हुआ और मदद की जरुरत थी. कहां थे जब पुरु का एडमिशन करवाना था. कहां थे जब किराया बढ़ाने की बात की तो किराएदार ने गुंडे बुलवाकर धमकाया था हमें. कहां थे जब सबेरे-सबेरे मां आखिरी सांस ले रही थी. लोग सिर्फ तंग करना जानते हैं.

अकेली औरत उनकी नजरों में खटकती है. अगर किसी कन्या को ससुराल वाले दहेज की खातिर जला दें तो 'तीसरा' करके झट भूल जाते हैं. अगर किसी के गर्भ में कन्या भ्रूण पल रहा हो और पति एबॉर्ट करने को मजबूर करे तो-उनका निजी मामला कहकर हाथ झाड़ लेते हैं. किसी स्त्री का पति उसे घर से भाग दे या दूसरी औरत रख लेते पहली वाली का ही कसूर होगा कहकर अपनी परंपरागत सोच का नमूना पेश करते हैं. अगर कोई औरत ससम्मान अकेले जी रही है तो उनके पेट में बल पड़ने लगते हैं. अगर वह रात के नौ बजे मंदिर से भी लौट रही हो तो दस बातें बनाएंगे. लोग महंगाई की, पेट्रोल बचाने और पर्यावरण की लंबी-लंबी बातें करते हैं पर वह ऑटो न मिलने पर या पेट्रोल बचाने अपनी सहयोगी प्राध्यापक की गाड़ी में पीछे बैठकर घर आ गई तो कहेंगे 'जरुर दाल में काला है'.

लकीर पीट रहे हैं लोग. संस्कृति को शीशे का बनाकर रख छोड़ा है जो हल्की सी आवाज और हवा के आघात से तक चटख जाती है. क्यों नहीं ऐसी दम तोड़ती प्रथाओं का गला घोंट दिया जाता. महानगरों में होगा लचीलापन बाकी सारा हिंदूस्तान एक ही सुर में गा रहा है. लिबास बदला है पर मन नहीं.

सीपी ख्यालों में मीलों आगे निकल गई. उसके मन में घमासान मचा था. माना कि बहारों के दिन गुजर गए पर क्या दोस्ती, प्रेम, सहयोग और विश्वास बांटने के लिए कोई रिश्ता नहीं गढ़ा जा सकता? उसने प्राणों की सीपी में बरसो से छिपा रखा था वो मोती निकाला और अनुरुप का नंबर डायल किया-उधर से आवाज आई, 'हैलो! आप कौन?'

'जी मैं सीपी-पंडितजी, क्यों न हम शादी कर लें!' सीपी ने कहा.

सबूत

श्री अशोक सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक, जबलपुर

उस रात घाटी में सारी रात बर्फ गिरती रही। सुबह की आमद का काफी वक्त भी बर्फबारी के हिस्से में आ गया था। गर्म कहवे के घूट जब हलक से नीचे गए तो हाथ में थामे अखबार की सुर्खियां भी कुनकुनी लगने लगी। अखबार क्या!अब तो हादसों का आइना लगने लगा है। खबरों के मुंह पर इंसानी खून के निशान लगे हुए थे। लगा कि अभी ऊबकाई आ जाएगी। अचानक तीसरे पेज की खबर ने उसकी रही सही सर्दी भी दूर कर दी और वो बड़बड़ाने लगा। गलत, सरासर गलत, कैलाश को मैं अच्छे से जानता हूं।

आशीष की घाटी में पोस्टिंग हुए आज एक महीना हो चुका था। अब वो चप्पे-चप्पे से वाकिफ था। छुटपुट घटनाओं के अलावा अभी तक तो शांति थी। कल रात मेजर रंजीत के इलाके में कुछ आतंकी पकड़े गए थे, कुछ जवान शहीद हुए थे। एक आतंकी पकड़ा गया था- कैलाश। यह खबर आशीष के गले से नीचे नही उतर रही थी और उसने मौके वारदात पर पहुँचने की ठान ली और मेजर रंजीत से भी मिलने की इच्छा हुई। कहवे के घूट अब कड़वे लग रहे थे। ओहो! आइए आशीष साहब! कैसे हैं? कहिए कैसे याद आ गई हम खाकसारों की? गलत! रंजीत साहब! खाकसार नही, जा निसार! हां हां, सही कहा आपने जनाब! किसी न किसी गोली पर अपना भी नाम लिखा है। मां की गोद में लोरी सुने हुए तो बरसो हो गए। अब तो घाटी की गोद में गोलियों और बारूदों की लोरियां सुनते हैं। मेजर रंजीत ने एक ठंढ़ी सांस भरकर कहा- न जाने किसकी नजर लग गई इन वादियों को। खैर, आप कहिए! कैसे आना हुआ?

आशीष ने कैलाश का जिक्र किया कि वह कैलाश को अच्छे से जानता है और कॉलेज के जमाने का मित्र है। वह अनाथ है और उसकी परवरिश एक ईसाई ने की है जो रिश्ते में उसके दादा लगते हैं। महेन्द्र चौधरी ने !मुझे लगता है कि आपने शक के बिनाह पर उसे गलत गिरफ्तार किया है। नही, आशीष साहब! वह मुठभेड़ के समय वही बेहोश मिला और उसके पास ही गन मिली है। सिर्फ उस जगह मिलने भर से? पास रखी गन से, हो सकता है कि उसे बेहोश करके लाया गया हो गन के साथ कोई और रंग देने के लिए। मुझे लगता है वह निर्दोष है। आशीष साहब! सिर्फ निर्दोष लगने भर से हम उसे नही छोड़ सकते। आपके पास क्या सबूत है उसके निर्दोष होने का? ये भटके हुए लोग हैं। आशीष निरूत्तर हो गया। खैर, आशीष के कहने पर कैलाश को उसके सामने लाया गया। कोमल रंग और सूरत का कैलाश उसके सामने बेबस सा खड़ा था और आशीष को देखकर उसकी आंखों में एक गुंजाइश सी तैर रही थी। उसके हाथ पीछे से बंधे हुए थे और पैरों में भी सांकल बंधी थी। लीजिए आशीष साहब! यह है आपके कॉलेज के जमाने का गुमराह मित्र। अभी रंजीत का जुमला पूरा भी नही हुआ था कि कई गोलियां उसके कानो के पास से गुजर गई। उनकी चौकी पर आतंकी हमला हो चुका था। आशीष और रंजीत पास पास आ गए थे और दोनो ही मिलकर दुश्मन से लोहा ले रहे थे। इस बात से बेखबर कि उनके पीछे एक आतंकी पहुंच चुका है। इससे पहले कि वे पलटें, आतंकी ने उन पर गोलियां बरसा दी। पर एक भी गोली उन्हें लगी नहीं क्योंकि कैलाश इन दोनो के सामने आ गया था और सारी गोलियां खुद पर झेल चुका था और इतने में आशीष ने उस आतंकी को भून डाला। पांच आतंकी मारे गए। एक घंटा चली लड़ाई में सफेद बर्फ पर की जगह खून के खामोश दहशत का अफसाना लिखा हुआ था। मेजर रंजीत ने आशीष के बहादुरी की तारीफ की। नजदीक पड़े कैलाश की लाश को देखकर दोनो सोच में पड़ गए। कैलाश के लाश की तरफ इशारा करके आशीष ने मेजर रंजीत से कहा- आप इससे निर्दोष होने का सबूत मांग रहे थे न? ये है सबूत! मेजर रंजीत हक्का बक्का खड़ा रह गया और अपने सिर की टोपी उतार कर ठंढी आह भरकर कैलाश को देखता रह गया जिसकी जेब से उसके मां की तस्वीर बाहर आ गई थी।

बर्फ के फूल

श्री जयशंकर कुमार सिंह
अवर श्रेणी लिपिक, कोलकाता

रेलवे स्टेशन पर यात्रियों से ठसाठस भरी ट्रेन स्टेशन पर धीरे धीरे रूक गई। कुली सामान उठाने के लिए दौड़ लगा रहे थे। गाड़ी वाले अपने भाड़े के लिए यात्रियों से पूछ रहे थे। उतरने वाले यात्रियों की नजरें अपने परिचितों को ढूंढ़ रही थी। इसी भीड़ में एक भारतीय सेना का जवान भी इंडियन आर्मी की ड्रेस पहने हुए स्टेशन पर उतरा। अपने दोनो भारी बैग को अपने मजबूत कंधे पर खुद ही उठाकर स्टेशन के बाहर टैक्सी स्टैंड की ओर चल पड़ा।

आज जय सिंह राजपूत पूरे दो साल बाद अपने घर लौट रहा था। जब से उसकी पोस्टिंग सियाचीन ग्लेशियर भारत-पाक नियंत्रण रेखा के पास हुई वह बहुत कम ही छुट्टी पर अपने घर आ पाता था। कनिष्ठ आयुक्त अफसर (जेसीओ) की प्रोन्नति मिलने के बाद ही उसकी पोस्टिंग भारत-पाक नियंत्रण रेखा सियाचीन में हुई थी। आज तीन साल हो चुके हैं उसकी पोस्टिंग हुए। एक बहादुर, कर्तव्यनिष्ठ एवं इमानदार छवि वाला सैनिक था 'जय सिंह राजपूत'।

ट्रेन पर भी बैठे-बैठे जय सिंह अपनी पत्नी कविता और अपनी प्यारी सी बेटी काजल के बारे में ही सोच रहा था। वह अपनी बेटी को सबसे ज्यादा प्यार करता था। अपने बटुए (पर्स) में भी वह अपनी बेटी की तस्वीर लगाए था। जब भी बर्फीली तुफानी हवाओं में उसे सफेद बेरंग का सुनापन महसूस होता तो वह अपने बटुए से अपनी बेटी की फोटो निकालकर घंटो निहारता और बातें करता था। अपनी बेटी की तोतली बोली को याद कर वह लोट-पोट हो जाता और कभी-कभी टेपरिकार्डर में भी बेटी और पूरे परिवार के आवाज की रिकार्डिंग सुनकर बर्फीली हवाओं में अपनी मुस्कान बिखेरता था। अपने साथियों के साथ भी वह प्यारी-नन्हीं बेटी की ही बातें करता और हंसा करता।

पूरे घर में आज चहल-पहल है। जय के बाबूजी सुबह-सुबह स्नान ध्यान करके बरामदे में बैठ अपने बेटे के आने का इंतजार कर रहें हैं। मां अभी भी पूजा की घंटी बजा रही है। पत्नी कविता सुबह से ही जय के पसंद के व्यंजन बना रही है और सबसे ज्यादा खुश है तो वह है 'प्यारी सी काजल' जो नये-नये कपड़े पहन चारो ओर अपने छोटी सी पैरों की पायल की आवाज को बिखेर रही है। पिछले 15 दिनों से अपने पापा के आने की तैयारी कर रही थी काजल। उसने अपने द्वारा बनाए गए सभी चित्रों को सहेज कर एक जगह रखा है और उसके बनाए गए ज्यादातर टेढ़े-मेढे चित्रों में तीन लोग हैं- उसकी मम्मी, उसके पापा और वो खुद जो पापा के हाथ को पकड़े हुए है। काजल ने अपने स्कूल का नोटबुक भी तैयार कर रखा था और हिंदी और अंग्रेजी की दो छोटी-छोटी कविताएं भी याद कर ली थी। पूरे घर में काजल छम-छम करके इधर-उधर दौड़ लगाती फिर रही थी और साथ-साथ सबको बता भी रही थी 'पापा आएंगे, आज पापा आएंगे'

पूरे तीन दिनों के सफर के बाद स्टेशन पहुंचकर जय बाहर ऑटो स्टैंड से घर जाने के लिए ऑटो रिक्शा पर बैठा। ऑटो रिक्शा उसके घर के ओर चल पड़ी। जैसे-जैसे ऑटो रिक्शा उसके घर की ओर बढ़ता जा रहा था, जय के चेहरे पर एक अजीब सी चमक उभरती जा रही थी। रास्ते में पड़ने वाला हर पेड़, हर मंदिर और हर इमारत उसके पहचान की थी और सभी चीजों को निहारता हुआ वह आगे बढ़ रहा था। जय अभी रास्ते में ही थी किंतु उसका मन उससे पहले ही घर पहुंच चुका था। पूरे बीस मिनट ऑटो रिक्शा में गुजारने के बाद वह अपने घर के पास अपना सामान उतार रहा था। हालांकि ये बीस मिनट उसे तीन दिनों के सफर से भी लंबा लगा था। जैसे ही ऑटोरिक्शा वाले को पैसे देकर जय पीछे घर की तरफ मुड़ा, सामने उसके पिताजी मुस्कराते हुए खड़े थे। जय लपक कर अपने बाबूजी का चरण स्पर्श किया और फिर उसके बाबूजी ने उसे सीने से लगा लिया और घर के अंदर ले गए। अंदर पहुंचते ही जय ने मां को प्रणाम किया। पत्नी कविता भी जय को देख नजरें झुकाकर अपनी खुशी का इजहार कर रही थी।

परंतु जय की नजरें अभी भी किसी और को ढूंढ रही थी। फिर कविता जय के मन को भांपते हुए पीछे गार्डेन में आवाज लगाई 'काजू, पापा आ गए'। फिर क्या, काजल के घर के अंदर पहुंचने के पहले ही जय उसे गार्डेन में अपनी गोद में उठाकर चूम रहा था। काजल बस हंसे जा रही थी। काफी देर तक जय ने काजल को गोद में लेकर प्यार किया फिर उसे गोद में ही लेकर घर के अंदर आकर उससे बातें करने लगा। काजल भी अपनी मीठी-मीठी जुबां से प्यारी-प्यारी बातें पापा को बता रही थी। अगले पांच मिनट में ही काजल ने अपने द्वारा बनाए गए सभी चित्रों को पापा के सामने रख दिया। दो-तीन कविता भी सुना डाली और सारे चित्रों के बारे में भी इन्ही पांच मिनटों में बता दिया। उसके बाद काजल ने अपने पापा से पूछा 'पापा आप मेरे लिए क्या लाए हो सफेद पहाड़ों पर से'। जय मुस्कराया और फिर अपने बैग से एक छोटा सा डब्बा निकालकर काजल के सामने रख दिया जो छोटे-छोटे पीले फूल से भरी हुई थी। हालांकि सारी फूलें सुखी हुई थी परंतु उसके पीले-पीले पंखुरियों में अभी भी चमक थी और काजल ने जैसे ही उस डब्बे को खोला, पूरा कमरा एक धीमी खुशबू से महक उठा। काजल ने फूलों को देखकर पूछा 'पापा ये क्या है?' जय ने मुस्कुराकर कहा सफेद पहाड़ों पर मुझे एक सफेद परी हर रोज तुम्हारे लिए ये फूल देती है। फिर काजल कभी परियों के बारे में पूछती, कभी आश्चर्य भरी नजरों से फूलों को देखती। ये वो फूल थे जो जय हमेशा अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अपनी बेटी को याद करते हुए बर्फ से ढंकी चट्टानों के दरार में होने वाले एक विशेष प्रकार के पौधे से तोड़ा करता था।

दो महीने की छुट्टी कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। आज सुबह से ही घर में सन्नाटा पसरा हुआ था। शाम को छः बजे जय के वापसी की ट्रेन है। जय सुबह से ही अपनी बेटी को आज और दिनों से ज्यादा प्यार कर रहा है, मानो वह अगले दो सालों के प्यार की भरपाई आज ही कर ले। घर छोड़ते समय जय का मन काफी भारी था, आंखों में आंसुओं के सैलाब को बड़ी मुश्किल से रोककर आगे बढ़ रहा था। जब काजल ने जय की आंखों देखते हुए मुस्कुरा कर बोला "बाय बाय पापा, जल्दी आना'। तो मानो उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ये शब्द अब कई युगो के बाद ही सुनने को मिलेंगे। ऑटो के घर से छूटते ही उसने अपने अंदर के सैलाब को बहने छोड़ दिया। तबतक, जबतक उसका मन कुछ हलका ना हो गया।

अगले दिन वह ट्रेन से दिल्ली पहुंच चुका था। फिर वहां से अगले एक दिन की यात्रा कर कश्मीर पहुंचा और फिर अगले दिन सेना के हेलिकॉप्टर से सियाचीन के निचले हिस्से पर बनी सैन्य छावनी में पहुंचा। तीन दिनों की यात्रा के बाद वह फिर से बर्फीली वादियों के बीच था और अगले तीन दिनों तक की दुर्गम यात्रा के बाद वह हजारो फीट ऊपर सियाचीन ग्लेशियर पहुंच पाएगा।

समुद्र तल से लगभग 18,000 फुट की ऊचाई पर स्थित सियाचीन एक ऐसी दुर्गम जगह है जहां इंसानों का साधारण रुप से जीवित रह पाना नामुमकिन है। यहां का तापमान 0 से -50 डिग्री सेंटीग्रेड तक नीचे रहता है। इतनी भीषण ठंढ़ की अगर शरीर का कोई अंग कुछ देर बाहर रहे तो वह अंग गलकर ही गिर जाए। यहां पाकिस्तान और चीन दोनो देश की सीमा भारत से मिलती है। यहां सैनिक भीषण ठंढ़ में भी चौकन्ने रहते हैं तथा पाक और चीन की घुसपैठ को रोकते हैं। सियाचीन में हिंदुस्तान के 10 हजार सैनिक तैनात हैं। तीन-तीन हजार जवानों के पलटन की तैनाती तीन-तीन माह के लिए की जाती है। कई बार बर्फ के नीचे ही सैनिक दफन हो जाते हैं और उनकी कब्र बर्फ में ही बन जाती है। सियाचीन ग्लेशियर में न ही फोन की सुविधा है और न ही मोबाइल सेवा। अतः सैनिकों के मौत की खबर भी तुरंत नही मिल पाती। फोन करने के लिए 6000 फीट नीचे बस चौकी पर आना पड़ता है जो काफी जोखिम भरा है। खाने की रसद भी खच्चरों पर लादकर हफ्तो-हफ्तो में आता है क्योंकि यहां तक कोई गाड़ी नही पहुच सकती। सिर्फ सेना के विशेष हेलिकॉप्टर द्वारा पहुंचा जा सकता है।

सैनिकों के जान गवांने की खबर भी सैनिकों के परिजनों तक चिठ्ठी से पहुंचती है। इसका खाका हर भाषा में तैयार रहता है क्योंकि सैनिकों के परिजनों की भाषा अलग-अलग रहती है। बस सैनिकों का नाम और नंबर खाली रहता है, जिसे सैनिकों के मृत्यु के पश्चात रिक्त स्थान में भर दिया जाता है। बहुत कम ही पलटन ऐसी होती है जिसमें उतने ही सैनिक वापस लौट आएं जितने सियाचीन पर मोर्चा संभालने पहुंचते हैं। यहां पांच-पांच की संख्या में बर्फ पर कमर में रस्सी बांधकर सैनिक गश्त करते हैं ताकि कोई एक सैनिक अगर खाई में गिर जाए तो बाकी उसे बचा सकें। पर कई बार ये पांचों ही बर्फ में समा जाते हैं और इनके बर्फ में समाने की खबर जब तक मिलती है, तब तक इनके ऊपर कई फीट मोटी बर्फ की चादर जम चुकी होती है। जय भी इन्ही बर्फीली पहाड़ो पर स्थित अपने बंकर में अन्य जवानों के साथ मुस्तैदी से सरहद की रक्षा करता। सभी सैनिक एक परिवार की भांति रहते और सब अपने-अपने किस्से एक दूसरे को सुनाकर मनोरंजन करते। जय ने यहां अपना पहाड़ की एक ऊंची चट्टान को तथा उस पर खिलने वाले छोटे-छोटे फूलों को बनाया था। जब भी उसे अकेलापन महसूस होता, वह उस चट्टान पर बैठ पौधे और फूलों से बाते करता तथा अपनी बेटी की शैतानियों के बारे में सुनाता। वो आंखे बंद कर फूलों को ऐसे स्पर्श करता जैसे वह अपने बेटी के गालों को सहला रहा हो। फिर कुछ फूलों को तोड़कर एक छोटी डब्बी में रखता और फूलों से कहता चलो मैं तुम्हें अपनी नन्ही परी से मिलवाऊंगा। यह काम अब जय की दिनचर्या बन चुकी थी।

दिसंबर का महीना, हाड कपाने वाली ठंढ और तापमान भी शून्य से पचास डिग्री सेंटीग्रेड नीचे था। इतनी ठंढक की इंसान का रक्त मिनटों में जम जाए और तुरंत उसकी मौत हो जाए। इस सर्द वाली रात में जय उसी चट्टान पर बैठ अपनी ड्यूटी कर रहा था। आज मौसम में अन्य दिनों से कुछ ज्यादा ठंढ़ थी और हवा भी काफी जोर-जोर से चल रही थी। रेडियों ट्रांसमीटर पर चेतावनी भी दी गई थी कि शायद आज रात तूफान भी आ सकता है। जय से दूर बैठे बंकर के अन्य जवान भी मौसम को लेकर चिंतित हो रहे थे एवं ठंढ से बचने के लिए गर्म सूप और शराब पी रहे थे। बीच-बीच में ट्रेंड कुतों को भी मांस के टुकड़े खिला रहे थे। पर शायद उन्हें पता न था कि आज उनके जिंदगी और भाग्य का फैसला होने वाला है।

अचानक दूर से तर्र-तर्र करती हुई एक तेज आवाज सुनाई पड़ने लगी जैसे बहुत सारे बर्फ की चट्टाने आपस में टकराती हुई उनके तरफ बहुत तेजी से बढ़ रही हो। अचानक हुए इस कुदरती आफत से उनके बीच उथल-पुथल मच गई, परंतु कोई कुछ समझ पाता और संभल पाता, एक मोटी बर्फ की चादर उन्हें ढ़कते हुए आगे निकल गई। कोई भी अपनी जगह से हिल न सका। ये एक प्रकार का हिम भूस्खलन था, जिसमें बर्फ की चट्टाने टूटकर नीचे ढ़लान की ओर बढ़ती चली जाती हैं।

कुछ ही मिनटो में एक सन्नाटा सा पसर गया। वहां के बंकर, सभी सैनिक, प्रशिक्षित कुत्ते, सब कुछ बर्फ की चादर में समा चुका था। दसों जवान बर्फ के नीचे जिंदा ही दफन हो चुके थे और धीरे-धीरे अपने जीने की उम्मीद खो रहे थे। उनके नसों में रक्त जमने लगा था और अपनी मौत के करीब जा रहे थे। अंत समय के ठीक पहले उनकी आंखों में न तो मौत का डर था और ना ही मरने का गम। उनकी आंखों में था तो बस अपनों से बिछड़ने का दर्द। बर्फ के नीचे ही ताबड़तोड़ ठंढ के बीच सब बस अपनों को याद कर रहे थे। धीरे-धीरे एक-एक करके उनकी आत्मा बर्फ की चादरों में विलीन होती चली गई।

जय, जो तुफान से ठीक पहले उस चट्टान पर बैठ उन फूलों को निहारते हुए अपनी बेटी को याद कर रहा था, वो भी अपनी आंखों के सामने अंधेरा होते हुए महसूस कर रहा था। परंतु मरने के पहले उसकी आंखों में जो चित्र उभर रही थी, वो न तो जय के माता-पिता थे, न उसकी पत्नी कविता थी, न ही उसके सगे-संबंधी। वो थी तो केवल और केवल उसकी नन्ही परी काजल की छाया। वो हिल-डुल तो नही सकता था, आंखे भी शायद नही खोल पा रहा था पर वह भगवान से सिर्फ यही कहना चाह रहा था कि अभी तो उसने अपनी नन्ही सी प्यारी बेटी को ठीक से गोद में खिलाया भी नही। अभी तो उसकी आंखों ने बेटी के लिए सपने देखने शुरू ही किये थे। फिर क्यों उसे अपनी प्यारी सी बेटी को छोड़कर जाना पड़ रहा है? उसकी सांसे जमने लगी थी। मस्तिष्क भी सुसुप्त अवस्था में जा रहा था। दिमाग ने सोचना बंद कर दिया था। परंतु जिंदगी के आखिरी क्षण तक उसके मन में यही शब्द फूट रहे थे- "सॉरी बेटा, मुझे माफ कर देना, पापा को जाने की इच्छा न थी पर शायद ईश्वर की ऐसी ही मर्जी है। फिर अपनी पूर्णतः शांति से पहले उसने मन ही मन ईश्वर से कहा-प्रभु मेरी बेटी का ख्याल रखना। अब शायद बर्फ के नीचे पूर्ण रुपेन शांति छा गई थी।'

सुबह के सात बजे, जय के घर पर गावं के ही पास वाले घर का व्यक्ति 'मधुर' जो जय का मित्र था, हांफता हुआ आया और जय के पिताजी से बोला "चाचा, जल्दी से टीवी चालू कीजिए। सियाचीन में कल बर्फीला तूफान और भूकंप आया था। मुख्य समाचार में 10 जवानों के लापता होने की खबर दी जा रही थी।'

जैसी ही टीवी पर 'जय सिंह राजपूत' के नाम की भी लापता होने वालों में घोषणा हुई, पूरे परिवार में एक दहला देने वाली चीत्कार फैल गई। पूरे गांव के लोग घर पर इकट्ठा हो चुके थे। कुछ लोग ढाढस बंधा रहे थे कि अभी तो लापता होने की खबर है, कुछ अनहोनी नही हुई होगी। कविता एक कोने में स्तब्ध सी मूरत बन खड़ी थी। काजल भी घर में इस तरह की अफरा-तफरी का माहौल देख रो रही थी।

अगले कुछ ही घंटों के अंदर कई सारे न्यूज चैनलस वालों की भीड़ गांव में जमा होने लगी। न्यूज वाले गांव के लोगो से जय के बारे में बेतहाशा सवाल पूछे जा रहे थे। इस भाग-दौड़ को देख गावं के छोटे-छोटे बच्चे जरूर खुश हो रहे थे। उन्हे लग रहा था जैसे गांव में कोई मेला लगा हो। बच्चे बस इधर से उधर दौड़-भाग मचा रहे थे। टीवी पर सुबह 11 बजे फिर से न्यूज आया कि लापता जवानों को बर्फ के नीचे खोज लिया गया है। बर्फ की खुदाई चल रही है और उन्हें निकालने का काम किया जा रहा है। चूंकि सियाचीन में घटनास्थल तक खुदाई करने की मशीने नही जा सकती थी, अतः कुदाल-फावड़े से ही खुदाई का काम चल रहा था। इधर मीडिया वाले लगातार टीवी पर लापता सैनिकों के परिवार वालों के शोक एवं उनके अपनो से मिलने की बौखलाहट और बेचैनी को दिखा रहे थे। दोपहर 02 बजे टीवी पर अगली न्यूज आई कि भारत के प्रधानमंत्री ने आदेश दिया है कि सभी लापता जवानों के परिवार वालों को जल्द से जल्द घटना स्थल पर ही पहुंचाया जाए। अगले कुछ ही घंटो में जय के गांव में सेना का एक हेलिकॉप्टर उतरा। गांव के बच्चे से बूढ़े तक में हेलिकॉप्टर को नजदीक से देखने की होड़ लगी थी। बच्चे तो हेलिकॉप्टर को छूने के लिए अत्यंत लालायित हो रहे थे। गांव में अभी जय के लापता होने से ज्यादा सेना के हेलिकॉप्टर की चर्चा हो रही थी। एक घंटे के अंदर ही जय के माता-पिता, पत्नी कविता और बेटी काजल को लेकर सेना का हेलिकॉप्टर सियाचीन के लिए रवाना हुआ। पूरा गांव शोकाकुल होने के साथ-साथ भौचक्का भी था।

अगली सुबह तक सभी जवानों के परिवार के लोगों को घटना स्थल के समीप लाया जा चुका था। पिछले 24 घंटे से भी ज्यादा समय से खुदाई का काम चल रहा था। सभी लोग सैनिकों के जीवित होने की कामना कर रहे थे। दूसरे दिन तक भी खुदाई का काम जोर-शोर से चल रहा था। दूसरे दिन अचानक ही खुदाई करने वाले लोगो में एक हलचल सी हुई। सभी अचानक ही फुर्ती से काम करने लगे। कविता को महसूस हो गया कि शायद सभी लोग बर्फ के नीचे मिल चुके हैं। फिर मन में एक धीमी आस लिए हुए वो खुदाई स्थल की तरफ कांपते मन से चल पड़ी। परंतु किस्मत का खेल कुछ और ही था। 10 में से 09 जवानों के ही शव मिले, उसमें 'जय सिंह राजपूत' का शरीर नही था। जल्दी से डॉक्टरों का एक दल उन सभी सैनिकों के नब्ज, सासें और धड़कन की जांच करने लगा किंतु सब व्यर्थ। एक-एक करके सभी 09 जवानों को डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया। वहां उन जवानों

के परिवार के लोग, उनके बच्चे, उनकी पत्नियों के रूदन से बर्फीली वादियां गूंज रही थी। पूरे हिंदुस्तान के लोग भी दो दिनों से न्यूज में ये सब देखकर सभी के सुरक्षित होने की प्रार्थना कर रहे थे। किंतु सबकी मौत की खबर सुनकर और टीवी पर उनके परिवार वालों का रोना देखकर सभी की आंखें नम हो गई थी।

जवानों के शवों को उनके परिवार वालो के साथ सेना के हेलिकॉप्टर से उनके घरों पर भेजा जा चुका था। अब केवल एक ही सैनिक की खोज पूरे जोर-शोर से चल रही थी। वो था 'जय सिंह राजपूत'। रात-दिन खोज का काम चल रहा था। पूरे हिंदुस्तान की जनता अब सिर्फ 'जय सिंह राजपूत' के सलामती और उसके मिलने की दुआ कर रही थी। आज पूरे पांच दिन बीत चुके हैं, अब भी बर्फ में खुदाई का काम चल रहा था। परंतु अब बस निराशा ही बची थी। आज हल्की धूप भी खिली हुई है। सेना के लोग जय के माता-पिता, पत्नी और बेटी का ख्याल भी रख रहे हैं और साथ-साथ उन्हें ढ़ाढस भी बंधा रहे हैं।

जय की बेटी रो रही है। एक सेना के जवान ने उसे गोद लेकर थोड़ा दुलार किया तथा पुचकारने लगा। कुछ देर बाद जब काजल थोड़ी शांत हुई तब उसने उस जवान से कहा कि मुझे पापा से मिलना है, वो कब आएंगे। सेना का जवान उसे गोद में लेकर खुदाई स्थल की तरफ ले गया और कहा- "पापा यही कही छुप गये हैं तुमसे नाराज होकर। वो मिल ही नही रहे, तुम आवाज दो शायद तुम्हारे पापा आ जाए।' काजल ने धीरे से कहा "पापा मैं तो आ गई अब आप भी जल्दी से आओ' ये शब्द सुनकर उस जवान की आंखो से आंसू टपकने लगा। वह जवान काजल को गोद से उतार अपने आंसू छिपाने की कोशिश करने लगा। काजल इधर-उधर बर्फ के उपर खुदाई वाले स्थान के आस-पास टहलने लगी। अचानक काजल जोर से चिल्लाती है "पापा' और एक ओर दौड़ पड़ी। सभी की नजरें काजल की तरफ भौचक्का सी मुड़ गई। कविता दौड़ कर काजल के पास पहुंची। पीछे-पीछे सेना के दो अफसर और मिडिया वाले कैमरा लेकर दौड़ पड़े। कविता ने काजल से पूछा-"क्या हुआ बेटा, कहां हैं पापा।' काजल ने बड़ी मासूमियत से कहा- "मम्मा, पापा तो इस पत्थर के नीचे छुपे हैं और सब लोग उसे उधर ढूंढ रहे हैं।

कविता थोड़ी हक्की-बक्की थी। उसे पता ही नही चल पा रहा था कि काजल कैसे ये सब बातें बोल रही है। फिर उसने पूछा 'बेटा तुम्हे कैसे पता कि पापा यहां छुपे हैं'। काजल ने बड़े प्यार से कहा 'मम्मा, इन फूलों को देखो जो इस पत्थर पर खिले हैं। ये वही फूल हैं जो पापा को परियां मेरे लिए देती हैं और ये फूल तो सिर्फ इसी बड़े पत्थर पर है और कहीं भी नही खिले हैं'। कविता भी उन फूलों को पहचानने की कोशिश करने लगी और पीछे खड़े दोनो अफसर की आंखों में देखने लगी। दोनो अफसर ने पहले एक-दूसरे का चेहरा देखा, मानो यकीन करने की कोशिश कर रहे हों। फिर बड़ी फुर्ती से खुदाई वाली जगह की ओर दौड़ पड़े। दोनो अफसर ने खुदाई कर रहे सैनिकों के हाथ से कुदाल-फावड़ा लिया और वापस दौड़ पड़े उसी चट्टान की तरफ। दोनो खुद ही उस चट्टान के नीचे की बर्फ की खुदाई करने लगे। अचानक हुए इस बदलाव से सभी की आंखे आश्चर्य से फैल गई। मिडियाकर्मी और सेना के जवानों की भीड़ भी उसी चट्टान की ओर दौड़ पड़ी। टीवी चैनलों पर तुरंत ये खबर भेज दी गई कि जूनियर कमांडेट ऑफिसर "जय सिंह राजपूत' के शरीर को उसकी बेटी के द्वारा बताए जगह पर खोजा जा रहा है। आज पूरे भारत में करोड़ो हिंदुस्तानियों के दिलों में गम और उस बेटी का पिता के लिए प्यार को देख आंखे नम थी। अगले बीस घंटे की खुदाई के पश्चात बर्फ से 35 फीट नीचे जय का शरीर दिखाई पड़ने लगा। खुदाई करने वाले सैनिक और तेजी से जय तक पहुंचने की कोशिश करने लगे। कुछ ही देर पश्चात जय के शरीर को बाहर निकाल लिया गया। शरीर पूरी तरह से जमकर पत्थर के समान हो चुका था, दोनो हाथों की मुट्ठियां कसकर भीची हुई थी। डाक्टर उसके शरीर को ढीला करने की कोशिश कर रहे थे। फिर डॉक्टर फौरन जय के नब्ज और धड़कन की जांच करने लगे। नब्ज का कुछ भी पता नही चल रहा था। वहां मौजूद सभी लोगो को पता था कि ईश्वर का कोई चमत्कार ही जय को सलामत रख पाएगा। अचानक डॉक्टर तेज आवाज में चीखते हुए बोला- "ऑफिसर, जल्दी इसे हॉस्पीटल ले चलो, इसकी धड़कन अभी भी चल रही है। पूरे माहौल में एक फुर्ती आ गई। कुछ ही घंटो में जय को दिल्ली के एम्स हॉस्पीटल में लाया जा चुका था। हॉस्पीटल के बाहर हजारो नही बल्कि लाखों लोगों की भीड़ जमा हो चुकी थी। पूरे दिल्ली शहर के सड़कों पर जन सैलाब उमड़ पड़ा था। पूरा शहर मानो थम सा गया हो। हिंदुस्तान के प्रधानंत्री समेत कई बड़े नेता, अधिकारी भी हास्पीटल पहुंच चुके थे। डॉक्टरों का एक पूरा समूह जय के सांसो को लाने के लिए जद्दोजहद कर रहा था। फिलहाल डॉक्टर ने इतना ही बताया कि इसका मस्तिष्क कोमा में जा चुका है तथा उसका फेफड़ा बुरी तरह से संक्रमित हो चुका है।

हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री जय की पत्नी और जय के माता-पिता को ढ़ाढस बढ़ा रहे थे और जय की बेटी को गोद में लेकर उसे दुलार कर रहे थे। काजल ने प्रधानमंत्री जी से कहा - अंकल, आप मेरी एक विश पूरी करोगे? प्रधानमंत्री जी ने बड़े प्यार से कहा- हां बेटी, तुम्हे क्या चाहिए बोलो! काजल ने कहा- "अंकल, मुझे एक बार पापा के पास ले चलो ना, प्लीज, मुझे उनसे मिलना है।' प्रधानमंत्री जी ने तुरंत एक सीनियर डॉक्टर को बुलाकर बच्ची की ईच्छा के बारे में बताया। डॉक्टर ने कुछ देर सोचते हुए फिर हामी भर दी और कहा शायद परिवार वालों की आवाजें सुनकर जय के मस्तिष्क में कुछ हलचल हो। प्रधानमंत्री, जय के माता-पिता, पत्नी एवं बेटी सभी डॉक्टर के साथ जय को देखने के लिए चल पड़े। जय के माता-पिता बेटे को इस हालत में देख बस रोये जा रहे थे और इस दिन के लिए ईश्वर को कोस रहे थे। कविता भी एक कोने में खड़ी होकर दूर से ही जय को अपलक निहार रही थी। काजल धीरे से प्रधानंत्री के गोद से उतरकर अपने पापा की ओर बढ़ चली। ये शायद जय का बेटी के लिए प्यार ही था जो उसे मौत के पास पूरी तरह जाने से रोक रही थी। शरीर, मस्तिष्क, सबके सब शांत हो चुके थे, किंतु धड़कन अभी भी चल रही थी। 6 दिनों तक बर्फ में दबे रहने के बाद भी इंसान के धड़कन का चलना ये बता रहा था कि वो इंसान अपनी बेटी को किस हद तक प्यार करता था।

काजल अपने पापा के निकट पहुंचकर उसके बंद मुट्ठियों को पकड़कर कुछ देर उसे देखते रही। फिर कहा- "पापा, मैं तो आ गई आपके पास अब तुम भी आओ ना, आपने तो कहा था कि आप मुझसे कभी नाराज नही होंगे, फिर अब तक आप चुप क्यों हैं? यह सुन वहां मौजूद सभी डॉक्टर समेत हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री भी अपने आसुओं को आंखों में कैद न कर सके। फिर काजल जय के बंद मुट्ठियों को अपने दोनो नन्हे हाथों में पकड़कर रोने लगी।

डॉक्टर को मशीन पर जय के शरीर में कोई भी हलचल दिखाई न पड़ा।

आज इंसानो ने भले ही बहुत तरक्की कर ली हो, बहुत से मशीनों का ईजाद कर लिया हो परंतु आज भी इंसान ऐसी मशीन बनाने में कामयाबी हासिल नही कर सका है जो मनुष्य के दिमाग में एवं मनुष्य के मन में चल रही बातों को पढ़ सके। हम आम इंसानों के लिए जय का मस्तिष्क शून्य में जा चुका था किंतु जय के मस्तिष्क एवं मन में उस बर्फीली तुफान से भी भयंकर तूफान चल रहा था। जय को अपनी प्यारी बेटी का पास होना महसूस हो रहा था, उसे उसकी आवाज भी सुनाई पड़ रही थी, परंतु उसके शरीर के किसी भी अंग में प्रतिउत्तर देने की क्षमता खत्म हो चुकी थी। जय मन में भगवान को शुक्रिया कह रहा था और कह रहा था- "धन्यवाद प्रभु मेरी आखिरी इच्छा पूरी करने के लिए कि मैं अपने बेटी के हाथों में ही अपने प्राण का त्याग कर सकूं और जाने से पहले उसे अलविदा कह सकूं।

अचानक उसी समय मशीनों से एक लंबी बीप की आवाज आनी शुरू हो गई जिसे डॉक्टर ने सुनकर प्रधानमंत्री की ओर मुख करके धीमे स्वर में कहा- आई एम सॉरी सर, हम लोग उसे बचा ना सके।' वहां मौजूद कविता चीत्कार कर रोने लगी। जय के माता-पिता कुछ बोलने और कुछ सुनने की स्थिति में न थे। काजल भी जोर-जोर से रोने लगी। एक डॉक्टर जैसे ही जय के चेहरे को ढ़कने के लिए आगे बढ़ा, जय के चेहरे को देख डॉक्टर की आंखे आश्चर्य से फैल गई क्योंकि जय के दोनों आंखो से आंसू निकले हुए थे। डॉक्टर भी समझ ना सके कि कैसे कोमा में गया हुआ व्यक्ति अपनी बेटी के स्पर्श को समझ सका और आंसूओं से ही अपनी बेटी को जबाब दे गया था।

काजल अब तक पिता के बंद मुटठियों को पकड़कर 'उठो ना पापा- उठो ना पाप' कहकर रोये जा रही थी, पर अब सब कुछ शायद शांत हो चुका था। धीरे-धीरे जय की बंद मुट्ठियां भी खुल गई और मुट्ठी खुलने के पश्चात वही दो पीले फूल उसकी मुट्ठी से निकलकर उसकी बेटी के पैरो पर जा गिरे। उन फूलों को देखकर काजल रोती हुई उन दो फूलों को उठाने लगी जो शायद उसके पिता की उसको अंतिम भेंट थी या अंतिम अलविदा।

(यह कहानी भारतीय सेना के शहीद जवान लांस नायक हनुमथप्पा एवं उनके 09 साथियों को समर्पित है। जिन सभी की मृत्यु 03 फरवरी 2016 को सियाचीन में हुए हिमस्खलन एवं बर्फीले तूफान में बर्फ में दबकर हो गई थी।)

लेख- सामाजिक व्याधि- दहेज प्रथा

श्री वसीम अहमद
लेखा सदस्य, कोलकाता

आज दुनिया बहुत तेजी से भाग रही है। हम भी दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की कोशिश लगातार कर रहे हैं परंतु फिर भी कहीं-कहीं हमारे कदम थम जाते हैं। आज जहां एक ओर हम चांद एवं अन्य ग्रहों की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर हमारी कतिपय सामाजिक व्याधियों के कारण आज भी हमारे कदम पीछे की ओर जा रहे हैं। ऐसी ही एक भयंकर सामाजिक बीमारी है दहेज-प्रथा। दहेज प्रथा का प्रचलन प्राचीन काल में अत्यंत सहज तौर पर हुआ था। विवाह के अवसर पर कन्या को उसके माता पिता द्वारा दिया जाने वाला उपहार ही प्रकारांतर में दहेज बन गया। धीरे-धीरे स्वेच्छा से कन्या को दिये जाने वाले उपहार या धन-संपति को वर पक्ष ने अपना अधिकार मानना आरंभ किया। तभी से तमाम समस्याओं का सूत्रपात भी होने लगा। आज स्थिति ऐसी है कि दहेज प्रथा के कारण ही समाज में कन्या-भ्रूण हत्या, बाल विवाह, स्त्री शिक्षा पर रोक आदि समस्याएं बढ़-चढ़कर सामने आने लगी है। आशानुरुप दहेज न मिलने के कारण वधु पर अत्याचार, वधु-हत्या, आत्महत्या आदि घटनाएं आए दिन समाचार पत्रों में देखने को मिलती है। ऐसा नही है कि यह समस्या केवल अनपढ़ ग्रामीण लोगों में ही है, बल्कि तथाकथित शिक्षित, अतिशिक्षित एवं सभ्य घरों में भी दहेज-प्रथा का चलन देखने को मिलता है। दहेज जैसी कुप्रथा का ही परिणाम है कि आज भी अधिकांश भारतीय परिवारों में बेटी की अपेक्षा बेटा होने पर अधिक खुशियां मनाई जाती है। परंतु वास्तविकता यह है कि बेटों की अपेक्षा बेटियां स्वभावतः अधिक संवेदनशील होने के कारण घर परिवार का ध्यान अधिक अच्छे से रखती हैं। वह माता-पिता की समस्याओं का हल भी करती हैं, और अपने भाई बहनों की देख-रेख भी। विवाह के बाद वह अपना घर जिस सहजता से त्यागकर एक पराए घर एवं उसके सदस्यों को अपना बना लेती हैं, वह एक पुरूष की कल्पना से परे है। नारी, चाहे वह बेटी हो, बहन हो, पत्नी हो या माता, जिस सहजता से वह अपनी समस्याओं को दूर रखकर अपने घर परिवार को सहेजकर रखती है, वह वास्तव में प्रशंसा योग्य है। परंतु हमारे समाज की विडंबना यह है कि यहां नारी के त्याग, सहनशीलता जैसे महत् गुण भुला दिए जाते हैं और केवल एक निर्जीव पदार्थ से अधिक नहीं माना जाता है।

दहेज-प्रथा जैसे अमानवीय कुप्रथा से जब तक हम उबर नही पाएंगे, तब तक न तो हमारा समाज आगे बढेगा और न ही हमारा राष्ट्र प्रगति कर पाएगा। सरकार अपनी तरफ से इस कुप्रथा के विरूद्ध लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने की पूरी कोशिश कर रही है, परंतु इस क्षेत्र में वास्तविक सफलता तभी मिलेगी जब आम लोगों की मानसिकता में परिवर्तन होगा। बेटियों को बोझ न मानकर उन्हे समुचित शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान कर गौरवान्वित होने वाले अभिभावकगण ही इस स्थिति में परिवर्तन

ला सकते हैं। आम लोगों में इस कुप्रथा के खिलाफ जागरूकरता उत्पन्न होने पर ही विवाह वर पक्ष एवं वधु पक्ष दोनो के लिए आनंददायक होगा। विवाह दो व्यक्तियों का ही नही, दो परिवारों का, दो अलग-अलग संस्कारों का मेल होता है। ऐसी स्थिति में एक पक्ष यदि धनलोभी होगा और दूसरा पक्ष दहेज के दबाव के तले कुचले गए आहत एवं भीरू मानसिकता के होंगे, तो दोनो में समुचित तालमेल निभा पाना कठिन होगा। ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे के प्रति भय, घृणा एवं क्रोध का भाव समाज एवं मानव में तरह-तरह की विकृतियों को जन्म देगी। ऐसी स्थिति से बचने एवं मानव संसाधन की सुरक्षा के लिए आज यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम इस कुप्रथा के दुष्परिणामों से अवगत होते हुए उन्हे दूर करने की दिल से कोशिश करें। तभी एक स्वस्थ समाज एवं शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों के पतन का कारण- पारिवारिक संवाद शून्यता

श्री मनोज कश्यप,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, जयपुर

आज किसी भी 50-55 वर्ष के व्यक्ति से वार्तालाप प्रारंभ करने पर सामान्यतः उसकी पहली पंक्ति 'हमारे जमाने में तो.........................' ही होती है। प्रख्यात कवि श्री हरिवंशराय बच्चन के सुविख्यात काव्य मधुशाला में एक पंक्ति आती है "अब न रहे वो पीने वाले अब न रही वो मधुशाला'। कहने का सार यह है कि प्रत्येक पीढ़ी को नई युवा पीढ़ी में उन सद्गुणों का नितांत अभाव अनुभव होता है जो उनकी पीढी में पाये जाना उनके समय का अपवादहीन सार्वभौमिक सत्य था।

ऐसा नहीं है कि पुरानी पीढ़ी में सभी पुरूष मर्यादा पुरूषोतम थे और स्त्रियां देवियां। अवश्य ही उनके समय में भी समाज के कुछ सदस्य स्वीकार्य सामाजिकता और नैतिकता के स्तर पर खरे नही उतरते थे परंतु उस समय में ऐसे मामले संख्या में बहुत नगण्य और आपवादिक थे। यदि यह भी मान लिया जाए कि आज के युग में सूचना के प्रसारण के तीव्रतम साधनों की उपलब्धता के कारण आज के युग में किसी भी घटना अथवा दुर्घटना का बिजली की गति से संपूर्ण विश्व में प्रचारित हो जाना संभव है इसलिये आजकल सामान्यजन की जानकारी में आने वाली दुर्घटनाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है तो भी आज कल समाचार पत्रों अथवा टी.वी. चैनलों पर प्रसारित होने वाले समाचारों को पढ़कर तथा देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी वृद्ध होती पीढ़ी का कथन पूर्णतः गलत नही था।

आजकल समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले कृत्यों की जघन्यता एवं निर्लज्जता पर विचार करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि आजकल अपराध समाज के दबे-कुचले, वंचित तबके के अनपढ़ सदस्यों द्वारा विवश होकर नहीं बल्कि सुशिक्षित, समाज में अपना स्थान बनाने वाले परिवारों के सदस्यों द्वारा अपराध करने के कुत्सित आनंद और येन-केन-प्रकारेण जल्द से जल्द अमीर बनने के लिए किये जा रहे हैं। न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के मानस को उद्वेलित एवं विचलित कर देने वाला निर्भया कांड तथा सुशिक्षित व्यक्तियों द्वारा एटीएम मशीन को उखाड़कर ले भागने का प्रयास उपरोक्त कथन के जीवंत उदाहरण हैं। यत्र नार्यस्तु पूजयंते, रमंते तत्र देवता अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। ऐसा उच्च आदर्श रखने वाले भारत देश में होने वाले निर्भया कांड, बराला कांड हमारी युवा पीढ़ी की मानसिकता एवं नैतिकता के गिरते स्तर को दर्शाते हैं।

कॉन्वेंट स्कूलों में शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों द्वारा स्वयं को कानून से उपर समझना और बिना शर्मिन्दगी अनुभव किये हुए बेहिचक यौन एवं आर्थिक अपराध करना यह स्पष्ट करता है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमारे समाज को साक्षर भले ही बना रही हो परंतु सुशिक्षित नहीं और अपने कृत्यों पर शर्म न अनुभव करना सीधे-सीधे नैतिकता का अभाव है।
समस्या को हल करने के लिए समस्या की पहचान के अतिरिक्त इसके कारणों की पहचान किया जाना भी आवश्यक है। वर्तमान पीढ़ी में नैतिकता के अभाव के निम्नलिखित कारण उभरकर सामने आए हैं-

1. जीवन में अधिक महत्वपूर्ण लक्ष्यों का अभाव

2. बढ़ते उपभोगवाद एवं वास्तुवाद के चलते नैतिक मूल्यों पर आर्थिक पक्ष का पलड़ा भारी होना

3. स्कूली शिक्षा में केवल व्यवसायिक पक्ष पर जोर दिया जाना तथा

4. छोटा परिवार सुखी परिवार की गलत अर्थ में ली गई अवधारणा एवं संचार के आधुनिक साधनों जैसे इंटरनेट, मोबाईल इत्यादि के चलते पारिवारिक संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न होना।

उपरोक्त चारो कारणों में सबसे अधिक प्रभावी कारण चौथा है क्योंकि मां को बालक का सर्वप्रथम गुरू एवं घर को उसकी सर्वप्रथम पाठशाला माना जाता है। इसी पाठशाला के दूसरे शिक्षक घर के बुजुर्ग हुआ करते थे जो मिलजुलकर बालक को जीवन जीने के आदर्श तरीकों की शिक्षा दिया करते थे। छत्रपति शिवाजी माता जीजाबाई की शिक्षाओं को ही एक सुखद एवं गौरवशाली परिणाम थे।

जीवन यापन की बढ़ती लागत के चलते जहां घर की माताएं भी बच्चों को सुशिक्षा देने के स्थान पर बाहर निकल कर नौकरी करने को विवश हैं, वही स्त्रियों की उच्च शिक्षा एवं उनकी बढ़ती महत्वकांक्षा भी स्त्री मुक्ति की नई अवधारणा बन चली है।

पिछली पीढ़ी के बड़े-बूढ़े आर्थिक, शारीरिक एवं सामाजिक रुप से अपनी संतानों पर आश्रित होते थे। जहां एक ओर न्यूक्लियर परिवार के चलते परिवार का अर्थ केवल पति-पत्नी और बच्चा

रह गया है तथा दादा-दादी एवं अन्य बुजुर्ग परिवार की परिभाषा से ही बाहर हो चुके हैं, वही बढ़ती आर्थिक स्वतंत्रता ने नई पीढ़ी के बुजुर्गों की पराश्रित होने की विवशता को समाप्त कर दिया है और अपनी संतानों के पालन-पोषण के पश्चात अपने शेष जीवन को अपने समव्यस्कों के साथ तथा अधिकतम स्वतंत्रता से जीने के विचार ने भी उन्हें वृद्धाश्रमों की ओर उन्मुख कर दिया है। यदि वे घर में भी रहें तो अपने अलग कमरों में रहते हैं। माता-पिता की नौकरियों एवं व्यवसाय, पढ़ाई के दबाव और घर के बुजुर्गों के नई पीढ़ी एवं बदलते समय के साथ-साथ सामंजस्य न बैठा पाने के कारण परिवारों में संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न हो चुकी है। और बची-खुची कसर मोबाईल, लैपटॉप, व्हाटसएप और विडियो चैट इत्यादि ने पूरी कर दी है। जैसा कि मशहूर शायर निदा फाजली ने कहा है 'हर तरफ हर जगह बेशुमार आदमी फिर भी तन्हाईयों का शिकार आदमी'। कितनी बड़ी विडंबना है कि इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनिया से जुड़े होने का दावा करने वाली युवा पीढ़ी आज अपने ही घर में नितांत अकेली हो गई है जैसा कि फाजली साहब ने एक और शेर में कहा है कि " जिसे भी देखिए वो अपने आप में गुम है, जुबॉ मिली है मगर हमजुबॉ नही मिलता"। ऐसा अकेलापन ही युवा पीढ़ी को बल्यु व्हेल जैसा खतरनाक खेल खेलने को मजबूर कर रहा है और जीवन को ईश्वर का वरदान तथा आत्महत्या को पाप समझने वाले इस देश के युवा, यहां तक की किशोर-किशोरियां भी बेहिचक हत्या, आत्महत्या एवं यौन अपराधों में शामिल हो रहे हैं।

अंत में केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी माना जाता है और किसी समाज को समाज बनाने वाला प्रमुख कारण उसकी सामाजिकता ही है। संवादहीन समाज में समाजिकता का होना असंभव है। इसी प्रकार यदि युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों की पुनः स्थापना करना है तो परिवार को जोड़े रखना आवश्यक है जिसके लिए पारिवारिक संवादहीनता को समाप्त करना अनिवार्य है क्योंकि अपने अकेले में व्यक्ति न तो परिवार और न ही समाज की संरचना कर सकता है और स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ का चिन्तन करने पर ही व्यक्ति के दृष्टिकोण का विस्तार होता है। किसी शायर ने कहा है "खुदा हमको ऐसी खुदाई न दे, कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे"। एकबार पुनः परिवार एवं समाज का महत्व स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि इंटरनेट जैसे संचार माध्यम का प्रयोग न्यूनतम आवश्यकताओं तक ही सीमित रखा जाए तथा शेष समय विर्च्युअल रियलिटी से हटाकर एक्चुअल रियलिटी अर्थात परिवार एवं समाज को दिया जाए। केवल तभी समाज में हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास की कुछ हद तक भरपाई संभव है। दूसरी ओर परिवार एवं समाज को भी युवा पीढ़ी को यह संदेश देना होगा कि केवल जिंदा रहने का नाम ही जिंदगी नही है बल्कि अपने परिवार एवं समाज का सिर गर्व से ऊंचा कर सकने वाले आदर्शों के साथ जीना ही वास्तव में जीवन कहलाने योग्य है।

मुंबई में स्वागत

श्री बिजु पी.के.
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, मुंबई

इतनी धीमी गति से ट्रेन स्टेशन के अंदर आई कि किसी को पता ही नहीं चला कि ट्रेन पहुंच गई है। पता नहीं क्यों आज उतना भीड़ नहीं है। मुंबई की लोकल ट्रेन में सप्ताह के कुछ दिनों में ज्यादा भीड़-भाड़ रहती है और कुछ दिनों में कम। इसका कारण किसी को पता नहीं। मगर आज भीड़ कम है। मैं मध्य भाग के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में गाड़ी रुकने से पहले घुस गया। सीट तो भरी हुई थी ही, सीट के बीच में खड़े होने का मौका भी नहीं मिला। कैबिन के अंदर घुस गया। बैग स्टैंड कैबिनेट में रखवा दिया और कभी आंख बंद करना तो कभी खोलना, ऐसे खड़ा रहा। प्रथम श्रेणी के पीछे लेडीज़ कैबिन है। उसमें भी ज्यादा भीड नहीं थी मगर सीट फुल थी। इसी बीच अगला स्टेशन सानपाड़ा आ गया। हालांकि सानपाड़ा में इस डब्बे में चढ़ने के लिए कोई नहीं था। यूं ही मैंने जब ट्रेन के दरवाजे से थोड़ा अंदर देखा तो इक्कीस-बाइस साल का एक युवक खड़ा हुआ था। उसको देखकर ऐसा लग रहा था कि वह पहली बार मुंबई आया है और मुंबई की लोकल ट्रेन में सफर कर रहा है। उसके कंधे में एक बैग लटका हुआ था, दोनो पैरों के बीच में एक बैग रखा हुआ था और हाथ में एक पालिथीन बैग था। वह हरे रंग की टी-शर्ट और जीन्स पहने हुआ था। उसको देखकर ऐसा लग रहा था कि वह लंबा सफर करके ट्रेन से उतरा है और उसके बाद लोकल ट्रेन में सफर कर रहा है। भारत के सभी राज्यों से कई रेलगाड़ियां हर दिन मुंबई पहुंचती हैं और सभी गाडियों में 10 प्रतिशत लोग रोज़गार की तलाश में मुंबई पहुंचते हैं। आज मुंबई ज़िंदगी का एक रास्ता बन गई है। उस युवक की आँखों में कई सपने थे लेकिन उन पर विवशता की परछाई देखी जा सकती थी। जब उसने ट्रेन में चढ़कर केबिन के अंदर प्रवेश नहीं किया तो मैंने उससे पूछ डाला-"आपको कहां जाना है। " मेरे चेहरे को देखते हुए युवक ने जबाब दिया-वडाला। वडाला बताने के लिए उसने कई बार कोशिश किया, हो सकता है उच्चारण नहीं जानता हो या डर से बताना नहीं चाहता हो। मैंने उसको कैबिन के अंदर खड़े होने का इशारा किया लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। मैंने और जोर से कहा- अरे भाई, अंदर आ जाओ कुर्ला में आपको तकलीफ होगी और उतरने वालों को भी तकलीफ होगी। हर रोज जो हार्बर लाइन से आने-जाने वाले यात्री हैं, वे जानते हें कि कुर्ला पहुंचने पर 75% लोग वहां उतर जाते हैं। 20 सेकंड के अंदर 100 में से करीब 75 लोगों को एक दरवाजे से बाहर निकलना होता है तो उस समय किसी को नीचे या किनारे देखने का मौका नहीं मिलता। एक दूसरे को धक्का देते हुए सब लोग निकल जाते हैं। मुंबई में कुर्ला, दादर, थाने आदि स्टेशन ऐसे हैं कि पांच लाख से ज्यादा लोग हर दिन इन स्टेशनों पर जाते हैं और यात्रा करते हुए अपने गंतव्यत पर पहुँचते हैं। उस नवयुवक ने मेरे कहने पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। मैं भी आगे कुछ नहीं बोला। यह शहर बहुत पुराना है। कोई किसी को आदेश या उपदेश नहीं देता। सभी अपने-अपने अनुभव से अपना रास्ता बना लेते हैं। ट्रेन धड़कते-

धड़कते कई स्टेशन पार कर चुकी है और अभी वाशी पुल से गुजर रही है। कुछ लोग नीचे समुद्री पानी को देखकर प्रार्थना करते हैं, कुछ सूर्य नमस्कार करते हैं, कुछ मोबाइल पर न्यूज, गेम, व्हाट्सअप मैसेज आदि देखते हैं। ट्रेन जुईनगर, सानपाड़ा, वाशी स्टेशन, वाशी पुल पारकर अभी मानखुर्द स्टेशन पहुंच गई। अब यह डब्बा भी भर गया। दरवाजे पर लोग लटके हुए हैं कुछ हाथ ऊपर करके ट्रेन को पकड़े हुए हैं। कुछ कम ऊँचाई के लोग हैं जो कड़ी पकड़ नहीं सकते, अपना मोबाईल देख रहे थे। दोनों तरफ से अंदर की और इतना दबाव आता है कि बीच में खड़े लोगों को कड़ी पकड़ने की जरूरत ही नहीं होती। ट्रेन मानखुर्द से गोवंडी पहुंची तो और भीड़ हो गई। गोवंडी से निकलते ही ट्रेन चेम्बूर पहुंच गई। वहां लोग शोर मचाते हुए ट्रेन के अंदर घुसने की कोशिश कर रहे थे, कुछ गाली देते हैं अंदर खड़े लोगों को अंदर जाने के लिए और कुछ लोग अंदर से गाली देते हैं बाहर आने के लिए। गेट पर खड़े कुछ लोग बोलते हैं कि थोड़ा और अंदर हो जाओ नहीं तो वे गिर जाएँगे। लेकिन इसका कोई असर अंदर खड़े यात्रियों पर नहीं होता। वे बेफिक्र खड़े रहते हैं। ट्रेन वहां से निकलकर पहुंची तिलक नगर। तिलकनगर ऐसा स्टेशन है कि यहां पर बहुत कम लोग उतरते हैं, और इक्का-दुक्का ही चढ़ते हैं। ट्रेन वहां से रवाना हुई अगले स्टेशन कुर्ला की ओर। इसी बीच पंखा बंद हो गया और गर्मी बढ़ गई। यहां पर हर दिन ऐसा होता है। इलेक्ट्रिक पावर के बदलाव के कारण फैन बंद होता है। लेकिन इसे मैं इस रूप में लेता हूँ कि कुर्ला पहुंचने से पहले यह एक संकेत है कि कुर्ला आने वाला है। जिनको कुर्ला उतरना है वे लोग तैयार हो रहे हैं। कुछ लोग सीट छोड़कर खड़े हो गए हैं और लाइन लगा कर तैयार खड़े हैं। ज्यादा से ज्यादा लोगों को यहां पर उतरना है। मेरा ध्यान तब उस नवयुवक पर गया जिसको यहां उतरना नहीं है मगर वह उस लाइन में खड़ा होगा क्योंकि अभी वह अंदर घुस नहीं सकता और उसको बाहर जाने की जरूरत भी नहीं है। वह इतना बड़ा बैग लेकर उतरकर वापस चढ़ भी नहीं सकता, उतनी देर ट्रेन कुर्ला में रुकती नहीं है। जैसे ट्रेन धड़कते-धड़कते हिलते डुलते कुर्ला स्टेशन पहुँची। उतरने वाले सब तैयार थे जैसे ही गाड़ी धीमी होगी वैसे ही लोग उतरकर भागेंगे - दूसरी ट्रेन पकड़ने के लिए। ट्रेन धीरे-धीरे रुक गई। यात्री तेजी से उतरने लगे और इसी भाग-दौड़ में वह युवक भी ट्रेन से बाहर निकल गया। लेकिन उसका बड़ा बैग जो नीचे रखा था, ट्रेन के अंदर ही रह गया और दरवाजे के बीच के खंभे के कारण डिब्बे में ही अटक गया। वह बाहर खड़ा था और बैग पकड़ने की कोशिश कर रहा था मगर जो उतर रहे थे, उन्होंने यह नहीं देखा। एक पचास साल के आदमी का पैर बैग से टकरा गया और वह प्लेटफार्म पर गिर गया। उसके पीछे आने वाले तीन-चार लोग भी एक के ऊपर एक गिरने लगे। जो अंत में गिरा, उसको समझ में आया कि इस बैग की वजह से वह गिर पड़ा है। उसने गुस्से में उठकर गाली देते हुए प्लेटफार्म पर खड़े युवक के चेहरे पर जोर से थप्पड़ लगाया और भाग गया। जो उसके नीचे था उसने अपने बाएं हाथ से उस युवक को एक चांटा मारा। तीसरे आदमी ने उसके पेट में लात मारी। उस पैर मारने के दर्द से वह युवक झुक कर गिरने को हुआ, तभी अंतिम आदमी आया और उसने उस युवक को और गिराते हुए उसकी पीठ में इतनी जोर से प्रहार किया कि वह बेचारा रोने लगा। इतने में ट्रेन निकल चुकी थी। ट्रेन के दरवाजे के पास खड़े एक आदमी ने अपना पूरा बल लगाकर तेजी से उसके बैग पर पैर से धक्का लगाते हुए ज़ोरदार लात मारी तो बैग प्लेटफार्म पर गिर गया। सभी यात्री इस वाक़ये को देख रहे थे। वह बेचारा रो रहा था। ट्रेन में बैठे लोग अपनी-अपनी रायशुमारी कर रहे थे। कुछ शांत बैठे थे, कुछ अपने मोबाइल में चैट कर रहे थे और कुछ अखबार पढ़ रहे थे। गाड़ी चल रही थी अगले स्टेशन चूना भट्टी की ओर। मैं सोच रहा था कि यही मुंबई है। या तो आज वह मुंबई छोड़कर वापस चला जाएगा या फिर इसे जिंदगी के एक कटु अनुभव के रूप में लेते हुए कल नई सुबह, नई सोच के साथ अपने कैरियर की नई संभावनाएँ तलाशेगा।

नया साल 2018 का संकल्प

श्री आर.आर. वानखेड़े
अधीक्षक, मुंबई

दोस्तों 2018 नये साल का स्वागत हमने बड़े धुमधाम से आतिशबाजी और रोषनाई से किया। इस नए साल के आगमन पर पहले ही दिन हमने कुछ संकल्प भी लिए जिसे पूरा करने के लिए हम अपना शत प्रतिशत प्रयास करेंगे।

दोस्तों इसी संकल्प के संदर्भ में मैं आपको एक 160 साल पुरानी लेकिन सच्ची घटना के बारे में बताना चाहता हूं। वैसे तो इस घटना को सभी ने पढ़ा होगा, आप सभी इस घटना से परिचित होंगे, ऐसा मेरा मानना है। इसी घटना से प्रेरित होकर मैं यह कहना चाहता हूं कि हम अगर कोई काम दृढ़ संकल्प से करना चाहें तो कोई भी शक्ति हमें उसे पूरा करने से रोक नही सकती। तो मित्रों, घटना उस महापुरूष के बारे में है जिसने 160 साल पहले अपनी इस दुनिया में अंधकार न हो, इसलिए बिजली की बत्ती(बल्ब) का आविष्कार किया। उस महापुरूष का नाम था- थॉमस अल्वा एडीसन।

एडीसन का जन्म 11 फरवरी, 1847 को अमेरिका में हुआ। थोड़ा बड़ा होने पर वे पाठशाला जाने लगे। एक बार स्कूल से आते समय वे हाथ में एक लिफाफा लेकर घर आए जो उनके शिक्षक द्वारा उनकी मां के नाम भेजा गया था। यह लिफाफा उन्होने घर आते ही अपने मां के हाथ में दिया। जैसे ही एडीसन ने लिफाफा अपनी मां नेन्सी मेथ्यु को दिया, मां ने तुरंत उसे खोलकर उसमें रखी चिटठी को पढ़ा और उस चिटठी को पढ़ते-पढ़ते मां अपने आपको रोक नही पाई और उसे रोना आ गया। मां की आंखो से आंसू बहने लगे। उस लिफाफे में लिखा था, आपका बच्चा मंदबुद्धि, बुद्धिहीन और मतिमंद होने कारण हम उसे स्कूल में नही रख सकते। अतः उसे स्कूल से निष्कासित किया जाता है।

मां के आंसू देख एडीसन से रहा नही गया और उसने मां से पूछा कि मां इस चिटठी में क्या लिखा है जो इसे पढ़ते ही आपकी आंखो में आंसू आ गए। मां ने पहले चिठ्ठी को लिफाफे में डालकर

लिफाफा बंद किया और एडीसन को बड़े प्यार से दुलारते हुए कहा- बेटा, इसमें लिखा है कि आपका बच्चा बहुत होशियार और होनहार है। हमारा स्कूल बहुत छोटा होने के कारण हम इतने होशियार बच्चे को पढ़ाने की हैसियत नहीं रखते। ऐसा उसके शिक्षक ने लिखा है। इसके बाद कई साल तक एडीसन स्कूल नहीं गया और उसकी मां ने उसको घर में ही पढ़ाया। ऐसा करते-करते कुछ समय बाद एडीसन की प्रतिभा उभर कर सामने आने लगी और उन्होने बिजली बल्ब की खोज की, फोनोग्राम बनाया, मूव्ही कैमरे तैयार किए। उन्होने सौ से अधिक नई-नई चीजें बनाई। तब तक उनकी माता का देहांत हो चुका था।

ऐसे ही दिन गुजरते गए। एक दिन घर में रखी पुरानी चीजों को इधर-उधर ठीक से सफाई कर रखते हुए उन्हें पुराने संदुक में मां का रखा हुआ वह लिफाफा मिला जिसे खोलकर उसमें रखी चिट्ठी पढ़ी। यह वही चिट्ठी थी जो उनके स्कूल के शिक्षक द्वारा उनकी मां के नाम भेजा गया था। इस चिट्ठी को एडीसन ने पढ़ा और पढ़ते ही उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। वह खुद को रोने से रोक नही पाए। इसकी वजह थी चिट्ठी में लिखी हुई वह बात "कि आपका बच्चा बुद्धिहीन, मतिमंद है, इसलिए हम उसे स्कूल से निकालते हैं"। मां की यादों में उनका गला रूंध गया।

जिस एडीसन को स्कूल के मुख्याध्यापक ने मंदबुद्धि कहकर स्कूल से निकाल दिया था, उसी एडीसन को मां ने पढ़ाकर इस दुनिया का एक महान वैज्ञानिक बनाया। दोस्तों, सच में यह बहुत बड़ी आश्वस्त करने वाली बात है, क्योंकि एडीसन परंपरागत तरीके से रूढ़िवादी मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति नही थे। इसलिए स्कूल में उन्हे मंदबुद्धि कहा जाने लगा। लेकिन उनकी मां ने अपने बच्चे एडीसन की चौकस बुद्धि को परखा/समझा और उसकी बौद्धिक क्षमता पर विश्वास किया जिससे उस माता ने उसे एक प्रबल इच्छाशक्ति प्रदान की और वैज्ञानिक बनाया।

उसी प्रकार यदि हम हमारे बच्चों को नये विचारों से प्रेरित हो नई राहों पर चलाना चाहते हैं तो पहले अपने बच्चे को समझने की कोशिश करें। उनकी बौद्धिक क्षमता को पहचानें। उनके भीतर छुपे कलाकार, लेखक, कवि आदि के गुणों को परखें और तदनुसार उनके गुणों को/ विचारों को गतिमान करें। उनकी कल्पनाओं को साबित करने के लिए बल दें। मुख्यतः उन पर पूरा भरोसा रखें। इस प्रकार यदि हम नई पीढ़ी को योग्य दिशा में सही मार्ग पर ले जाने में सफल हुए तो वह दिन दूर नही जब हमारा भारत देश जगतगुरू कहलाएगा।

इसलिए मेरा यह मानना है कि कि नए साल के शुरुआत में ही हमें यह संकल्प करना होगा कि हमारी युवाशक्ति पर भरोसा करते हुए उनके पीछे पूरी ताकत से खड़ा रहना होगा।

उनकी नई सोच, नए विचार, नई कल्पनाओं को ज्यादा से ज्यादा सपोर्ट करने का हमें संकल्प लेना होगा। स्वामी विवेकानंद ने बहुत पहले कहा था कि "युवापीढी हमारी सबसे बड़ी ताकत है।" उनका यह कथन पहले जितना सार्थक था उससे कई गुणा ज्यादा आज है। इसकी वजह ये है कि आज भारत की आबादी का 65% युवा पीढ़ी है जो 35 साल से कम उम्र की है। कल मैंने टीवी पर किसी विद्वान व्यक्ति को यह कहते हुए देखा और सुना है कि सन 2020 तक हमारा देश दुनिया का सबसे युवा देश हो जाएगा। यह कथन मुझे एकदम सही लगता है। इसलिए युवाशक्ति के पंखों को बल प्रदान करना हमारा अहम कर्तव्य है। युवा शक्ति को पहचानकर उनकी क्षमतानुसार उन्हे हर क्षेत्र में अवसर उपलब्ध कराना, संसाधन उपलब्ध कराना हमारा ध्येय होना चाहिए जिससे दुनिया में भारतीय युवक योग्य स्थान पा सकेगा।

मुझे ऐसा लगता है कि युवापीढ़ी को सर्वोपरि अवसर उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी केवल सरकार की नही बल्कि हमारे समाज की, हमारे परिवार की, हमारे स्वयं की भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। जैसे अगर आपका लड़का/लड़की अच्छा गाना गा रहा है, उसकी आवाज अच्छी है, उसे सरगम की समझ है, उसे संगीत में रूचि है तो उसे उस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए न कि उसे मारपीट कर डॉक्टर-इंजीनियर बनाने पर दबाब डालने की कोशिश होनी चाहिए। ऐसे बहुत से उदाहरण हमें समाज परिवार में देखने को मिलते हैं कि माता-पिता बच्चो पर अच्छे प्रतिशत लाने के लिए दबाव डालते है, उसी ओर ध्यान देते हैं। लेकिन जिस विषय में उस बच्चे की रूचि है, उसे बढ़ावा देने, उसकी जिज्ञासा बढ़ाने में ध्यान नही देते, कोई मदद नही करते, कोई प्रोत्साहन नही देते। स्कूली किताबों से बाहर जाकर कुछ नया करने की इच्छा को जान लेना भी हमें उचित नहीं लगता। अतः हम कुछ नहीं करते।

यदि हम भारतीयों ने ऐसा करने का संकल्प लिया तो हम ज्यादा से ज्यादा बच्चों को प्रतिभावान बना सकते हैं और दुनिया के महान वैज्ञानिकों की श्रेणी में हम हमारे बच्चों को पहुंचा सकते हैं।

इसलिए मैं फिर दोहराना चाहूंगा कि आओ हम सब इस 2018 की शुरुवात में ही संकल्प करें कि हम हमारी युवा पीढ़ी को, उनके विचारों को, उनकी क्षमता को पहचानेंगे और उन्हें ऊंचाईयों को छूने के लिए उनके पंखों को बल देंगे।

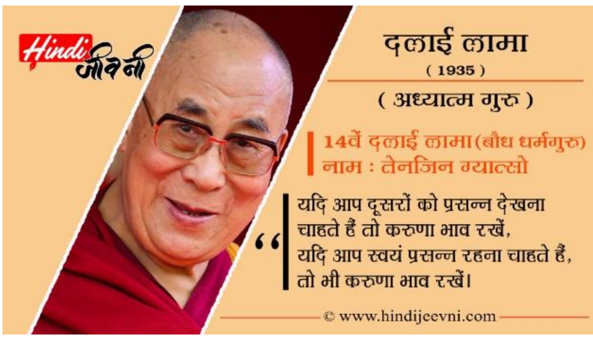

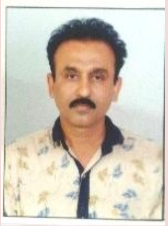

धर्म बनाम प्रजातंत्र

श्री शशि कुमार
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, हैदराबाद

भारत एक प्रजातंत्र देश है जहां सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्राप्त है। आज हम देखते हैं कि हर नेता आज प्रजातंत्र का कल्याण करने की जगह धर्म की स्थापना करने में लगा है। आज राजनीति में आने के लिए धर्म का सहारा लेना पड़ता है। आज संविधान का खुल्लम-खुला उल्लंघन हो रहा है। आज हर राजनैतिक पार्टी धर्म की रोटी सेकने में लगी है। कोई केवल हिंदुत्व की बात करता है तो कोई केवल मुसलमानों के लिए लड़ने की बात करता है। वास्तव में देश की सुरक्षा के बारे में कोई नही सोचता। आज मनुष्य केवल अपने आप के अस्तित्व की स्थापना करने में जुटा है। अपने अहंकार में दूसरों के हाहाकार को वह देख नही पा रहा है।

भारत में मौजूदा प्रजा को सही रुप में सरकार को जो सुविधाएं देनी चाहिए वह नही दे पा रही है। वही कुछ राजनीतिक नेता धर्म के नाम पर रोहिंग्यार शरणार्थियों को भारत में शरण दिलवाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं। मुसीबत में किसी को सहारा देना अच्छी बात है और यह हमारी संस्कृति भी है, लेकिन कुछ नेता उनको भारत में स्थायी रुप से रहने की अनुमति देने की गुहार लगा रहे हैं वह देश की सुरक्षा के हित में नहीं है। हमें देश की सुरक्षा के बारे में भी विचार करना चाहिए। स्वयं कुछ इस्लामिक देश उनको रहने की बात तो दूर उनको शरण देने से भी इंकार करते हैं, मात्र देश की सुरक्षा को ध्यान में रखकर। अब भारत को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। यूएनओ संघटन इस प्रकार की समस्याओं के लिए ही बना है। कोई भी नागरिक पहले देश के बारे में सोचता है, बाद में धर्म के बारे में। भारत पहले से ही देश की आंतरिक सुरक्षा को लेकर बेहद चिंतित है। उपर से इस प्रकार से उन लोगों को देश के अंदर शरण देने की बात करना न्यायोचित नही है।

देश में ओवैसी जैसे विवेकशील एवं विधि जानकार नेता को हम देखते हैं कि वह भी राजनीति में धर्म की रोटी सेकने में लगे हैं। यह देश युगो युगो से विभिन्न संस्कृतियों वाला देश रहा है। कभी किसी एक धर्म को महत्व नही दिया गया। सभी को एक समान अवसर इस देश में ही मिला। सभी के नागरिक अधिकारों को बढ़ने एवं फूलने का अवसर इसी देश में मिला। भारत में सभी जातियों एवं वर्ग के उत्थान की चर्चा होनी चाहिए न की मात्र हिंदु या मुसलमानों की। जहां तक भारत के संविधान का संबंध है वह सभी धर्मों के अधिकारों को समानता का अधिकार प्रदान करता है। भारत में हिंदू या मुस्लिम धर्म के अतिरिक्त कई धर्म हैं, जिनके हितों की रक्षा के बारे में कोई नेता विचार तक नहीं करता। हमें भारत की एकता को बनाए रखने के लिए सभी धर्म का सम्मान करना चाहिए। देश के विकास के बारे में सोचना चाहिए। सभी देश के नेता धर्म को छोड़कर देश के विकास पर यदि ध्यान दे तो विश्व में हमारा देश आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह नही कि हमारा देश समृद्ध नही है लेकिन और अधिक समृद्ध हो सकता है।

रक्तदान-जीवनदान

सुश्री उल्का परब
कार्यालय अधीक्षक, मुंबई

आज के भागदौड़ की जिंदगी में मनुष्य पर अनेक संकट आते हैं। कभी मानव निर्मित संकट तो कभी नैसर्गिक संकट। ऐसे समय में जरूरत लगती है रक्त की। आतंकवादी भी कभी बाम्ब विस्फोट करके सामान्य नागरिकों की जान ले लेते हैं, तो कोई नागरिक जख्मी हो जाता है। वे खून बह जाने से घायल हो जाते हैं। मृत्यु उन्हे सामने नजर आने लगता है। ऐसे समय में हम उन्हे रक्त दान करके उनको जीवन दान दे सकते हैं।

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में दान करने को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। आज नेत्रदान, किडनी दान, अवयव दान करके दूसरे व्यक्ति को जीवनदान देने का पवित्र कार्य मानव विज्ञान के जोर पर करता है। कोई भी मनुष्य को मृत्यु के अंदर से बाहर लाने का सामर्थ्य विज्ञान में है। बहु, संशोधन करके दवाईयों का निर्माण हो रहा है। आज कैंसर अथवा एडस जैसे प्राणघातक रोगों के उपर नियंत्रण मिलने पर मानव को यश प्राप्त हुआ है। प्लास्टिक सर्जरी से मानव को नया चेहरा मिला है। ये सब सच हो तो भी आज के विज्ञान के युग में मनुष्य को खून बनाने में सफलता प्राप्त नही हुआ है। जब जब मानव को खून की जरूरत लगी, तब तब निरोगी मनुष्य के शरीर से खून निकाला जाता है। इसलिए रक्तदान को श्रेष्ठदान कहा जाता है।

किसी शस्त्रक्रिया अगर ब्लड कैंसर हुआ जो हीमोग्लोबिन के प्रमाण कम होते हैं, ऐसे वक्त बाहर से खून जमा करना पड़ता है। इसलिए खून की जरूरत होती है। युद्ध के वक्त सीमा पर तैनात रहने वाले जख्मी सैनिकों को खून की जल्द आवश्यकता होती है, तब सच में रक्त का महत्व बढ़ जाता है। लेकिन कोई भी किसी का भी खून नही ले सकता। हर मनुष्य का खून का ग्रुप अलग-अलग रहता है। ORH Negative ग्रुप वाला व्यक्ति किसी को भी खून दे सकता है। इसी प्रकार AB ग्रुप वाला व्यक्ति किसी भी व्यक्ति से खून ले सकता है। प्रत्यक्ष रक्तदान के वक्त ब्लड ग्रुप के अलावा आर एच नाम के घटक ही विचार में ले सकते हैं। आर एच पोजिटिव और आर एच निगेटिव ऐसे खून के ग्रुप होते है। प्रत्यक्ष रक्त दान के समय खून का ग्रुप और घटक देखकर ही खून पसंद किया जाता है। रक्त मनुष्य के शरीर का ऐसा घटक है जो जाति धर्म के अनुसार नही बदलता। कोई भी धर्म का व्यक्ति कौन से भी धर्म के व्यक्ति को रक्त दान कर सकता है। शासकीय दृष्टि से इसमें कोई शिकायत नही आती। रक्तदान से जमा किया हुआ खून

रक्तपेटी में जमा किया जाता है। ऐसे ही रक्तपेटी बड़े हॉस्पीटल और रेडक्रास जैसे संस्था में होते हैं।

रक्त का दान करने से पहले व्यक्ति का ब्लड ग्रुप, उसकी आयु, उसे कोई रोग नही है, यह सब देखकर व्यक्ति का खून लेते हैं। रक्त देने से उस व्यक्ति को कोई हानि नही होती। रक्त का दान करने के बाद थोड़ी देर सीधा सोने से ब्रेन से खून का संचालन होता है। वैसे ही गरम पेय देने से खून की नसें पूर्ववत होकर खून पहले जैसे बहता है। इसलिए निरोगी व्यक्ति को रक्तदान करने से कोई नुकसान नही होता। अगर हर व्यक्ति अपनी मर्जी से रक्त दान करे तो जरूरतमंदो और गरीबों को खून की राह देखनी न पड़े। किसी भी व्यक्ति की जान बच सकती है। इसलिए बहुत सारे समाजसेवी संस्थाएं विशेष दिनों में रक्तदान शिविर का आयोजन करके जमा किया हुआ रक्त सरकारी अस्पतालो अथवा नगर पालिका अस्पतालों की रक्तपेटी में जमा करवाते हैं। इसलिए समाचारपत्र, दूरदर्शन आदि के माध्यम से रक्तदान का महत्व जनता को बताने की जरूरत है। दानवीर व्यक्ति मंदिर में जाकर दान-धर्म करते हैं। वैसे ही हर निरोगी व्यक्ति नियमित रक्त दान करे तो रक्त की कमी महसूस नही होगी। कोई भी व्यक्ति यदि रक्त दान करता है तो उसका खून कुछ ही घंटों में उसके शरीर में वापस बन जाता है। रक्तदान एक प्रकार से जीवन दान होता है।

सच्ची दोस्ती

श्रीमती स्वाति दाते
पुस्तकालयाध्यक्ष, मुंबई

हमारे परिवार के अलावा और जीवन में किसका साथ मिलता है तो वह है दोस्ती का, मित्रता का। जीवन में किसी खास के लिए सब कुछ अर्पण कर देना सच्ची दोस्ती होती है। जीवन में सच्चा दोस्त बहुत मुश्किल से मिलता है। कोई हमेशा सहायता के लिए तैयार रहता है वो वह सच्चा मित्र।

दोस्ती का मतलब एक प्यारा सा दिल जो कभी नफरत नही करता, एक प्यारी सी मुस्कान जो कभी फीकी नही पड़ती, एक एहसास जो कभी दुख नहीं देता और एक रिश्ता जो कभी खत्म नही होता। सच्ची मित्रता जीवन में कई प्रकार के यादगार, मीठे और खुशनुमा अनुभव देती है। किसी के जीवन में मित्रता सबसे बहुमूल्य संपत्ति है जिसे कभी कोई खोना नहीं चाहेगा।
कोई अच्छी सी सजा दो मुझको, चलो भुला दो मुझको
तुझसे दोस्ती टूटे उस दिन मौत आ जाए मुझको,
दिल की गहराईयों से दुआ दो मुझको

दोस्त और रिश्ते वे चीजें हैं जो हमें मुफ्त मिलती है मगर इनकी कीमत का पता तब चलता है जब ये कहीं खो जाती है। कुछ लोग सफलतापूर्वक अपने बचपन की दोस्ती को पूरे जीवन भर लेकर चलते हैं जबकि कुछ गलतफहमी, समय की कमी या दूसरे कारणों से बीच में ही समाप्त कर देते हैं। दोस्त अच्छे-बुरे दोनो प्रकार के हो सकते हैं। अच्छे दोस्त अच्छे रास्ते पर ले जाते हैं जबकि बुरे दोस्त गलत राह पर ले जाते हैं। इसलिए हमें जीवन में दोस्त चुनते समय सावधान रहना चाहिए। बुरे दोस्त हमारे लिए बहुत बुरे साबित हो सकते हैं क्योंकि वो हमारे जीवन को पूरी तरह बरबाद करने के लिए काफी होते हैं। इंसान के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण वस्तुओं के होने के बाबजूद भी जीवन में दोस्ती का एक बहुत ही मूल्यवान रिश्ता है। कोई भी जीवन को पूरी तरह संतोषजनक नहीं बीता सकता अगर उसके पास भरोसेमंद दोस्त नहीं है। हरेक को जीवन की अच्छी-बुरी यादें, असहनीय घटना और खुशी के पल को साझा करने के लिए, किसी से बात करने के लिए, अपना अकेलापन मिटाने के लिए, किसी को दुख से निकालने के लिए, हंसाने वाले निष्ठावान मित्र की जरूरत होती है। दोस्त जीवन का वह साथी है जो हर बुराई से हमें बचाता है और सच्चाई के राह पर चलने को कहता है। मित्रता का सच्चा उदाहरण मतलब अर्जुण-कृष्ण की मित्रता, श्रीकृष्ण सुदामा की मित्रता, श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता एक पावन संबंध की सूचक है।

दोस्ती दुनिया का एक बड़ा अनमोल रत्न है। सच्चा मित्र मिलना हमारा सौभाग्य है, वह एक ईश्वर का वरदान है। सच्चा मित्र तो वो होता है जो हर परिस्थिति में साथ निभाता है, ऊपरी मित्रता निभाने वाले तो बहुत मिल जाते हैं। सच्ची मित्रता पानी और मछली जैसी होती है, सूरज की किरणों जैसी प्रखर होती है। मित्रता में उम्र, जाति, धर्म और संप्रदाय की कोई सीमा नहीं होती लेकिन कई बार ऐसा देखा गया है कि आर्थिक अंतर और दूसरे भेद दोस्ती को खराब कर देते हैं। हमारा बुरा समय हमें अच्छे और बुरे दोस्त की पहचान करा देता है। कई बार मित्रता खुद के अहम या आत्म सम्मान की वजह से टूट जाती है। सच्ची दोस्ती में समझ, भावना तथा भरोसा होना चाहिए। सच्चा मित्र हर सुख-दुख में साथ देता है। तुलसीदास जी ने कहा है-
जो मित्र दुख होई न दुखारी।
ति नाही विलोकत पातक भारी।।

दुनिया में दोस्त तो कदम-कदम पर मिल जाते हैं परंतु सच्चे दोस्त बहुत कम मिलते हैं। ईश्वर से हमें यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें स्वार्थी दोस्तों से बचाए और सच्चे दोस्तों से मिलाए।

आजकल के डिजीटलाइजेशन के जमाने में फेशबुक, वॉट्सअप पर बहुत सारे दोस्त बन जाते हैं पर उनमें से सच्चे दोस्त बहुत कम मिलते हैं।

अभी इस डिजीटलाइजेशन के जमाने में मित्र सिर्फ हाय-हलो तक ही सीमित रहे हैं। वॉट्सअप, फेशबुक, ट्विटर पर सिर्फ नाम के ग्रुप बने हैं परंतु इसमें हर एक अपना मित्रता का फर्ज भूलता जा रहा है। किसी के पास इतना समय नहीं है कि चलो हम अपने पुराने दोस्त से मिलें, उनका हालचाल पूछें। सब अपने-अपने काम में इतना व्यस्त रहते हैं।

काश, ये फेसबुक, वॉट्सअप के बाहर भी आकर देखें। अपने-अपने दोस्त का क्या हाल है। जिंदगी ऐसे ही गुजर जाएगी दोस्तों

को याद करते-करते। वॉट्सअप, फेसबुक के कुछ चुने हुए पंक्तियां जिसे दोस्तों को ऐसे ही याद किया जाता है।

दोस्ती का रिश्ता ऐसा होता है जो
अनजानो को भी मिला देता है
जिंदगी में हर कदम पर एक नया मोड़ देता है
सच्चे दोस्त साथ देते हैं, जब अपना साया भी साथ छोड़ देता है।

दोस्त शब्द नहीं जो मिट जाए
उम्र नही जो ढ़ल जाए
सफर नहीं जो कट जाए
ये तो वो एहसास है,
जिसके लिए जिया जाए तो जिंदगी भी कम पड़ जाए।

दिल से दिल कभी जुदा नहीं होते,
यू हीं हम किसी पर फिदा नहीं होते,
मोहब्बत से बढ़कर तो दोस्ती का रिश्ता है,
क्योंकि दोस्त कभी बेवफा नहीं होते।

सच्चा दोस्त वही होता है जो तब हमारा साथ देता है जब सब साथ छोड़ देते हैं।
सच्चे मित्र के तीन लक्षण हैं- अहित को रोकना, हित की रक्षा करना और विपत्ति में साथ नहीं छोड़ना।

महिला सशक्तिकरण

श्री संजीव कुमार,
उच्च श्रेणी लिपिक, मुंबई

महिला शक्तिकरण का वास्तविक अर्थ यह कहा जा सकता है कि महिलाओं को शक्ति प्रदान करना अर्थात महिलाओं को संविधान एवं समाज के द्वारा दिया हुआ अधिकार को पूर्णतः लागू करना और उस अधिकार और शक्ति के द्वारा महिलाएं अपने समकक्ष पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जिंदगी जी सके।

भारत की 50% प्रतिशत आबादी महिलाओं की है जिसका 70% गावों में निवास करता है। भारत एक प्राचीन देश है जिसमें विविध जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, रुप-रंग आदि प्रकार के महिलाएं रहती हैं। परंतु इन विविधताओं में एक समानता यह है कि ये सभी महिलाएं किसी न किसी प्रकार से पुरूषों की अपेक्षा शोषित और पिछड़ी हुई होती हैं।

हमारे देश में शुरू से ही महिलाओं को दूसरा दर्जा दिया जाता रहा है। महिलाएओं के उपर न जाने कितनी तरह की बंदिशें लगाई जाती रही हैं। उनके उपर तरह-तरह के अत्याचार किये जाते हैं। सालों पहले सती प्रथा के नाम पर उन्हें जिंदा जलाया जाता था। महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद कर दिया जाता था। वे सिर्फ घर के काम में दिन रात लगी रहती हैं। पितृसतात्मक समाज होने के कारण महिलाओं का अपना कुछ भी वजूद नही होता। घर में सिर्फ खाना बनाना, बच्चे पैदा करना और बच्चो का पालन पोषण करना तक सीमित रहती हैं। यहां तक की महिलाओं को शिक्षा भी नही दिया जाता। पुरूषों के खाने के बाद जो खाना बचता था, उसी में काम चलाना पड़ता था। महिलाओं के बीमार पड़ने पर उन्हें चिकित्सा की सुविधा भी नही दी जाती जिससे उनका आकस्मिक निधन हो जाता है।

परंतु आज के आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। इसके लिए हमारे कई महापुरूषों ने काफी प्रयास भी किया है। महान समाज सुधारक राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा समाप्त करने के लिए काफी संघर्ष किया था। अंग्रेजों से लड़कर उन्होने सती प्रथा कानून बनवाया था और समाज से महिलाओं के सती होने की बहुत बड़ी बुराई को दूर किया था। उसी तरह ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने संघर्ष कर बाल विवाह को समाप्त करवाया। देश के और कई हस्तियों ने जैसे विवेकानंद, विनोवा भावे आदि ने महिलाओं के सम्मान केलिए कार्य किया था।

08 मार्च को हम अंतराष्ट्रीय महिला दिवास मनाते हैं और इसी महिला दिवस पर हमारे देश के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि देश को आगे बढ़ाना है तो हमे सबसे पहले अपने देश की महिलाओं को आगे बढ़ाना होगा और महिलाएं एक बार आगे बढ़ जाएगी तो राष्ट्र स्वतः आगे बढ़ जायेगा। साथ ही उन्होने एक स्लोगन दिया है जिसमें उन्होने कहा है "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ"।

वर्तमान में हमारे देश में महिलों की स्थिति अभी बहुत अच्छी नही है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति दयनीय है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बहुत से नियम कानून सरकार द्वारा बनाया गया है। जैसे- बाल विवाह कानून, दहेज प्रथा कानून, भ्रूण हत्या कानून, लिंग जांच कानून, कार्यालय में महिलाओं के शोषण संबंधी कानूनआदि। परंतु देखा यह जा रहा है कि सभी नियम कानून किताबों तक ही सीमित रह जाते हैं। ये नियम तभी सफल होंगे जब तक हमारा पुरूष प्रधान समाज अपनी सोच को नहीं बदलेगा। हमें महिलाओं को यह ताकत देना होगा कि वे भी परिवार और समाज में अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकें। शहरों में महिलाएं कुछ हद तक आत्मनिर्भर हुई हैं परंतु इसका प्रतिशत अभी बहुत कम है। गांवों में अभी बहुत अधिक जागरूकता लाने की जरूरत है। हमारे देश के मुस्लिम महिलाओं की स्थिति और भी भयावह है। मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा का घोर अभाव है जिसके कारण वे बाहरी दुनिया से कट जाती हैं। तीन तलाक का मुद्दा अभी हमारे देश में काफी चर्चा में रहा है। तीन तलाक के कारण मुस्लिम महिलाओं की स्थिति नारकीय हो जाती है। परंतु हमारी सरकार और माननीय सर्वोच्च न्यायालय के कारण तीन तलाक को समाप्त करने के लिए बहुत ही बड़ा कदम उठाया गया है। यह हमारे मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगा।

कुछ समय पहले देश में निर्भया कांड हुआ था जो हमारे देश के लिए काला धब्बा रहा। देश में लगातार बलात्कार जैसी वीभत्स कांड होता रहता है जो महिलाओं के जीने के अधिकार को रौंद देता है। इन बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के कारण हमारे देश की राजधानी को असुरक्षित माना जाने लगा है। संसद में भी इस पर चर्चा हुआ और अंततः बलात्कार रोकथाम के लिए एक कड़ा कानून लाया गया। जो महिला सशक्तिकरण का एक ठोस उपाय होगा।

महिलाओं को और सशक्त बनाने के लिए हमें सर्वप्रथम अपने परिवार से शुरूवात करनी होगी। परिवार में लड़का एवं लड़की के भेदभाव को समाप्त करना होगा। लड़कियों के जन्म पर भी खुशियाँ मनानी होगी। लड़का एवं लड़की दोनो को एक समान शिक्षा प्रदान करना होगा ताकि लड़कियां भी पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर अपने पैरों पर खड़ी हो सके क्योंकि यही लड़कियां कल होकर एक महिला बनेगी और अपने परिवार को सुचारू ढंग से चलाएगी। एक लड़की अगर शिक्षित होती है तो अगला पीढी शिक्षित हो जाता है। महिलाओं के आगे बढ़ने के लिए उसे स्वयं निर्णय लेने का मौका देना होगा। और हमें विश्वास है कि एक महिला पुरूषों की अपेक्षा अधिक सक्षम होती है सही निर्णय लेने में।

महिलाओं के सशक्तिकरण में हमारे देश की सरकार ने कई उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं। जैसे- देश के प्रधान मंत्री के रुप में इंदिरा गांधी ने एक क्रांतिकारी सरकार चलाई थी। इसी प्रकार प्रथम महिला राष्ट्रपति के रुप में श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल का चुनाव किया गया था। सबसे ताजा उदाहरण हमारे देश के रक्षा मंत्री के रुप में एक महिला का लाया गया है। इसी तरह देश में अभी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आरक्षण की भी व्यवस्था की जा रही है। परंतु संसद में 33% महिलाओं के आरक्षण का बिल अभी भी लंबित है। जिसे पास कराना जरूरी है। अगर देश में 33% सांसद महिला चुनकर आयेगी तो निश्चित रुप से महिला सशक्तिकरण में एक नया अध्याय जुड़ेगा।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि महिलाओं का सशक्तिकरण होना अति आवश्यक है। हमारे देश में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है और अगर आधी आबादी का रुप विकास होगा तभी हमारे देश का पूर्ण विकास होगा। इसलिए हम सभी पुरूषों को अपने सोच में परिवर्तन लाना होगा और अपने घर से प्रयास करना होगा। सरकार के साथ परिवार और समाज को सार्थक प्रयास करना होगा तभी महिलाओं का सशक्तिकरण सफल होगा।

राष्ट्रभाषा की समस्या

श्रीमती जाह्नवी गाडे
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर हम भारत को राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है। किसी भी राष्ट्र की सर्वाधिक प्रचलित एवं स्वेच्छा से आत्मसात की कई भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है। संसार के प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक संविधान-सम्मत राष्ट्रभाषा है। वे राष्ट्र-जन और उनके नेता देश-विदेशी सभी जगह अपनी उस राष्ट्रभाषा के प्रयोग में ही गौरव का अनुभव करते हैं। हिंदी, बंगला, उर्दू, पंजाबी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, इत्यादि भारत के संविधान द्वारा राष्ट्र की मान्यभाषाएँ है। इन सभी भाषाओं में हिंदी का स्थान सर्वोपरि है, क्योंकि यह भारत की राजभाषा भी है। राजभाषा वह भाषा होती है, जिसका प्रयोग किसी देश में राज-काज को चलाने के लिए किया जाता है।

हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसके बावजूद सरकारी काम-काज में अब तक अंग्रेजी का व्यापक प्रयोग किया जाता है। हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा तो है, किन्तु इसे यह सम्मान सिर्फ़ संवैधानिक रुप में प्राप्त है, वास्तविक रूप में राजभाषा का सम्मान प्राप्त करने के लिए इसे अंग्रेजी से संघर्ष करना पड़ रहा है। एक विदेशी भाषा होने के बावजूद अंग्रेजी में राज-काज को विशेष महत्व दिए जाने और राजभाषा के रूप में अपने सम्मान प्राप्त करने हेतु हिंदी के संघर्ष के कारण जानने के लिए सबसे पहले हमें हिंदी की संवैधानिक स्थिति को जानना होगा।

संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड-1 में कहा गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंको का रूप, भारतीय अंको का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा। खंड-2 में यह उपबन्ध किया गया था कि संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक अर्थात 26 जनवरी, 1965 तक संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा जैसे कि पूर्व में होता था। वर्ष 1965 तक राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किए जाने का कारण यह था कि भारत वर्ष 1947 से पहले अंग्रेजों के अधीन रहा था और तत्कालीन ब्रिटिश शासन में यहाँ इसी भाषा का प्रयोग राजकीय प्रयोजनों के लिए होता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अचानक राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी का प्रयोग कर पाना व्यवहारिक रुप से संभव नहीं था, इसलिए वर्ष 1950 में संविधान के लागू होने के बाद से अंग्रेजी के प्रयोग के लिए 15 वर्षों का समय दिया गया और यह तय किया गया कि इन 15 वर्षों में हिंदी का विकास कर इसे राजकीय प्रयोजनों के उपयुक्त कर दिया जाएगा, किंतु यह 15 वर्ष पूरे होने के पहले ही हिंदी को राजभाषा बनाए जाने का दक्षिण भारत के कुछ स्वार्थी राजनीतियों ने व्यापक विरोध करना प्रारंभ कर दिया।
भारत में अनेक भाषा-भाषी लोग रहते हैं। भाषाओं की बहुलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि भारत के संविधान में ही

22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। हिंदी, भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है और बांग्ला भाषा दूसरे स्थान पर विराजमान है। इसी तरह पहाड़ी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, मराठी, इत्यादि भाषाएँ बोलनेवालों की संख्या भी काफी है। भाषाओं की बहुलता के कारण भाषायी वर्चस्व की राजनीति ने भाषावाद का रूपधारण कर लिया है। इसी भाषावाद की लड़ाई में हिंदी को नुक़सान उठाना पड़ रहा है और स्वार्थी राजनीतिज्ञ इसको इसका वास्तविक सम्मान दिए जाने का विरोध करते रहे हैं।

एक भारत ही ऐसा देश है, जिसे स्वतंत्र हुए लगभग पचास वर्ष बीत जाने पर भी राष्ट्रभाषा की चर्चा एक समस्या के रूप में करनी पड़ती है। है न यह घोर लज्जा और अपमान की बात। आश्चर्य तो तब होता है जब कोई विदेशी यहां हमारे घर में आकर हमारी राष्ट्रभाषा में हमसे बात करना चाहता है या वह अपनी राष्ट्रभाषा में पूछता बोलता है। लेकिन हम बेशर्म दांत दिखाते हुए उसकी बातों का उत्तर उसके रोकने-टोकने पर भी टूटी-फूटी अंग्रेजी में गलत-सही देने में अपनी शान समझते हैं।

देश की अन्य भाषाओं के बदले हिंदी को राजभाषा बनाए जाने का मुख्य कारण यह है कि यह भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा के साथ-साथ देश की एकमात्र संपर्क भाषा भी है। ब्रिटिशकाल में पूरे देश में राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होता था। पूरे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती थी, किंतु स्वतन्त्रता आंदोलन के समय राजनेताओं ने यह महसूस किया है, जो दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर पूरे देश की संपर्क भाषा है और देश के विभिन्न भाषा-भाषी भी आपस में विचार विनिमय करने के लिए हिंदी का सहारा लेते है। हिंदी की इसी सार्वभौमिकता के कारण राजनेताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था।

आजकल पूरे भारत में सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रित रूप हिंगलिश का प्रयोग बढ़ा है, इसके कई कारण है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में व्यवसायिक शिक्षा में प्रगति आई है। अधिकतम व्यावसायिक पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध है और विद्यार्थियों के अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी भाषा ही है। इस कारण से विद्यार्थी हिंदी में पूर्ण नहीं हो पाते हैं। अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त युवा हिंदी में बात करते समय अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करने को बाध्य होते है, क्योंकि हिंदी भारत में आम जन की भाषा है। इसके अतिरिक्त आजकल समाचार-पत्रों एवं टेलीविजन के कार्यक्रमों में भी ऐसी ही मिश्रित भाषा का प्रयोग में लाई जा रही है, इन सब का प्रभाव आम आदमी पर पड़ता है।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के संदर्भ में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था "भारत की सारी प्रांतीय बोलियाँ, जिन में सुंदर साहित्यों की रचना हुई है, अपने घर या प्रांत में रानी बनकर रहे, प्रांत के जन-गण के हार्दिक चिंतन की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा हो कर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य-मणि हिंदी भारत-भारती होकर विराजती रहे।" प्रत्येक देश की पहचान का एक मजबूत आधार उसकी अपनी भाषा होती है, जो अधिक से अधिक व्यक्तियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा के रूप में व्यापक विचार विनिमय का माध्यम बनकर ही राष्ट्रभाषा (यहाँ राष्ट्रभाषा का तात्पर्य है – पूरे देश की भाषा) का पद ग्रहण करती है। राष्ट्रभाषा के द्वारा आपस में संपर्क बनाए रखकर देश की एकता और अखंडता को भी कायम रखा जा सकता है।

विश्व के तेज़ी से प्रगति कर रहे सभी विकासशील देश ऐसा, अंग्रेज़ी अपनाए बिना, निज भाषाओं के माध्यम से कर रहे हैं। भारत में स्थिति उलटी है. . .यहाँ अंग्रेज़ी की जकड़ बढ़ रही है और भारतीय भाषाएँ चपरासियों की भाषाएँ हो चली हैं। इसका प्रमुख कारण है हमारी भाषाओं का आपसी वैमनस्य! इसके निराकरण के लिए अच्छा हो, यदि सभी भारतीय भाषाएँ एक लिपि अपनाएँ जो वर्तमान विभिन्न लिपियों को मिला-जुला रूप हो।

क्या भारतीय भाषाएँ चीनी, जापानी आदि भाषाओं की तुलना में इतनी अक्षम हैं कि अंग्रेज़ी से अनुवाद न किया जा सके? स्वयं अंग्रेज़ी में निरंतर पारिभाषिक शब्द गढ़े जाते हैं जो प्रायः ग्रीक और लैटिन भाषाओं पर आधारित होते हैं। संस्कृत का शब्द-भंडार इन दो प्राचीन भाषाओं से अधिक समृद्ध हैं। हमें पारिभाषिक शब्द बनाने में कठिनाई क्यों हो? निस्संदेह वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक, व्यावसायिक आदि क्षेत्रों में नई खोजों, नए विचारों की भाषा प्रायः अंग्रेज़ी होती है। सबसे उन्नत देश अमेरिका की भाषा अंग्रेज़ी है। ज्ञान-विज्ञान की जितनी पुस्तकें, पत्रिकाएँ अंग्रेज़ी में उपलब्ध हैं उतनी किसी और भाषा में नहीं। पर क्या इन ज्ञान को आत्मसात करने के लिए हम अपनी भाषा छोड़कर अंग्रेज़ी को अंगीकार करें? भारत में आज ऐसा ही हो रहा है। अंग्रेज़ों के जाते समय अंग्रेज़ी भाषा की जितनी महत्ता थी, उससे अधिक आज है। क्या हमारा यह अंग्रेज़ी अनुराग हमारे देश के उत्थान में सहायक हुआ है अथवा इस विदेशी भाषा पर अधिकार करने के अर्धसफल या असफल प्रयास में हम पीढ़ी दर पीढ़ी अपार समय और ऊर्जा गँवा रहे हैं?

हमारे अंग्रेज़ी-दक्ष इंजीनियर कोरिया के लोगों को कार, टी.वी. बनाना नहीं सिखाते। उनके टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोलने वाले इंजीनियर हमें, और बाकी दुनिया को, ऐसा सामान बनाकर बेचते हैं। अंग्रेज़ी-मोह से मुक्त देशों की सफलता का कारण समझना कठिन नहीं हैं। वहाँ अंग्रेज़ी की पुस्तकों का स्वदेशी भाषा में अनुवाद करके उस ज्ञान को जन-साधारण के लिए सुलभ कर देते हैं। जो छात्र उच्चतर अध्ययन के लिए विदेश जाना चाहते हैं, अथवा जो दूसरे कारणों से अंग्रेज़ी में रुचि रखते हों, केवल वे ही अंग्रेज़ी पढ़ते हैं। शेष छात्र इस भार से लगभग मुक्त। बात हमारे अंग्रेज़ी पाठ्यक्रम की आई है तो उसके अन्य आयाम भी देख लें। भारत में अंग्रेज़ी एक विदेशी भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती। इसका पठन-पाठन कुछ ऐसा है मानों हम सब लंदन के निवासी हों!

यदि हमारे देश से कभी अंग्रेज़ी का दबदबा हटा तो कुछ समस्याएँ भी उठ खड़ी होंगी जैसे हिंदी के फ़िल्म जगत में तो बिल्कुल उथल-पुथल मच जाएगी। वहाँ जो कुछ हिंदी बोली जाती हैं वह पर्दे पर कैमरा हटते ही उन अधपढ़ों की भीड़ में जो जितनी अमेरिकी-ढरक से अंग्रेज़ी बोलता है, अपने आप को उतना ही कुलीन समझता है। यदि अंग्रेज़ी की महत्ता गई तो इस उद्योग के लोग अपना उथलापन, अपनी अभद्रता कहाँ कैसे छिपाएँगे? ऐसी दिक़्क़तें तो होंगी. . .कुछ और वर्ग भी विरोध करेंगे मानो समर्थ अंग्रेज़ी का प्रभुत्त जाते ही देश बेसहारा हो जाएगा।

अच्छा हो यदि ये लोग स्वयं अंग्रेज़ी भाषा का अपना इतिहास जान लें - आज से 500 वर्ष पहले विश्व की भाषाओं में अंग्रेज़ी की कोई गिनती नहीं थीं।

इसको बोलने वाले दो-एक टापू तक सीमित थे और वहाँ भी विद्वानों की भाषा लैटिन थीं। पाँच सदी पूर्व की अंग्रेज़ी की तुलना में हमारी भाषाओं की वर्तमान स्थिति श्रेयस्कर हैं। संस्कृत की विपुल शब्द संपदा हमारी थाती है। अगर कमी है तो केवल इच्छाशक्ति की, एक संकल्प की, आपसी भाषायी राग-द्वेश को मिटाकर आगे बढ़ने की. . .

आज देश में जो भी प्रगति हो रही हैं उसका लाभ प्रायः उच्च मध्यवर्गीय 20 करोड़ लोगों तक सीमित हैं, शेष 80 प्रतिशत के पास अपना जीवनस्तर सुधारने के बहुत कम रास्ते हैं, जिसका एक कारण अंग्रेज़ी की प्रभुसत्ता है। यदि भारत को कभी उन्नत देशों की श्रेणी में गिना जाना है तो ज़रूरी है कि हम अंग्रेज़ी की बेड़ियों से मुक्त हों। उसे एक अतिथि-सा सम्मान दें। गृहस्वामिनी न मानें। आम आदमी को उसी की भाषा में शिक्षा और शासन दिया जाय।

हम अन्य देशों से सीखें। आज चीन जिस तरह दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है, आश्चर्य नहीं कि इस शताब्दी के मध्य तक चीनी भाषा विश्व में उतनी ही महत्वपूर्ण हो जाय जितनी अंग्रेज़ी। (इसके संकेत अमेरिका में अभी से दिखने लगे हैं।) तब हम और दयनीय लगेंगे।

हमें समय रहते चेतना चाहिए।

हिंदी भाषा का महत्व

श्रीमती ईशा कामटेकर,
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में हर देश की एक अपनी भाषा और अपनी एक संस्कृति होती है। राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के स्थायित्व के लिए राष्ट्रभाषा अनिवार्य रुप से होनी चाहिए जो किसी भी राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण होता है। यदि कोई देश अपनी मूल भाषा को छोड़कर दूसरे देश की भाषा का आधार लेता है तो उसे सांस्कृतिक रुप से गुलाम माना जाता है क्योंकि अपनी भाषा में सारे कार्य करने-पढ़ने से हमें आगे बढ़ने में ज्यादा परेशानी नहीं होती।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व कांग्रेस ने यह निर्णय लिया था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की राजभाषा हिंदी होगी। स्वतंत्र भारत के संविधान में चौदह सितंबर 1949 को भारती की राजभाषा हिंदी को मान्यता दे दी। हमारे देश की मूल भाषा हिंदी है लेकिन भारत में अंग्रेजों की गुलामी के बाद हमारे देश की भाषा पर भी अंग्रेजी भाषा का अधिपत्य हुआ है। भारत देश के आजाद हुए काफी साल होने के बाबजूद हिंदी भाषा पर अंग्रेजी भाषा का आज भी अधिपत्य कायम है। लोगों के मुंह से यह कहते हुए सुना जाता है कि हमारी हिंदी थोड़ी कमजोर है। यह कहने का तात्पर्य यही होता है कि मतलब अंग्रेजी भाषा हिंदी के मुकाबले काफी अच्छी है। और यदि भूल से यह कह दें कि अंग्रेजी कमजोर है तो उसे कम पढ़ा लिखा मान लेते हैं। क्या यह सही है कि किसी भाषा पर अगर अपनी पकड़ न हो तो क्या हमें अनपढ़ मान लिया जाए। शायद ऐसा होना हमारे देश की विडम्बना है।

भले ही आज हमारी सारी पढ़ाई-लिखाई और कार्य अंग्रेजी में होता है लेकिन भारत के लोग की मूलभाषा हिंदी है और भारत के किसी भी कोने में चले गये तो आपको हिंदी आती है तो आपको रहने, कार्य करने में कोई परेशानी नही होगी और हिंदी एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारत को जोड़कर रखती है।

हिंदी शब्द की उत्पति संस्कृत भाषा के सिंधु शब्द से हुई है। भारत में अनेक भाषा और बोलियां बोली जाती है। लेकिन इन सभी भाषाओं में सबसे अधिक बोली जाने वाली हिंदी है। हिंदी भाषा बोलने में सबसे अधिक सरल और लचीली भाषा है। हिंदी भाषा को बोलना और समझना बहुत ही आसान है। दुनिया की एक मात्र हिंदी ही ऐसी भाषा है जो कि सबसे अधिक तेजी से प्रसारित होने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी भाषा जो लिखी जाती है वही बोली जाती है।

एक समय ऐसा सोचा जाता था कि कंप्यूटर और इंटरनेट केवल अंग्रेजी भाषा के लिए है लेकिन हिंदी भाषा की इतनी अधिक मांग है कि अब हर जगह इंटरनेट पर हिंदी भाषा में कुछ भी सर्च कर सकते हैं और कोई भी जानकारी हिंदी में प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी भाषा का हिंदी सिनेमा पर भी खास प्रभाव है। पूरे भारत में हिंदी सिनेमा लोगों के दिलों की धड़कन है और हिंदी गाने सभी के दिल को सकून देते हैं।

हम सबका कर्तव्य है कि हम हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के लिए हर संभव प्रयास करें। व्यवहार में हिंदी भाषा का प्रयोग देश के गौरव का प्रतीक है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी पहले भारतीय थे जिन्होने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर सबको चौका दिया था। उनकी इसके लिए जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है।

हिंदी भाषा इतनी अधिक प्रसिद्ध है कि कोई भी सोशल नेटवर्क साइट बिना हिंदी को अपनाए आगे तरक्की नही पा सकता है। इसका जीता जाता उदाहरण फेसबुक है और यहां तक कि गुगल खुद ऑनलाइन हिंदी टाइपिंग के लिए गुगल हिंदी टायपिंग टूल सेवा प्रदान करता है।

'गर्व से कहो हम हिंदी हैं'

ग्लोबल वार्मिंग (भूमंडलीय उष्मीकरण)

श्रीमती मिलन पाटिल,
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

ग्लोबल वार्मिंग का हमारी जीवन शैली पर होनेवाला परिणाम आज के दौर का सबसे बडा सवाल है। आज के वक्त में शायद ही कोई ऐसा पढा-लिखा इंसान होगा जिसको ग्लोबल वार्मिंग के बारे में पता ना हो। ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है पर्यावरण में बढ़ता तापमान। सूर्य की गर्मी से धरती लगातार गर्म हो रही है और इसका मुख्य कारण है पर्यावरण में कार्बन डाईआक्साईड की मात्रा में वृद्धि। इस कार्बन डाईआक्साईड के स्तर के बढ़ने का मुख्य कारण है, धरती पर घटती पेड़ों की संख्या जो कि हवा को शुद्ध करने का कार्य करते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग की समस्या सिर्फ हमारे देश की नही बल्कि विश्व की मुख्य समस्या है। धरती पर इस बढ़ते तापमान के कारण धरती पर जीवन संभावनाएं कम होने का भय बना हुआ है। यदि इसके समाधान के लिए जल्दी ही कदम नही उठाये गये तो धरती पर जीवन एक कल्पना बन कर रह जायेगा। पर्यावरण में घुली हानिकारक गैसों के कारण नई बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इन सबका सीधा असर भविष्य में जीवन की सम्भावनाओं की कमी के रुपमें दिखाई दे रहा है। कोई खास वर्ग या अकेला देश इसके लिए जिम्मेदार नही हैं। कई प्राकृतिक आपदायें पृथ्वी पर बढ़ती जा रही हैं। जिस कारण पृथ्वी पर पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है।

आदमी के द्वारा पैदा किये गये प्रदूषण (ग्रीन हाउस गैसों) से पृथ्वी के बढ़ते हुए औसत तापमान के वजह से अंटार्टिका में बर्फ पिघल रही है और भारत में हिमालय पर बर्फ पिघल रही है और समुन्दर का जलस्तर बढता जा रहा है। महामारी, चक्रवात, सुनामी, भूस्खलन, ओखी और भी कई ऐसी आपदायें हैं जिनके लिए ग्लोबल वार्मिंग जिम्मेदार है और ग्लोबल वार्मिंग के लिए हम।

ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मनुष्य और उसकी गतिविधियां ही है। मनुष्य जनित इन गतिविधियों से कार्बनडायआक्साइड की मात्रा में बढ़ौतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृध्दि हो रही है। वाहनों, हवाई जहाजों, बिजली बनाने वाले प्लांटस, उद्योगों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसो का धुआं निकलने के वजह से कार्बन डायक्साइड में बढ़ोतरी हो रही है। जंगलो का बड़ी संख्या में हो रहा विनाश इसकी दूसरी वजह है। जंगल कार्बन डायआक्साइड के मात्रा को प्राकृतिक रुप से नियंत्रित करते हैं, लेकिन इनकी बेतहाशा कटाई से यह प्राकृतिक नियंत्रक नेचुरल कंटर भी हमारे हाथ से छूटता जा रहा है। इसकी और एक वजह सीएफसी है जो रेफ्रीजरेटर्स, अग्निशामक यंत्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने एक प्राकृतिक आवरण ओजोन परत को नष्ट करने का काम करती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र सीधे धरती पहुंच रही हैं और इस तरह से उसे लगातार गर्मी बढ़ रही है।

किंतु इससे पहले कि यह स्थिति और विकट हो हमें इसे समझ कर इससे निपटने के उपायों पर ध्यान देना होगा। धरती पर बढ़ती आबादी ने जरुरतों को भी बढ़ाया गया और इन जरुरतों को पूरा करने के लिए आज हम औद्योगिक इकाइयों ओर प्राकृतिक संसाधनों पर इतने अधिक निर्भर हो गये हैं कि बेतहाशा रुप से इनका प्रयोग कर रहे हैं। प्रकृति की प्रदुषण को अवशोषित करने की क्षमता कम होती जा रही है और औद्योगिक इकाइयों से ग्रीन हाऊस गैसों का स्त्राव बढ़ता जा रहा है। ये ग्रीन हाऊस गैस हैं - कार्बन डाईआक्साईड, मिथेन जो कि कार्बनिक पदार्थों के सड़ने पर बनती है और वातावरण में मिलती है, नाइट्रोजन का आक्साईड, कार्बन कम्पाउण्ड आदि। ये सब गैंसे जब पर्यावरण में मिलती है तो पर्यावर्णीय संतुलन बिगाड़ देती हैं। इन गैसों के उत्सर्जन से वातावरण में ओजोन लेयर का क्षरण हो रहा है। ओजोन लेयर हमें सूर्य की हानिकारक अल्ट्रा वायरस किरणों से बचाती हैं। किंतु इसकी कमी के कारण इसका प्रभाव साफ साफ देखने को मिल रहा है।

इसका असर मनुष्य जीवन पर भी हो रहा है। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और यलो फीवर आदि बीमारी फैल रही है। इसका असर पशु, पक्षियों व वनस्पतियों पर भी पड रहा है। माना जा रहा है कि वे गर्मी बढ़ने की वजह से हीरी और पहाड़ी इलाकों की ओर प्रस्थान करेंगे।

हम अभी भी प्रयास करे तो ग्लोबल वार्मिंग रोक सकते है। अगर प्रत्येक व्यक्ति स्वयं कार्रवाई करे अपना महत्वपूर्ण योगदान करे जैसे कि.

- सामान्य लाइट बल्ब को सी एफ एल या लेड बल्ब से बदलें क्योंकि यह सामान्य बल्ब की अपेक्षा 70% कम उर्जा की खपत करता है।
- कम ड्राइविंग से हम ना तो सिर्फ ईंधन बचत कर सकते है बल्कि सबसे बडा धुआं तेल और गैसोलीन के कारण होता है इनके उपभोग को कम करके ऊर्जा अपशिष्ट को कम कर सकते हैं।
- प्लास्टिक की थैलियां, कंटेनर, बोतलों और अन्य वस्तुओं का पुनःउपयोग करें। डिस्पोजेबल उत्पादों को किसी अन्य रुप में इस्तेमाल करने की कोशिश करें।
- सौर ऊर्जा पर ध्यान देने के लिए सरकारी एजेंसियां और ऊर्जा कंपनियों द्वारा प्रोत्साहन और छूट दी जा रही है।
- हमेशा ऊर्जा कुशल उत्पाद खरीद लें, क्योंकि वे आपकी ऊर्जा बचाने, पैसे बचाने और अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद कर सकते हैं।

- पुरानी चीजों को जलाने से अच्छा उसका रीसायकल करेंगें तो ऊर्जा कम लगेगी।
- घर के लिए ऊर्जा बचाने वाले गीजर्श और डिशवॉशर का उपयोग करें ताकि उस उर्जा का उत्पादन हो सके।
- पैकेजिंग के बहुत सारे उत्पादों को खरीदने से बचे क्योंकि हम उसका अपशिष्ट कचरे में फेककर पर्यावरण प्रदूषित करते है।
- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का अनावश्यक उपयोग न करें।
- वृक्षारोपण करो जो कि ग्लोबल वार्मिंग रोकने का मुख्य स्त्रोत है।
- जल सरंक्षण करें।

अगर हम मन से ग्लोबल वार्मिंग के बारे में लोगो को शिक्षित करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करें और इसका प्रभाव के बारे में लोगों को बताएं कि पर्यावरण को बचाने केलिए ऊर्जा बचा कर वे कैसे अपना योगदान दे सकते हैं। हमें अपनी अपनी पृथ्वी को सही मायनों में सहज कर रखने के लिए हमें अपने आसपास के वातावरण को प्रदूषण से जितना दूर रख सकें उतना रखना होगा, इसके साथ ही हमें ग्लोबल वार्मिंग में कम करने के लिए हमें पेड़ों को नही काटना है, बल्कि हमें नए पेड़ लगाने के लिए विश्व को जागरुक करना चाहिए। तभी हम ग्लोबल वार्मिंग से अपने विश्व को मुक्त कर सकते है। विश्व के हर इंसान को इसमें अपनी भूमिका अदा करनी होगी तभी हमारा विश्व सुरक्षित होगा। सभी लोग अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें तो आसनी से ग्लोबल वार्मिंग को हराया जा सकता है।

श्री पलाश पोद्दार

आयकर अपीलीय अधिकरण, कोलकाता पीठ में कार्यरत कार्यालय अधीक्षक, श्री पलाश पोद्दार बांग्ला भाषा के एक प्रख्यात लेखक हैं और बांग्ला भाषा में उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके द्वारा काव्यग्रंथ, उपन्यास आदि लिखे गए हैं और उनके द्वारा लिखी गई रचनाएं काफी विस्तृत है। परिचय स्वरुप उनकी कुछ रचनाओं का आमुख (विषय वस्तु) प्रस्तुत है।

चौथी रचना - डेढ़ दर्जन आँतेलेर गल्पो
(डेढ़ दर्जन सनकियों की कहानी) कहानी संग्रह
(पृष्ठों की संख्या – 448 प्रकाशन काल – 12 मई 2017)

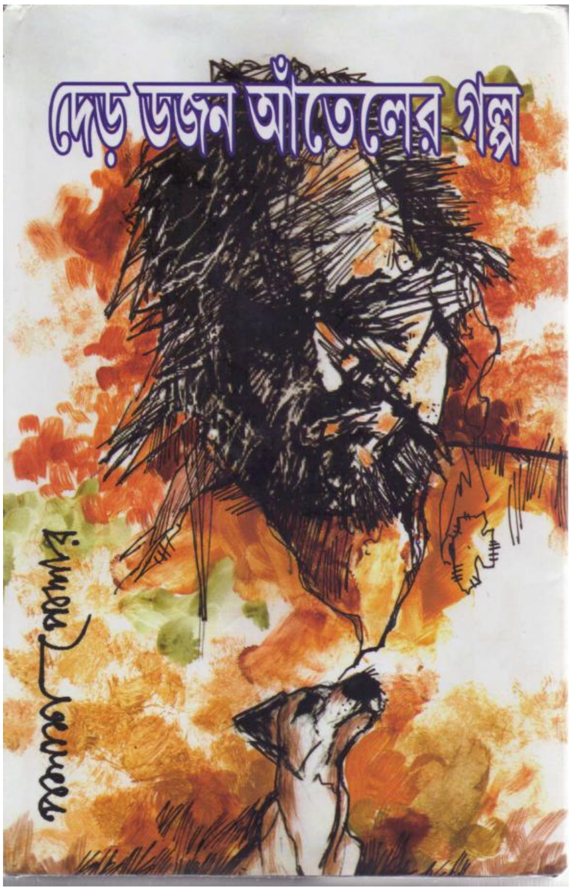

समाज में ऐसे भी कुछ लोग है जो सामाजिक नीति - नियमों से आविष्ट जीवनयापन में अभ्यस्त नहीं है। न तो सांसारिक दायबद्धता के घेरे में रहकर परिवार - परिजनों के सुख समृद्धि की चिंता ही उनमें है और न ही अपने बारे में सोचने का अवकाश। वे अपनी इच्छानुसार चलते है। अपनी मर्ज़ी के खुद मालिक है। समाज, परिवार, आत्मीय परिजनों का अनुशासन, प्रेम अथवा घृणा उन्हें आबद्ध नहीं कर पाया है। किसी भी कायदे कानून की परवाह न करने के कारण उन्हें विकृत मस्तिष्क न होने पर भी अक्सर 'पागल' या 'असामाजिक' या किंचित् सभ्य भाषा में कहें तो 'सनकी' आख्या देते है।

ऐसे अनेक सनकियों से मेरा परिचय हुआ है जो अपने सीमाहीन पागलपन के बदौलत यह दावा करते है कि किसी भी दृष्टि से वे समाज बहिर्भूत नहीं है, बल्कि उनके सजीव अस्तित्व के कारण ही आज भी विश्वप्रकृति की गोद में खेलती यह धरती, यह देश, यह समाज प्राणहीन नहीं हो पाया है। ऐसे ही विश्व परिमंडल में प्राणसंचारकारी अठारह सनकियों की कहानी है – 'डेढ़ दर्जन सनकियों की कहानी'।

पांचवीं रचना - प्रेमे अप्रेमे (उपन्यास) - भाग-1
पृष्ठों की संख्या – 207
प्रकाशन काल – कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला 2018

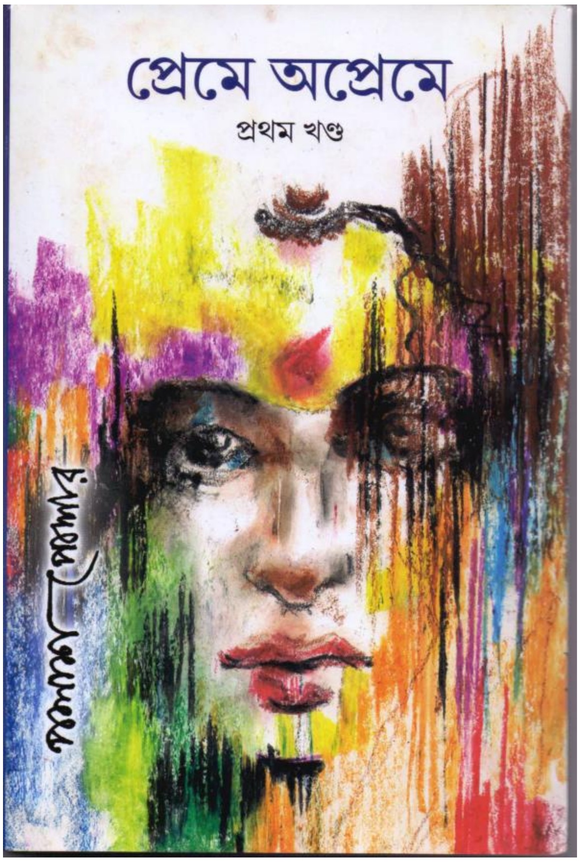

प्रेम की कोई सीमारेखा होती है क्या? या फिर समाज एवं संसार के विविध श्रृंखलाओं एवं जटिलताओं के बीच प्रेम का प्रवाह कभी-कभी रूक सा जाता है? यदि ऐसा नहीं है तो क्यों करबी जैसी महिलाओं की हत्या की जाती है? क्यों बंजारन रूपसी के घर बसाने का सपना, सपना ही रह जाता है? क्यों रवि जैसे लोग जेल में पाये जाते है? क्यों सुजन दुविधाग्रस्त हो उठता है और संजीत जैसे लोग जीने की उम्मीद खो बैठते है? तदुपरि क्यों भोम्बल एवं केया उम्र के अंतिम पड़ाव पर आकर भी नये सिरे से घर बसाने का सपना देखते है? तो क्या प्रेम के समानांतर अप्रेम का भी अवस्थान है? अप्रेम प्रेम में मिल जाए तो प्रेम का स्वरूप कैसा हो? या फिर प्रेम, प्रेम ही है? या अप्रेम-प्रेम भी प्रेम का ही एक रूप है जो प्रेम से किसी भी अंश में कम नहीं है? "प्रेमे-अप्रेमे" उपन्यास के प्रथम खंड में लेखक ने इन्हीं प्रश्नों को पाठकों के सम्मुख उठाया है। उचित अनुचित का निर्णय पाठकगण द्वितीय खंड में करेंगे। लेखक के अन्यान्य उपन्यासों की तरह ही इस उपन्यास के घटनाओं की सच्चाई संदेहातीत है, जो मननशील पाठकों को नि:संदेह सोचने पर मजबूर करेगी।

इंतजार का फल मीठा है

श्री अशोक सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक, जबलपुर

इंसान अपनी नौकरी से रिटायर हो सकता है पर अपने काम और दायित्वों से नहीं। वंशी चपरासी कल ही रिटायर हुआ था। आज सुबह 8 बजे तक सो रहा था कि अभी तक सो रहे हो काम-काज नहीं करोग? पत्नी की तेज आवाज से उसकी नींद खुल गई। मैं रिटायर हो गया हूं सोने दो- वंशी ने करवट बदलते हुए चादर तानकर कहा। मुझे भी मालूम है, इसलिए तो जगा रही हूं। दूध दुहना है और गायों को चराने ले जाना है। पहले तो अधिकारियों की सेवा करके रुपये कमाते थे, अब गौ-माता की सेवा करके पुण्य कमाना तुम्हारे भाग्य में लिखा है- पत्नी ने फिर कहा। क्यों, दूध दुहने वाला और गायों का चराने वाला आज नहीं आ रहा है? वंशी ने पूछा। आज क्या, अब वह आयेगा ही नहीं। उसकी छुट्टी कर दी है। रिटायर होने के बाद हाथ-पैर चलाना ज्यादा जरूरी है। घर बैठे रहने की आदत पड़ जायेगी तो बीमारियां भी घर बना लेगी। फिर आय भी तो आधी से भी कम हो जायेगी। गाय चराओ और चैन की वंशी बजाओ। शाम को थक कर घर आओगे, तो जो भजिया खाकर और चाय पीकर पाचन खराब किया है, वह भी सुधर जायेगा। नींद भी अच्छी आएगी। तुम्हारी गायें हैं, चराने में ध्यान दोगे तो गायें भी ज्यादा दूध देंगी। तुम्हे राते में आधा गिलास दूध मिल रहा है, एक गिलास मिलने लगेगा। मैं तो हमारे घर और तुम्हारे फायदे के लिए तुम्हारे रिटायर होने का इंतजार कर रही थी। पत्नी ने समझाते हुए कहा। कहते हैं कि इंतजार का फल मीठा होता है। हां-हाँ, शुरू-शुरू में तुम मेरे ऑफिस से आने का इंतजार करती थी, वंशी ने हंसते हुए बिस्तर छोड़ते हुए कहा।

आयकर अपीलीय अधिकरण, इंदौर न्यायपीठ, इन्दौर

श्री चंद्रमोहन गर्ग,न्यायिक सदस्य तथा
श्री ओ.पी.मीना, लेखा सदस्य के समक्ष
आ.अ.सं 777/इंदौर/2016
निर्धारण वर्ष : 2006-07

कृषि उपज मंडी समिति, होशंगाबाद, म.प्र स्था.ले.सं.:एएएलके 0735 ए	बनाम	सहायक आयकर आयुक्त, 1 (1), भोपाल
अपीलार्थी		**प्रत्यर्थी**

अपीलार्थी की ओर से	श्री दीपल सोनी, सीए
राजस्व की ओर से	श्री लाल चंद, आयकर आयुक्त, विभागीय प्रतिनिधि
सुनवाई की तारीख	25.09.2017
उद्घोषणा की तारीख	27.09.2017

आदेश

श्री चंद्रमोहन गर्ग, न्यायिक सदस्य द्वारा

निर्धारण वर्ष 2006-07 के लिए निर्धारिती द्वारा यह अपील विद्वान आयकर आयुक्त (अपील)-2, भोपाल (संक्षिप्त में आ.आ.) के आदेश दिनांक 01.03.2016 के विरूध्द दाखिल की गई है। निर्धारिती द्वारा लिए गए आधार निम्न रूप से पठित है :

"1. आयकर आयुक्त (अपील) निर्धारण वर्ष 2006-07 के लिए सहायक आयकर आयुक्त द्वारा 12 एए के अधीन लाभ अस्वीकृत करने के निर्णय को यह कथन करते हुए कायम रखने में न्यायसंगत नहीं है कि निर्धारिती ने धारा 12 एए के अधीन लाभ लेने के लिए संशोधित विवरणी दाखिल नहीं की थी।

2. आयकर आयुक्त (अपील) ने निर्धारण अधिकारी के रू. 19,56,345/- की सड़क विकास निधि को अस्वीकृत करने के निर्णय को कायम रखने में भी भूल की है। मध्य प्रदेश कृषि उपज मंडी समिति अधिनियम 1972 के अनुसार कथित निधि मंडी को सांविधिक भुगतान है और इसे आयकर अधिनियम की धारा 37 के साथ पठित धारा 36(i)(xii) के अधीन स्वीकृत किया जाना चाहिए। अतः इसे परिवर्धन में से घटाया जाना चाहिए।

3. प्रकरण के तथ्यों एवं परिस्थितियों के आधार पर, आयकर आयुक्त (अपील) आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 234 ए, 234 बी तथा 234 सी के अधीन ब्याज प्रभारित करने में न्यायसंगत नहीं है। "

2. आधार सं. 1 : हमने दोनो पक्षों को सुना है और अधिकरण के अभिलेख पर उपलब्ध सुसंगत सामग्री का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया है। प्राधिकृत प्रतिनिधि निर्धारण अधिकारी के निर्धारण वर्ष 2006-07 के लिए आयकर अधिनियम, 1961 (संक्षिप्त में 'अधिनियम') की धारा 12 एए के अधीन लाभ को यह कथन करने हुए अस्वीकृत करने के निष्कर्ष को कायम रखने में न्यायसंगत नहीं था कि निर्धारिती ने अधिनियम की धारा 12 एए के अधीन लाभ लेने के लिए संशोधित विवरणी दाखिल नहीं की थी। विद्वान प्राधिकृत प्रतिनिधि ने निवेदन किया कि माननीय मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने निर्धारिती को अधिनियम की धारा 12 एए के अधीन पंजीकरण प्रदान किया था। निर्धारण अधिकारी ने निर्धारिती के निवेदनों की उपेक्षा करते हुए अधिनियम की धारा 12 एए के अधीन लाभ को अस्वीकृत करते हुए अभिधारित किया।

3. उपरोक्त का उत्तर देते हुए, विद्वान विभागीय प्रतिनिधि ने निर्धारण अधिकारी की कार्रवाई की पुष्टि की। यद्यपि, उसने ईमानदारीपूर्वक निवेदन किया कि निर्धारिती द्वारा संशोधित विवरणी दाखिल की गई थी परंतु यह 31.03.2008 के बाद दाखिल नहीं की गई थी और निर्धारिती ने आय की संशोधित विवरणी विनिहित समयावधि में दाखिल नहीं की थी।

4. परस्पर विरोधी निवेदनों के ध्यानपूर्वक विचार करने पर प्रथम अपीलीय आदेश के सुसंगत परिच्छेद 5.4 से, हमने पाया कि विद्वान आयकर आयुक्त (अपील) ने सर्वोच्च न्यायालय के गोएत्ज (इंडिया) लि. बनाम आयकर आयुक्त (एससी) प्रकरण में निर्णय पर निर्भरता रखी है जिसमें यह अभिधारित किया गया था कि निर्धारिती को निर्धारण कार्यवाही के दौरान केवल पत्र दाखिल करके या संशोधित आय की संगणना दाखिल करके छूट हेतु दावा करने या उसकी आय संशोधित करना स्वीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि इसका तुलन पत्र के विभिन्न भागों जो आय की विवरणी के साथ होते है, पर भी प्रभाव पड़ सकता है। इस प्रकरण में निर्धारिती ने संशोधित विवरणी दाखिल किए बिना पत्र तथा आय की संशोधित संगणना दाखिल करके दावा किया था तथा माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अभिधारित किया कि निर्धारिती को संशोधित विवरणी के बिना उसकी आय संशोधित करना या छूट का दावा करना स्वीकृत नहीं किया जा सकता। वर्तमान प्रकरण में निर्धारिती ने संशोधित विवरणी दाखिल की है; यद्यपि, यह विनिहित समय सीमा जो वर्तमान प्रकरण में 31.03.2008 थी, के बाद दाखिल की गई थी। हमारे विनयपूर्ण अभिमत में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के गोएत्ज (इंडिया) लि. (उपरोक्त) के प्रकरण में निर्णय राजस्व के पक्ष में उपलब्ध नहीं है क्योंकि वर्तमान प्रकरण में निर्धारिती द्वारा संशोधित विवरणी दाखिल की गई थी।

5. जहाँ तक संशोधित विवरणी दाखिल करने में विलंब का संबंध है, हम विद्वान प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण से संतुष्ट है कि अधिकरण के आदेश दिनांक 03.12.2007 जिसमें विद्वान आयकर आयुक्त (अपील) को पंजीकरण स्वीकृत करने का निदेश दिया गया था, के बावजूद इसको 19.02.2008 तक प्रभावी नहीं किया गया था और निर्धारिती को 19.02.2008 तक पंजीकरण का विधिवत आदेश प्राप्त नहीं हो सका था जो निर्धारिती को बहुत बाद में संसूचित किया गया था अतः, अधिनियम की धारा 11 एवं 13 के अधीन छूट का दावा करते हुए संशोधित विवरणी विनिहित समय सीमा के अंदर दाखिल नहीं की जा सकती।

6. इस स्थिति में, अधिनियम की धारा 12 ए के अधीन पंजीकरण अधिकरण के समक्ष आक्षेपाधीन था और आयकर अपीलीय अधिकरण के निर्धारिती को पंजीकरण स्वीकृत करते हुए आदेश दिनांक 3.12.2007 के बावजूद, विद्वान आयकर आयुक्त (अपील) ने अपील प्रभाव 19.02.2008 को पारित किया जो निर्धारिती को बाद में संसूचित किया गया था तब संशोधित विवरणी दाखिल करने में विलंब के लिए निर्धारिती को आरोपित नहीं किया जा सकता और निर्धारिती को इस अभिकथन पर अधिनियम की धारा 11 से 13 के अधीन दावा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में, हमारा मत है कि निर्धारिती की संशोधित विवरणी को निर्धारण वर्ष 2006-07 के लिए अधिनियम की धारा 11 से 13 के लाभ प्रदान करने हेतु विचार में लिया जाना चाहिए। हम तद्नुसार आदेश करते है, इस प्रकार निर्धारिती का आधार सं. 1 स्वीकृत किया जाता है।

7. **आधार सं. 2**. विद्वान प्राधिकृत प्रतिनिधि ने निवेदन किया कि सड़क विकास निधि की अस्वीकृति का मुद्दा के संबंध में यह मंडी को किया गया सांविधिक भुगतान है जो अधिनियम की धारा 37 के साथ पठित धारा 36(i)(xii) के अधीन स्वीकार्य है। विद्वान प्राधिकृत प्रतिनिधि ने इसके अतिरिक्त निवेदन किया कि यह मुद्दा आयकर अपीलीय अधिकरण, इंदौर को सहायक आयकर आयुक्त बनाम कृषि उपज मंडी समिति, लोहारदा के प्रकरण तथा अन्य अपीलों में आदेश दिनांक 01.02.2012 के द्वारा पूर्णतः आवृत्त है जिसमें परिच्छेद 15 में यह अभिधारित किया गया है कि मंडल को सड़क विकास तथा कृषि अनुसंधान के लिए किया गया भुगतान, जिसे सुसंगत अधिनियम की धारा 43 के अनुसार कानूनी उत्तरदायित्व बनाया गया है, एक स्वीकार्य व्यय है।

8. विद्वान विभागीय प्रतिनिधि ने ईमानदारीपूर्वक निवेदन किया कि यह मुद्दा अधिकरण के आदेश दिनांक 01.02.2012 के द्वारा निर्धारिती के पक्ष में तथा राजस्व के विरूध्द आवृत्त है।

9. उपरोक्त परस्पर विरोधी निवेदनों पर ध्यानपूर्वक विचार करने पर आयकर अपीलीय अधिकरण, इंदौर के आदेश दिनांक 01.02.2012 (उपरोक्त) परिच्छेद 15 से हमने संप्रेक्षण किया कि समसमान मुद्दा या समसमान तथ्य एवं परिस्थितियां निम्नलिखित संप्रेक्षणों के साथ निर्धारिती के पक्ष में निर्णयित की गई है :

> " परस्पर विरोधी निवेदनों पर विचार करने पर, हमारा अभिमत है कि यह मुद्दा आयकर अपीलीय अधिकरण, जबलपुर न्यायपीठ के कृषि उपज मंडी समिति तथा अन्य (उपरोक्त) प्रकरण में निर्णय द्वारा पूर्णतः निर्धारिती को पक्ष में आवृत्त है जिसमें, परिच्छेद 12 में, अधिकरण ने अभिधारित किया " हमने इस मुद्दे पर ध्यानपूर्वक विचार किया है। निर्धारिण

अधिकारी का मत कि सड़क विकास तथा कृषि अनुसंधान के लिए किया गया भुगतान पूंजीगत व्यय था और अतः अधिनियम की धारा 37 के अधीन स्वीकार्य नहीं था, को उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि यह भुगतान सुसंगत अधिनियम की धारा 43 के अनुसार कानूनी उत्तरदायित्व के रूप में किया गया था। इसी तरह, बोर्ड फीस भी सुसंगत कानून के उपबंध के अनुसार भुगतान की गई थी और यह स्वीकार्य व्यय थी। निर्धारण अधिकारी अतः, इसे इस आधार पर अस्वीकृत करने में सही नहीं था कि विवादाधीन भुगतान आय के उपयोग की प्रकृति का था। हमारे विचारपूर्ण अभिमत में, विद्वान आयकर आयुकत (अपील) का आदेश में किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। विभाग की अपील, अतः, खारिज की जाती है।"

हमने पाया कि निर्धारिती का प्रकरण समान तथ्यों पर है क्योंकि बोर्ड फीस म.प्र. कृषि उपज मंडी अधिनियम की धारा 43 के अनुसार भुगतान की गई है जो निर्धारिती का उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयोजन से भुगतान करने का कानूनी उत्तरदायित्व है। अतः, यह स्वीकार्य व्यय था जो पूर्णतः एवं अनन्यतः निर्धारिती के व्यवसाय के उद्देश्य से खर्च किया गया था। धारा 36(1)(xii) के अनुसार, केन्द्र, राज्य या प्रांतीय अधिनियम द्वारा किसी भी नाम से गठित या स्थापित निगम या सामाजिक निकाय द्वारा अधिनियम द्वारा प्राधिकृत लक्ष्यों तथा उद्देश्यों, जिसके लिए यह स्थापित किया गया था, के लिए उपगत कोई भी व्यय छूट के रूप में स्वीकृत किया जाएगा। विद्वान आयकर आयुक्त (अपील) ने इस मुद्दे को बोर्ड फीस को निधियों के अंतरण के रूप में मानकर गलत समझा है। पूर्वोक्त धारा 36(1)(xii) में, विनिर्दिष्ट रूप से यह उल्लिखित है कि उपगत किये गये व्यय का कोई भी नाम हो सकता है, अतः, विद्वान आयकर आयुक्त (अपील) को इस मुद्दे पर विशिष्ट अधिनियम के अधीन निर्धारिती संस्थान की प्रकृति एवं कार्यशैली को ध्यान में रखते हुए वृहद परिप्रेक्ष्य में विचार करना चाहिए। उपरोक्त की दृष्टि में, निम्न प्राधिकारी के आदेश अपास्त किए जाते हैं और समस्त परिवर्धन हटाया जाता है। निर्धारिती की अपील का यह आधार स्वीकृत किया जाता है। "

हम पाते है कि किसान सड़क निधि, गोशाला अनुधन, अधोसंरचना निधि, गौसंवर्धन निधि, बोर्ड शुल्क, गोशाला को सब्सिडी तथा रिसर्च एण्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर निधि के मुद्दों पर वर्तमान संबंधित निर्धारितियों का प्रकरण कृषि उपज मंडी समिति, बुरहानपुर (उपरोक्त) के प्रकरण के समान तथ्यों एवं परिस्थितियों पर है, जिस पर आयकर अपीलीय अधिकरण, इंदौर द्वारा उपरोक्त उल्लिखित निष्कर्ष अभिलिखित किए गए थे जबकि समसमान मुद्दे निर्धारिती के पक्ष में निर्णयित किए गए थे जैसा कि आदेश दिनांक 24.10.2008 (उपरोक्त) के परिच्छेद 15 में चर्चा की गई है। समान कारणों का अनुसरण करते हुए, हम इन मुद्दों पर विद्वान आयकर आयुक्त (अपील) के आदेश में कोई कमी नहीं पाते हैं और इन्हें राजस्व के विरूध्द निर्णयित करते है।"

10. आयकर अपीलीय अधिकरण, इंदौर न्यायपीठ के उपरोक्त आदेश की दृष्टि में, हम अभिधारित करते है कि निर्धारिती द्वारा सड़क विकास के भुगतान का मुद्दा एक स्वीकार्य व्यय है क्योंकि यह कानूनी उत्तरदायित्व के अधीन किया गया है जो अधिनियम की धारा 37 के साथ पठित धारा 36(1)(xii) के अधीन स्वीकार्य है। तद्नुसार, निर्धारिती का आधार सं. 2 अधिकरण के आदेश (उपरोक्त) का अनुसरण करते हुए स्वीकृत किया जाता है।

11. निर्धारिती का आधार सं. 3 पारिणामिक होने के कारण तकनीकी रूप से निष्फल हो जाता है क्योंकि हमने निर्धारिती के मुख्य आधार स्वीकृत किए हैं। अतः, हम आधार सं. 3 पर पारिणामिक एवं निष्फल होने के कारण न्यायनिर्णयन नहीं कर रहे हैं।

12. परिणामतः, निर्धारिती की अपील स्वीकृत की जाती है।

यह आदेश खुले न्यायालय में 27.09.2017 को उद्घोषित किया गया।

हस्ता/-	हस्ता/-
(ओ.पी.मीना)	(सी.एम.गर्ग)
लेखा सदस्य	न्यायिक सदस्य
दिनांक: 27.09.2017	

अपीलीय अधिकरण, हैदराबाद 'क' पीठ हैदराबाद में

श्री डी. मनमोहन, उपाध्यक्ष एवं
श्री बी. रामकोटय्या लेखा सदस्य के समक्ष

आ. अपी. सं. 413/हैदरा /2016
निर्धारण वर्ष : 2009-2010

डी. सी. आई. टी., सर्कल -2(1) हैदराबाद।	बनाम	मेसर्स कार्वि कंप्यूटर प्रा. लि हैदराबाद. पान एएसीसीके 2193D
(अपीलार्थी)		(प्रत्यर्थी)

राजस्व की ओर :	श्री ए. सीतारामा राव
निर्धारिती की ओर :	श्री पी. मुरली कृष्णा
सुनवाई की तिथि :	18.10.2016
आदेश उदघोषणा की तिथि :	21.10.2016

आदेश

डी. मनमोहन , उपाध्यक्ष द्वारा :

यह आधार राजस्व ने उठाया यह अपील आयकर आयुक्त (अ) ;11, हैदराबाद के पारित आदेश के विरूद्व निदेशित अपील है। जिसे निम्नानुसार पढा जाए।

"प्रकरण के तथ्यों एवं परिस्थितियों में क्या आयकर आयुक्त (अ) मेसर्स मेरीलिन शिप्पिंग प्रा। लि के प्रकरण में वैजाग न्याय पीठ के आदेश का अनुसरण करते हुए प्रावधानों की धारा 40(ए)(आइ ए) लागू नहीं में सही है, जब कथित निर्णय माननीय आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया।

2. विचाराधीन मुद्दे की प्रशंसा करने के लिए प्रकरण के तथ्यों का संक्षिप्त रिकार्ड आवश्यक है। निर्धारिती की कंपनी इनकॉर्पोरेट की गई पंजीकरण एवं शेयर स्थानांतरण अभिकर्ता के व्यापार के उद्देश्य के लिए। विचाराधीन वर्ष के दौरान निर्धारिती ने रू 23.88 करोड की आय घोषित की। प्रकरण की जॉच की गयी। आकलन कार्यवाहियों के दौरान , आकलन आधिकारी ने देखा है कि "सेटलमेंट एण्ड कस्टडी फिस" में से निर्धारिती ने रू.1,34,20,078 डेबिट नामें किए गए। जब निर्धारिती से पूछा गया कि क्या उसने कथित शुल्क पर कटौती की थी तो उसने जवाब दिया था कि व्यापार के भाग के रूप में वह विभिन्न कंपनियों के मुद्दे पर काम करता है। जनता में शेयर आबंटित होने पर एनएसडीएल/सीएसडीएल को शेयर उनके खातों में जमा करने की प्रार्थना की। अंशधारकों के डिमैट नमूने में रखने के लिए इत्यादि निर्धारिती को चाहिए की वह (एनएसडीएल) / (सीडीएसएल) में भूगतान करना आवश्यक है। निवेशकों के खातों में शेयर जमा और वस्त: सूचना उपलब्ध करने के संबंध में अन्य शब्दों में (एनएसडीएल) / (सीडीएसएल) की गतिविधि मात्र डाटा आधार के फार्म में है न कि व्यवसायिक /तकनीकि सेवाए उपलब्ध करना हालाकि टीडीएस में भुगतान नहीं लगेगा।

3. आकलन अधिकारी ने निर्धारिती की दलीलों को अस्वीकार कर दिया जहॉ तक उसका विचार है, कि एनएसडीएल / सीएसडीएल को किया गया भुगतान व्यवसायिक प्रवत्ति का है, और जिससे धारा 194जे लागू होती है। चूकि निर्धारिती ने स्त्रोत से कटैाती नहीं की, किया गया दावा नामंजूर किया गया अधिनियम 1961 की धारा 40(ए)(आईए) की धारा को लागू करते हुए।

4. मुल्यांकन अधिकारी की कार्यवाही से पीडित होकर निर्धारिती ने सी आई(ए) के समक्ष अपील करनी चाहीं जिसमें यह दलील पेश की गयी थी कि (एनएसडीएल) / (सीडीएसएल) में भूगतान को “बेनपास” प्रभार की संज्ञा दी गयी। निर्धारिती ने इसके ग्राहकों को वचन दिया है, कि उसके शेयर धाराकों की सूचना का उल्लेख करेगा और संबंधित ग्राहक कंपनियों के धारकों का भी ताकि एनएसडीएल की वेबसाईट तक पहुच हो सकें निर्धारिती की कंपनी ने अनफ्रंट फीस जिसकी फ्लैट दर से गणना की गयी रिकार्ड की संख्या के आधार की गयी प्रार्थना पर। शुल्क प्राप्त करने पर एनएसडील ने संबंधित सूचना की डाउनलोडिंग की अनुमति दे दी। इस प्रकार निर्धारिती द्वारा एनएसडीएल को भुगतान व्यवसायिक सेवार्थ के लिए नहीं है। वस्तुत: एनएसडीएल द्वारा सूचना का उल्लेख रोकड दो और ले जाओं आधार पर किया गया। मेरीलिन शिपिंग और ट्रसपोर्ट बनाम उप आयकर आयुक्त (2012) 16 आई.टी.आर (अधि.) के प्रकरण में आ.अपी.अधि. का प्रासंगिक निर्णय रखा गया यह बताने के लिए कि “बेनपास” प्रभार को बकाया भुगतान नहीं है और वहॉ अधिनियम धारा 40(ए)(आई ए) के तहत नामंजूरी नहीं की जा सकती है।

5. एक अतिरिक्त आधार को उठाया गया था यह बताते हुए कि विवादित भुगतान को अदाकर्ता की आय में गिना गया इसलिए अधिनियम की धारा 40(ए)(आइए) के तहत नामंजूरी नहीं की जा सकती है। वित्तिय अधिनियम 2012 के लाए गए संशोघन को ध्यान में रखते हुए और ए.पी. इण्डिस्ट्रियल इनफ्रास्क्रटकचर कार्पोरेशन आ.अपी.सं. 1806 एवं 1807/हैद/2013 दिनांक 04.09.2015 के प्रकरण में आयकर अपीलीय अधिकरण के निर्णय को रखा गया, जिसमें यह माना गया है कि अदाकर्ता द्वारा फाईल आवर्ती के ब्यौरें के संबंध में वही राशि निर्धारिती के हाथों से अधिनियम की धारा 40(ए)(आईए) के तहत कराधान के लिए अस्तित्व में नहीं आ सकती।

6. विद्वान आयकर आयुक्त (अ) ने निर्धारिती के बयानों को स्वीकार किया और मुल्याकन अधिकारी द्वारा नामंजूरी को खारिज किया गया।

7. पीडित होकर राजस्व ने हमारे समक्ष अपील की है। सुनवाई के समय निर्धारिती के विद्वान अधिवक्ता ने हमारे समक्ष आ.अपी.सं. 1301/हैदरा/2014 (2007-2008) में निर्धारिती के स्वयं के मामले में आयकर अपीलीय अधिकरण, हैदराबाद पीठ का निर्णय रखा जिसमें पीठ ने ध्यान दिया है कि वहा मनुष्य तत्व सम्मिलित नहीं है। सेवाए पूर्ण् स्वयं सचालित है, इस तथ्य के अलावा (एनएसडीएल) / (सीडीएसएल) द्वारा प्रदत्त सेवाएं नहीं है जिसमें समझौता एवं अभिरक्षा शुल्क का भुगतान अधिनियम के प्रावधानों की धारा 194जे के तहत तकनीकि सेवाए मानते हुए कवर नहीं कहा जा सकता। पीठ ने आगे ध्यान दिया है कि इन कंपनियों ने भी ये राशियों को “आय” माना और कर के लिए प्रस्तावित किया जिसमें प्रावधानों की धारा 40(ए)(आईए) में संशोधन प्रकरण के तथ्यों में भी लागू किया गया। इस प्रकार दोनों ओर से आकलन अधिकारी द्वारा नामंजूरी को अधिकरण द्वारा खारिज किया गया।

8. विद्वान विभागीय अधिवक्ता ने दूसरी ओर मुल्यांकन अधिकारी द्वारा पारित आदेश का प्रबल समर्थन किया।

9. हमने प्रतिपक्षों के बयानों पर विचार किया और अभिलेख कों देखा। निर्धारण वर्ष 2008-2009 के निर्धारिती के स्वयं के प्रकरण में आयकर अपीलीय अधिकरण के निर्णय में हमारी राय है कि निर्धारिती द्वारा तकनीकि सेवा के लिए भुगतान को “भुगतान” नहीं माना जा सकता और किसी भी हालत में कंपनियों ने इस राशि को आय माना और धारा 40(ए)(आईए) तथ्यों में न लागू करते हुए कर के लिए प्रस्तावित किया। इन परिस्थितियों में हम विद्वान आयकर आयुक्त (अ) के आदेश का समर्थन करते हैं, और राजस्व द्वारा फाईल की गई अपील को खारिज करते है।

आदेश की घोषणा खुली अदालत में दिनांक 21.10.2016 को की गई।

हस्ता/-	हस्ता/-
(बी। रामकोटय्या)	**(डी। मनमोहन)**
लेखा सदस्य	**उपाध्यक्ष**

आयकर अपीलीय अधिकरण में जनवरी - दिसंबर, 2017 की अवधि में हुई नई नियुक्तियां

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पीठ	नियुक्ति की तिथि
1.	श्री बी. राजा रविन्द्र कुमार	लेखा सदस्य	चंडीगढ़	17.02.2017
2.	श्री निशांत वर्मा	वरिष्ठ निजी सचिव	मुंबई	06.01.2017
3.	सुश्री सोनाली बनर्जी	वरिष्ठ निजी सचिव	कोलकता	08.03.2017
4.	श्री संतोष कुमार मौर्या	वरिष्ठ निजी सचिव	जयपुर	03.02.2017
5.	श्री शामिक चक्रवर्ती	वरिष्ठ निजी सचिव	कोलकता	02.01.2017
6.	श्री राहुल शर्मा	वरिष्ठ निजी सचिव	मुंबई	30.01.2017
7.	श्री कसरला थिरूमलेश	वरिष्ठ निजी सचिव	मुंबई	01.03.2017
8.	सुश्री एम. शोभा	वरिष्ठ निजी सचिव	बेंगलूरू	25.01.2017
9.	सुश्री पूजा	वरिष्ठ निजी सचिव	जयपुर	01.02.2017
10.	श्री राजीव शाहा	वरिष्ठ निजी सचिव	कोलकता	19.05.2017
11.	श्री विजय पाल सिंह	वरिष्ठ निजी सचिव	मुंबई	17.02.2017
12.	श्री जुगल किशोर सैनी	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	16.01.2017
13.	श्री शाह प्रणव नटवरलाल	अवर श्रेणी लिपिक	अहमदाबाद	28.08.2017
14.	श्रीमती रियंका	अवर श्रेणी लिपिक	चंडीगढ़	03.01.2017

आयकर अपीलीय अधिकरण में जनवरी - दिसंबर, 2017 की अवधि में हुई सेवानिवृत्तियां

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पीठ	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	जस्टिस (सेवानिवृत्त) श्री देव दर्शन सूद	अध्यक्ष	मुंबई	17.02.2017
2.	श्री रमेश पी. तोलानी	उपाध्यक्ष	अहमदाबाद	29.06.2017
3.	श्री एस.वी. मेहरोत्रा	उपाध्यक्ष	कोलकता	30.07.2017
4.	श्रीमती आशा विजय राघवन	न्यायिक सदस्य	चेन्नै	18.07.2017
5.	श्री आय.सी. सुधीर	न्यायिक सदस्य	दिल्ली	20.09.2017
6.	श्री अश्वनी तनेजा (त्यागपत्र)	लेखा सदस्य	मुंबई	26.05.2017
7.	श्री कौशल कुमार	सहायक रजिस्ट्रार	कोलकाता	30.04.2017
8.	श्रीमती एन.के. मेनन (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)	सहायक रजिस्ट्रार	मुंबई	01.03.2017
9.	श्री एल.के. डेका	वरिष्ठ निजी सचिव	गुवाहाटी	30.04.2017
10.	श्री ए. मनोगरन	वरिष्ठ निजी सचिव	बेंगलूरू	31.07.2017
11.	श्री एस.आर. लोढे	वरिष्ठ निजी सचिव	मुंबई	31.12.2017
12.	श्री राहुल रमेश ढोके (प्रत्यावासन)	वरिष्ठ निजी सचिव	मुंबई	11.08.2017
13.	श्री विनिय कुमार (प्रत्यावासन)	वरिष्ठ निजी सचिव	आगरा	01.03.2017
14.	श्री जी. आनंद कुमार (प्रत्यावासन)	वरिष्ठ निजी सचिव	कोलकता	08.12.2017
15.	श्री संजीव कुमार (प्रत्यावासन)	वरिष्ठ निजी सचिव	जयपुर	27.03.2017
16.	श्री नरेन्द्र कुमार (प्रत्यावासन)	वरिष्ठ निजी सचिव	दिल्ली	08.12.2017
17.	श्री डी.वी. सावरट्कर	अधीक्षक	मुंबई	31.08.2017
18.	श्री वी. नागराजन	उच्च श्रेणी लिपीक	दिल्ली	31.05.2017
19.	श्री टी.सी. बोरो (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)	स्टाफ कार चालक	गुवाहाटी	01.05.2017
20.	श्री विनोद सिंह चौहान (निधन)	एमटीएस	जयपुर	18.01.2017
21.	श्रीमती सी.डी. उरेवार	एमटीएस	नागपुर	30.06.2017
22.	श्री शकर दास	एमटीएस	कोलकता	31.07.2017
23.	श्री के.के. पांचाल (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)	एमटीएस	इंदौर	31.10.2017

सृजन के अप्रैल - दिसंबर 2016 संस्करण के लिए पुरस्कृत विजेताओं की सूची

क्रम सं.	विजेता का नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती आशा पाल, वरिष्ठ हिंदी अनुवाद	मुंबई	प्रथम
2.	श्री अभिनव गवंडे, कार्यालय अधीक्षक	मुंबई	द्वतीय
3.	श्री अशोक सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक	जबलपुर	तृतीय
4.	श्रीमती रेणुबाला, कार्यालय अधीक्षक	दिल्ली	प्रोत्साहन
5.	श्रीमती ईशा कामटेकर, अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	प्रोत्साहन

आयकर अपीलीय अधिकरण के माननीय सदस्यों के लिए आयोजित सात दिवसीय आवासीय रिफ्रेशर कोर्स में
माननीय उपाध्यक्ष एवं माननीय सदस्यों का समूह फोटोग्राफ

आयकर अपीलीय अधिकरण के माननीय सदस्यों के लिए आयोजित सात दिवसीय आवासीय रिफ्रेशर कोर्स में
उपस्थित माननीय अध्यक्ष, माननीय उपाध्यक्ष एवं माननीय सदस्यगण

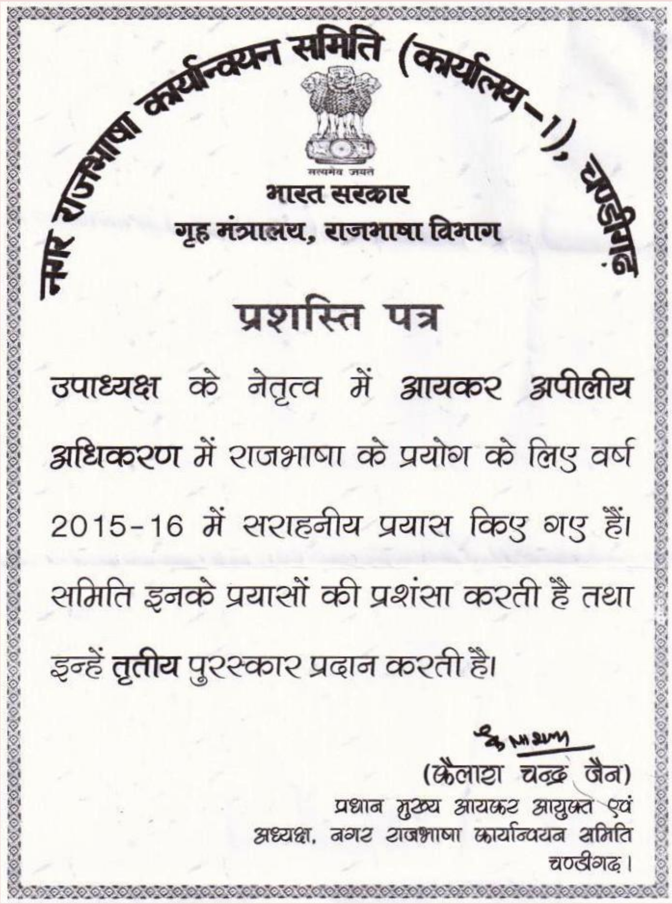

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), चण्डीगढ़

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

प्रशस्ति पत्र

उपाध्यक्ष के नेतृत्व में **आयकर अपीलीय अधिकरण** में राजभाषा के प्रयोग के लिए वर्ष 2015-16 में सराहनीय प्रयास किए गए हैं। समिति इनके प्रयासों की प्रशंसा करती है तथा इन्हें **तृतीय** पुरस्कार प्रदान करती है।

(कैलाश चन्द्र जैन)
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
चण्डीगढ़।

आयकर अपीलीय अधिकरण, इंदौर पीठ में हिंदी पखवाड़ा समारोह – 2016 का छायाचित्र

आयकर अपीलीय अधिकरण , मुंबई में हिन्दी पखवाड़ा - 2017 के छायाचित्र

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन करते हुए
श्री पी.के. बंसल, माननीय उपाध्यक्ष, मुंबई

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन करते हुए
श्री जी.एस. पन्नु, माननीय वरिष्ठ सदस्य, मुंबई

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा के उदघाटन समारोह में सभा को
संबोधित करते हुए श्री पी.के. बंसल, माननीय उपाध्यक्ष, मुंबई

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा उदघाटन समारोह में
उपस्थित माननीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा उदघाटन समारोह के अंत में
राष्ट्रगान गाते सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में माननीय अध्यक्ष,
माननीय वरिष्ठ सदस्य एवं माननीय राजभाषा अध्यक्ष

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में
उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में सभा को
संबोधित करते माननीय अध्यक्ष, आयकर अपीलीय अधिकरण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में सभा को संबोधित
करते माननीय रजिस्ट्रार, आयकर अपीलीय अधिकरण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में
उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में
श्री वी.के. सिंघल, सहायक रजिस्ट्रार, दिल्ली पीठ

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में
श्री जे.के. लोढ़ा, सहायक रजिस्ट्रार, मुंबई पीठ

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में उपस्थित
अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में विजित प्रतियोगियों को
पुरस्कार प्रदान करते हुए माननीय अध्यक्ष, आयकर अपीलीय अधिकरण